ईश्वर की पूर्ण कृपा से

मसनवी मीरहसन

तसवीर समेत

पहली बार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी

जून सन् १८८१ ई०

श्रीगणेशायनमः

मसनवी मीरहसन प्रारभ्यते

करूं पहिले तौहीद यज़दां रक़म
झुका जिसके सिजदे को अव्वल क़लम

सरे लौह पर रख बयाज़े जबीं ।
कहा दूसरा कोई तुझसा नहीं

क़लम फिर शहादत की अंगुली उठा
हुआ हर्फ़ ज़न यों कि रब्बुल अला

नहीं कोई तेरा न होगा शरीक
तेरी ज़ात है वहदहू ला शरीक

परस्तिश के क़ाबिल तुही है करीम
कि है ज़ात तेरी ग़फ़ूरुल रहीम

रहे हम्द में तेरे इज़्ज़ो व जल्ल ॥
तुझे सिजदा करता चलूं सिर के बल

वो अल्लह कि जिसे साहि मावूद है
क़लम जो लिखे उससे अफ़ज़ूद है

सबों का वही दीनो ईमान है ।
यह दिल है तमाम अरु वही जान है

तरोताज़ा है उससे गुलज़ार ख़ल्क़
वो अबरे करम है हवादार ख़ल्क़

अगरचे वो बेफ़िक्र ग़ैयूर है ।
वले परवरिश सब की मंज़ूर है

किसी से न बर आवे कुछ काम जां
जो वह मेहरबां है तो कुल मेहरबां

अगरचे यहां क्या है और क्या नहीं
पर उस बिन तो कोई किसी का नहीं

मुवे पर नहीं उससे कुछ गुज़ पूत
उसी की तरफ़ सब की है बाज़गश्त

रहा कौन अरु किसकी बाबत नहीं
मुए और जीते वही है वही ॥

निहां सब में और सब में है आशकार
ये सब उसके आलम हैं हिज़्दह हज़ार

वही सब है उससे वही सबसे पेशा
हमेशा से है और रहेगा हमेशा

चमन में है वहदत के यकता वो गुल
कि मुश्ताक़ हैं जिसके यां जुज़्वो कुल

उसी से है कांटा उसी से है फूल
उसी का है संबुल उसी से बि[illegible]

जिसे चाहे जन्नत में देवे मुक़ाम
जिसे चाहे दोज़ख़ में रक्खे मुदाम

वहहै मालिकेमुल्केदुनियावदीं । है कब्ज़ेमें उसके ज़मानोज़मीं
सदा बेनमूदों की उससे नमूद । दिलेबस्तगां का है उससे कशूद
उसी की नज़र से है हमसब की दीद । उसी के सख़ुन पर है गुफ़्तोशुनीद
वही नूर है सब तरफ़ जिलवागर । उसीके यह ज़र्रे हैं शमसोक़मर
नहीं उससे ख़ाली ग़रज़ कोई यूं । वो कुछ यों नहीं पर हरएक यों में है
जो गौहर में है वो न है संग में ॥ वलेकिन चमकता है हररंग में ॥
वो ज़ाहिर में हरचंद ज़ाहिर नहीं । प ज़ाहिर कोई उससे बाहर नहीं
तअम्मुल से कीजे अगर गौर कुछ । तो सब कुछ वही है नहीं और कुछ
उसी गुल की है बूसे ख़ुशबू गुलाब । फिरै है लिये साथ दरिया हुबाब
पर उस जोश में आके बहिना नहीं । समझने की है बात कहिना नहीं
क़लम गो ज़बां लावे अपनी हज़ार । लिखे कि सतरहै हम्द परवरदिगार
कि आजिज़ है यहं अंबिया की ज़बां । ज़बाने क़लम को यह क़ुदरत कहां
इस औहदे से कोई भी निकला नहीं । सिवा इज्ज़ के पेश आया कुछ नहीं
वह माबूद यकता ख़ुदाये जहां । कि जिसने किया कुन में कौनो मकां
दिया अक़्लो इदराक उसने हमें । किया ख़ाक से पाक उसने हमें ।
पयम्बर को भेजा हमारे लिये । वली और इमाम उसने पैदा किये
जहां को उन्हों ने दिया इन्तज़ाम । बुराई भलाई सुझाई तमाम ॥
दिखाई उन्हों ने हमें यह रस्त । कि ताहो न उसराह की बाज़ख़्वास्त
सो वह कौन सी राह शरए नबी । कि रस्ते को जन्नतके सीधी गई

नातहज़रतरिसालतपनाहसल्लेअ ल्लाअलैहव आलही व सल्लम

नबी कौन याने रसूल करीम । नबूवत के दरिया का दुर्रेयतीम
हुवा गो कि ज़ाहिर में उम्मी लक़ब । पर इल्मे लदुन्नी खुला दिल पे सब

बग़ैर अज़ लिखे और किये बे रक़म
चले हुक्म पर उसके लौहो क़लम

हुआ इल्म दीं उसका जो आश्कार
गुज़श्ता हुए हुक्म तक़वीम पार

उठा कुफ़्र इस्लाम ज़ाहिर किया
बुतों को ख़ुदाई से बाहिर किया

किया हक़ ने नबियों का सरदार उसे
बनाया नबुव्वत का हक़दार उसे ।

नबुव्वत जो की हक़ ने उस पर तमाम
लिखा अशरफ़ुन्नास ख़ैरुल अनाम

बनाया समझ बूझ का ख़ूब उसे
ख़ुदा ने किया अपना महबूब उसे

कहूं उसके रुतबे का क्या मैं बयां ।
खड़े हों जहां बांधे सफ़ मुर्सलां

मसीह उसके ख़रगाह का पारःदोज़
तजल्लीय नूर उसके मशअ़ल फ़रोज़

ख़लील उसके गुलज़ार का बाग़बां
सुलैमां से कई मुहरदार उसके वहां

ख़िज़र उसके सरकार का आबदार
ज़िरःसाज़ दाऊद से वहां हज़ार ।।

मुहम्मद के मानिन्द जग में नहीं
हुआ है न ऐसा न होगा कहीं ।।

यह थी रमज़ जो उसके साया न था
कि रंगे दुई वहां तक आया न था

न होने के साय: का था यह सबब
हुआ साफ़ पेशीना से काबे के सब

वह क़द इसलिये था न साय:फ़िगन
कि था कुल वह एक मोजिज़े का बदन

बना साय: उसका लतीफ़ इस क़दर
न आया लताफ़त के बाइस नज़र ।।

अजब क्या जो उस गुल के साय: न हो
कि था वह गुले क़ुदरते हक़ की बो

ख़ुश आया न साये को होना जुदा
उसी नूरे हक़ के रहा ज़ेरे पा ।।

न डाली किसी शख़्स पर अपनी छांउ
किसी का न मुंह देखा दे उसके पांउ

वह होता ज़मींगीर क्या फ़र्श पर
क़दम उसके साय: का था अर्श पर

न होने की साये के एक वजह और
मुझे ख़ूब सूझी है क़ाबिले ग़ौर ।।

जहां तक किये ग़ौर अहले नज़र
समझ माये नूर कुहलुल बसर

सभों ने लिया पुतलियों पर उठा ।
ज़मीं पर न साये को गिरने दिया

सियाही की पुतली का है यह सबब
वही साय: फिरता है आंखों में अब

तारीफ़ असहाब पाक रिज़वां अल्लाह अलैहुम

सलाम उनपः जो उसके असहाब हैं
वह असहाब कैसे कि अहबाब हैं

ख़ुदा ने उन्हों को कहा मोमनीन
वह हैं दीनके आसमानो ज़मीन

ख़ुदा उनसे राज़ी रसूल उनसे ख़ुश
अली उनसे राज़ी बतूल उनसे ख़ुश

हुई फ़र्ज़ उनकी हमें दोस्ती ॥
कि हैं दिलसे वह जानिसारे नबी

मुनाजात बदरगाह क़ाज़ीउलहाजात

इलाही बहक़्के रसूले अमीं ॥
बहक़्के अली औव असहाबदीं ॥

बहक़्के बतूलो व आले रसूल ।
करूं अर्ज़ जो मैं सो होवे क़बूल ॥

इलाही मैं बन्दः गुनहगार हूं ॥
गुनाहों से अपने गरांबार हूं ॥

मुझे बख़्शियो मेरे परवर्दिगार
कि तू है करीम और आमुर्ज़गार

मेरी अर्ज़ यह है कि जबतक जियों
प्याले मुहब्बत को तेरी पियों ॥

सिवा तेरी उल्फ़त के और सब है हेच
यक़ीं हो न हो और कुछ एच पेच ॥

जो ग़म हो तो हो आल अहमद का ग़म
सिवा इस अलम के न हो कुछ अलम

रहै सब तरफ़ से मेरे दिल को चैन
बहक़्के हसन और बहक़्के हुसैन

किसी से न करनी पड़े इल्तिजा
तु कर खुद बखुद मेरी हाजत रवा ॥

सईद और सालिम सदा मुझको रख
ख़ुशी से हमेशा ख़ुदा मुझको रख

मेरे आलो औलाद को शाद रख
मेरे दोस्तों को तु आबाद रख

मैं खाता हूं जिनका नमक ऐ करीम
सदा रहम कर उनपे तू ऐ रहीम

जियूं आबरू और हुरमत के साथ
रहूं मैं अज़ीज़ों में इज़्ज़त के साथ

बर आवें मेरे दीनो दुनिया के काम
बहक़्के मुहम्मद अलैहुस्सलाम

तारीफ़ सख़ुन

पिला मुझको साक़ी शराबे सख़ुन
कि मफ़्तूह हो जिस्से बाबे सख़ुन

सखुन की मुझे फ़िक्र दिन रात है
सखुन है तो है और क्या बात है
सखुन के तलबगार हैं अक़्लमन्द
सखुन से है नामे निकोयां बलन्द
सखुन की करें क़द्र मर्दाने कार
सखुन नाम उनका रखे बरक़रार
सखुन से वही शख़्स रखते हैं काम
जिन्हें चाहिये साथ नेकी के नाम
सखुन से ख़लफ़ की भलाई रहे
ज़बाने क़लम से बड़ाई रहे ॥ ॥
कहां रुस्तमो गेवो अफ़रासियाब
सखुन से रहे याद फ़हनक़्क़ा ख़्वाब
सखुन का सिला यार देते रहे ॥
जवाहिर सदा मोल लेते रहे ॥
सखुन का सदा गर्म बाज़ार है
सखुन से न उसका ख़रीदार है
रहे जब तलक दास्ताने सखुन
इलाही रहें क़द्रदाने सखुन।

मदह शाह आलम बादशाह ग़ाज़ी बहादुर की

ख़िदेवे फ़लक शाह आली गुहर
ज़मीं बोस हो जिसके शमसो क़मर
जहां उसके परतौ से है कामयाब
वह है बुर्जे अक़लीम में आफ़ताब
उसी मेहर से है मुनव्वर यह माह
जहां होवे और हो जहांदार शाह
वह महरे मुनव्वर यह माहे मुनीर
और उसका वह नज्मे सआदत नज़ीर

नज़र से तो वज्ह की देखा जिधर
दिया मिस्ल नरगिस उसे सीमो ज़र
सख़ावत यह अदनासी इक उसकी है
कि इक दिन दो शाले दिये सात से
सिवा इसके है और यह दास्तां ।
कि हो जिस पै क़ुर्बान हातिम की जां
हुई क़हत जो इक बार कुछ वर्षों काल
गरानी सी होने लगी एक साल ।।
ग़रीबों का दम सा निकलने लगा
न बक़्क़ाल का भी पाऊं जलने लगा
वज़ीरों को मालिक ने तदबीर कर
ख़ुदा को दिया राह में मालोज़र
मुहल्ला मुहल्ला किया हुक्म यह
कि नाड़े से इस ग़म की खोले गिरह
यह चाहा कि ख़िलक़त किसी ढब जिये
कई लाख लाख एक दिन में दिये
यह लग़ज़िश पड़ी मुल्क में जो तमाम
लिया हाथ ने उसके गिरतों को थाम
यह बन्दःनवाज़ी यह जांपरवरी
यह आईन सरदारियो सरवरी ।।
हुई ज़ात पर उस सख़ी के तमाम
तकल्लुफ़ है आगे सख़ावत का नाम
फ़क़ीरों की है यां तलक तो बनी ।
कि इक एक यां हो मसाहै ग़नी ।
यह क्या दख़्ल आवाज़ दे जो गदा
चटक को कली की न होवे सदा ।
न हो उसका शामिल जो अब्रे करम
असर अब्रे नैसां से होवे अदम ।
करे हस्ले वो नरगिस जो होवे खड़ी
तो ख़िजल्लत से नावे ज़मीं में गड़ी
हर इक काम उसके जहां की मुराद
फ़लातूं तबीयत अरस्तू नज़ाद ।।
जब ऐसा वह पैदा हुआ है बशर
तउसको दिया है य इक कुछ मालोज़र

बयान शुजाअत का

लिखूं गर शुजाअत का उसके बयां
क़लम हो मेरा रुस्तमे दास्तां ।।
ग़ज़ब से वह हाथ अपना जिस पर उठाय
अजल का तमाचा क़सम उसकी खाय
करे जिस जगह ज़ोर उसका नमूद
दिले आहन उस जा पै होवै कबूद
चलै तेग़ गर उसकी रोज़े मसाफ़
नज़र आये दुश्मन से मैदान साफ़
अगर बेहयाई से कोई उदू ।।
मिला देवे उस तेग़ से मुंह कभू ।।

तो ऐसी ही खाना गिरे ख़िर के बल
कि सिर पर खड़ी उसके रोये अजल

न हो क्यों कि वह तेग़ बर्क़े ग़ज़ब
कि फुर्तियों की न ग़ुर्दनो ह हैं सब

हुई हल कि जिस्म उसकी जो ह अजल
निकल आये यह गिर पड़े वह उगल

लगा दे अगर कोह पर एक वार ।
गुज़र जाय यों जैसे साबुन से तार ॥

ग़ज़ब से ग़ज़ब उसके काँपा करे
वह ख़्वार से हैबत भी उसके डरे ॥

और उस ज़ोर पर है यह हिल्मो हया
कि है ख़ुल्क़ का जैसे दरिया बहा ।

जहाँ तक कि हैं इल्मो फ़ज़्लो कमाल
हुनर के फ़न में माहिर है वह ख़ुश ख़िसाल

सख़ुनदाँ सख़ुनसंज औ ख़ुश बयाँ
वज़ीरे जहाँ जो वहीदे ज़माँ ॥ ॥

सख़ुन की नहीं उससे पोशीदः बात
ग़राबित हैं सब सहल उनके मुश्किलात

सलीक़ः ख़ल्क़ फ़न में हर बात में ।
निकलती नई बात दिन रात में

सदा शेर पर औ सख़ा पे दिल
कुशादः दिली औ ख़ुशी मुत्तसिल

न हो उसको क्योंकर हवाये शिकार
न हल्का शुआरों का है यह शुआर

दिलेरों का है बस दिलेरी से काम
कि रहता है शेरों को शेरों से काम

शहाँ राज़कर असलमा के शिकार
कि आयद पये सैद दिल हा बकार

खुले बन्द हैं जिन ने सहरा में सैद
हैं नव्वाब के दाम उलफ़त में क़ैद

ज़िमेह रग़ दिले आहुवां सा ख़ल:
वफ़ितराक ऐसा चमक हा दे रख़ल:

शुजाअत का हिम्मत का यह काम है
दिल उनका हाथ में है किला दाम है ॥

न होता अगर उसको ग़म से शिकार
दरिन्दों से बचता न: माहरो दयार।

न बचते जहां बीच ख़ुर्दो बुज़ुर्ग ॥
यह हो जाते सब लुक़मये गुर्गे गुर्ग

यह इनसान पर उसका अहसान है
कि वे ऐसे फ़ इनसान की जान है

बनाई जहां उसने नख़चीर गाह
रहे सैद क्यों आके ख़ामोश पगाह

रखा सैद नहरी पे जिसदम ख़याल
लिया शुश्त पर अपने माही ने जाल

मगर अपना देते हैं जी जान कर
कि दामों में गिरते हैं आन आन कर

नफ़स से निकलती है दरिया में सूस
ख़ुशी से उछलती है दरिया में सूस

परिन्दों का दिल उस तरफ़ है लगा
परिन्दों को रहती है उसकी हवा

कलोलों का है बल्कि चीता यही।
कमर आ बंधावे हमारी कोई

ख़बर उसकी सुनकर ये गैंडा चले
कि हाथी भी हो मस्त ऐंड़ा चले ॥

जो कुछ दिल में गैंडे के आवे ख़याल
जो भागे उस आगे सिपर अपनी डाल

खड़े आन होते हैं सिर जोड़ जोड़
कि जी कौन देता है बदबद के होड़

इताअत के हलक़े में आगे जो फ़ील
पलक इसके आंखों में हो रोद नील

सो वह तो इताअत में यकदस्त हैं।
नशे में मुहब्बत के सब मस्त हैं।

उसी के लिये गो कि हैं यह पहाड़
क़दम अपने रखते हैं सब गाड़ गाड़।

कि शायद मुशर्रफ़ सवारी से हों
सर अफ़राज़ चलकर अमारी से हों

चलन जब ये कुछ होवे हैवान के
तो फिर हक़ बजानिब हो इनसान के

किसे हो न सुहबत की उसकी हवस
वले क्या करें जो न हो दस्तरस ॥

इज़्ज़ो इनकिसार मुसन्निफ़ औ अर्ज़ करना दास्तान का

फ़लक बारगाहा मलक दरगहा।
जुदा मैं जो क़दमों से तेरे रहा ॥

न कुछ अक़्ल ने और न तदबीर ने / रखा मुझको महरूम तक़दीर ने
पर अब अक़्ल ने मेरे खोले हैं गोश / दिया है मदद से तेरे मुझको होश
सो मैं इक कहानी बनाकर नई / दुरे फ़िक्र से गूँध लड़ियाँ कई ॥
ले आया हूँ ख़िदमत में बहरे नयाज़ / यह उम्मेद है कि … हूँ सरफ़राज़
मेरा उज़्र तक़सीर होवे क़बूल ॥ / बहक़्क़े अली औ बआले रसूल ।
रहें शाद आबाद कुल ख़ैरख़्वाह / फिरें इस घराने से दुश्मन तबाह
रहे जाहो हशमत तेरा यह मुदाम / बहक़्क़े मुहम्मद अलैहिस्सलाम
अब आगे कहानी की है दास्ताँ / ज़रा सुनिये दिल दे के इसका बयाँ

आग़ाज़ दास्तान

किसी शहर में था कोई बादशाह / कि था वह शहंशाह गेती पनाह
बहुत हशमतो जाहो मालो मनाल / बहुत फ़ौज से अपने फ़रख़ुंदा हाल
कई बादशः उसको देते थे बाज / ख़ताओ ख़ुतन से वह लेता ख़िराज
कोई देखता आके जब उसकी फ़ौज / तो कहता कि है बहरे हस्ती की मौज
नवेल के उसके जो अदना थे ख़्वार / उन्हें न लिबन्दी में मिलता था ज़र
जहाँ तक कि सरकश थे अतराफ़ के / वह उस शह के रहते थे क़दमों लगे
रअय्यत थी आसूदः औ बेख़तर । / न ग़म मुफ़लिसी का न चोरी का डर
अजब शहर था उसका मीनू सवाद / कि क़ुदरत ख़ुदाई की आती थी याद
लगे थे हर इक जा पे वाँ संगो ख़िश्त / हर इक कोच: उसका था रश्के बिहिश्त
ज़मीं सब्ज़ो सेराब आलम तमाम / नज़र को तरावत वहाँ सुबहो शाम
इमारत थी गच की वहाँ बेशुमार । / कि गुज़रे सफ़ाई से जिस पर नज़र ॥
कहीं चाह मुंबा कहीं होज़ नहर । / हर इक जा पे आबे लताफ़त की लहर
कहूँ उसकी वसअत का क्या मैं बयाँ / कि जों रूह कहाँ था वह जिस्मे जहाँ ॥

हुनरमन्द वाँ अहले हरफ़ा तमाम / हर इक शौक़ से सल्तनत का था इज़्दहाम
वह दिलचस्प बाज़ार था चौक का / कि ठहरे जहाँ बस वहीं दिल लगा ।
जहाँ तक कि रस्ते थे बाज़ार के / कहूँ तू कि दस्ते थे गुलज़ार के ।।
वह सूरत मकानों के दीवारो दर / सफ़ेदी पै जिसके न ठहरे नज़र
सफ़ा पर जो उसके नज़र कर गये / उसे देख कर संग मर मर गये ।।
कहूँ किले के उसके क्या मैं शिकोह / गये दब बलन्दी को देख उसके कोह
वह दौलत सरा ख़ानये नूर था । / सदा ऐशो इशरत से मामूर था ।।
हमेशः ख़ुशी रात दिन ऐशो बाग़ / न देखा किसी दिल पै जुज़ लाला दाग़
सदा ऐशो इशरत सदा रागो रंग । / न था ज़ीस्त से अपने कोई व तंग
ग़नी वाँ हुआ जो कि आया तबाह / अजब शाह था वह अजब बादशाह
न देखा किसीने कोई वाँ फ़क़ीर / हुये उसके दौलत से घर घर अमीर
कहाँ तक कहूँ उसका जाहो हशम / महल्लो मकान उसका रश्के इरम
सदा माहरूयों से सुहबत उसे ।। / सदा जामा ज़ेबों से रग़बत उसे ।।
हज़ारों परी पैकर उसके ग़ुलाम / कमर बस्तः ख़िदमत में हाज़िर मुदाम
किसी तरह का वह न रखता था ग़म / मगर एक औलाद का था अलम
इसी बात का उसके था दिल पे दाग़ / न रखता था वह अपने घर का चिराग़
दिनों का अजब उसके यह फेर था / कि उस रोशनी पर यह अंधेर था ।।
वज़ीरों को इक रोज़ उसने बुला / जो कुछ दिल का अहवाल था सो कहा
कि मैं क्या करूंगा यह मालो मनाल / फ़क़ीरी का है मेरे दिल को ख़याल
फ़क़ीर अब न हूँ तो करूं क्या इलाज / न पैदा हुआ वारिसे तख़्तो ताज
जवानी तो मेरी गई सर बसर ।। / नमूदार पीरी हुई सर बसर ।।
दरेग़ा कि अहदे जवानी गुज़श्त । / जवानी मगर ज़िन्दगानी गुज़श्त
बहुत मुल्क पर जान खोया किया / बहुत फ़िक्र दुनिया में सोया किया

ग़रज़ बेतमीज़ी वो बेहासिली । कि अज़ फ़िक्र दुनिया वो दीं ग़ाफ़िली

वज़ीरों ने की अर्ज़ ऐ आफ़ताब । न हो ज़र्रः तुझको कभी इज़्तराब

फ़क़ीरी जो कीजे तो दुनिया के साथ नहीं खुल जाना उधर ख़ाली हाथ ।

करो सल्तनत लेकिन आमाल नेक कि ता दो जहां में है हाल नेक ।।

जो आक़िल हैं वह सोच में लग रहे कि ऐसा न होवे कि फिर सब कहें ।

तुझे ज़मींदारी को साख़्तनी ।। कि दर आसमां चीज़ परदाख़्तनी

यह दुनिया जो है मज़रए आख़िरत फ़क़ीरों में जाया करो इस को मत

इबादत से इस कि ग़ुल को आबदो कि वां जाके ख़िरमन भी तय्यार लो

रखो याद अद्लो सख़ावत की बात कि इस फ़ैज़ से है तुम्हारी नजात ।।

मगर हां ये औलाद का है जो ग़म सो इसका तरद्दुद भी करते हैं हम

अजब क्या कि होवे तुम्हें ख़लफ़ करो तुम न औक़ात अपनी तलफ़

न लावो कभी यास की गुफ़्तगू । कि क़ुरआं में आया है लातक़नतू ।।

बुलाते हैं हम अह्ल तंजीम को ।। नसीबों को अपने ज़रा देख लो ।।

तसल्ली तो दे शाह को इस नमत चले अह्ल तंजीम को भेजे ख़त ।

नजूमी वो रम्माल औ बरहमन ।। ग़रज़ या कि था जिनको इस ढब का फ़न

बुलाकर उन्हें शाह कने ले गये ।। जो हैं रूबरू सब वह शाह के गये ।।

पड़ा जब नज़र वह शहे ताजो तख़्त दुआ दी कि हो शाह के बेदार बख़्त

किया क़ायदे से उठ हर कर सलाम कहा शाह ने मैं तुमसे रखता हूं काम

निकालो ज़रा अपनी अपनी किताब मेरा है सवाल उसका लिक्खो जवाब

नसीबों में देखो तो मेरे कहीं ।। किसी से भी औलाद है या नहीं

यह सुनकर वो रम्माल [illegible] लगे खींचने ज़ायचे बेक़यास ।।

धरे तख़्ते आगे लिया क़ुरआ हाथ लगा ध्यान औलाद का उसके साथ

जो फेंकी तो पाके लें कई बैठी मिल कई शक्ल से दिल गया उनका खिल

[illegible] ने रम्माल के अर्ज़ की ॥ कि है घर में उम्मेद की कुछ ख़ुशी ।
यह सुन हमसे ए आलमों के शफ़ीक़ बहुत हमने तकरार की हर तरीक़ ।
बयाज़ अपनी देखी जो इस रम्ल की तो एक एक नुक़त: है फ़र्दे ख़ुशी ॥
है इस बात पर इज्तमाये तमाम कि ताले में फ़रज़न्द है तेरे नाम
ज़नो ज़ौज को ख़ल्क़ में है फ़रह ॥ पिया कर मये वस्ल की नू क़दह ॥
नजूमी भी कहने लगे दरजवाब कि हमने भी देखी है अपनी किताब
नहूसत के दिन सब गये हैं निकल अमल अपना सब कर चुका है ज़ुहल
सितारों ने ताले के बदले हैं तौर ख़ुशी का कोई दिन में आता है दौर
नज़र की जो तसदीसो तसलीस पर तो देखा कि है नेक सब की नज़र ॥
किया पंडितों ने जो अपना विचार तो कुछ उंगलियों पर किया फिर शुमार
जनम पत्र शाह का देख कर । तुला और बरछीक घर कर नज़र ।
कहा रामजी की है तुम पर दया चंद्रमा सा बालक तेरे होवेगा ।
निकलते हैं अब तो ख़ुशी के बचन न हो गर ख़ुशी तो नहीं ब्रह्मन ॥
महाराज के होंगे मक़सद प्रताब कि आया है अब पांचवां आफ़ताब
नसीबों ने की आपकी यावरी ॥ कि आई है अब पांचवीं मुश्तरी
मुक़र्रर तेरे चाहिये हो पिसर ॥ कि देती है यों अपनी पोथी ख़बर
वलेकिन मुक़द्दर है कुछ और भी कि हैं इस भले में बुरे तौर भी ॥
यह लड़का तो होगा वले क्या कहें ख़तर है इसे बारहें बरस में ॥
न आये यह ख़ुरशीद बालाय बाम बलन्दी से ख़तर: है इसको तमाम
न निकले यह बारह बरस बुर्ज के मह कि है बुर्ज में यह मह चारदह ॥ ॥
कहा सुन के यह शाह ने इनके तईं कहो जी का ख़तर: तो इसको नहीं
कहा जान की सब तरह ख़ैर है ॥ मगर दश्त ग़ुरबत की कुछ सैर है
कोई उसपे आशिक़ हो जिन्नो परी कोई उसका माशूक़ हो इसतरी

कुछ ऐसा निकलता है पोथी में अब
ख़बर वो हो उस पर किसी के सबब

हुई कुछ ख़ुशी शाह को कुछ अलम
कि दुनिया में तो आम है शादी वो ग़म

कहा शाह ने इस पर नहीं ए नबार
जो चाहे करे मेरा पर्वरदिगार ॥

यह फ़रमा महल में दरामद हुवे।
मुनज्जिम वहां से बरामद हुवे ॥

ख़ुदा पर ज़िबस उसको था एतक़ाद
लगा मांगने हक़ से अपनी मुराद ॥

ख़ुदा से लगा करने वह इल्तिजा
लगा आप मसजिद में रखने दिया

निकाला मुरादों का आख़िर सुराग़
लगाई उधर लव तो पाया चिराग़ ॥

सहाबे करम ने किया जो असर
हुई किश्त उम्मेद की बारवर ॥

इसी साल में याह ज़माना सुनो
रहा हम्ल इक ज़ौजये शाह को

जो कुछ दिल पे गुज़रे थे जो तअब
मुबद्दल हुवे वह ख़ुशी साथ सब ॥

दास्तान तवल्लुद होने शाहज़ादे बेनज़ीर की

ख़ुशी से पिला मुझको साक़ी शराब
कोई दिन में बजता है चंगो रबाब

करूं नग़मये तहनियत का शुरूअ
कि इक नेक अख़तर करै है तुलूअ

गये नौ महीने जो उस पर गुज़र ॥
हुवा शाह के घर में तवल्लुद पिसर

अजब साहिबे हुस्न पैदा हुवा ॥
जिसे मेहरोमह देख शैदा हुवा।

नज़र को न हो हुस्न पर उसके ताब
उमैदे रख वे ताब हो आफ़ताब।

हुवा वह जो उस शक्ल से दिलपिज़ीर
रखा नाम उसका शाह बेनज़ीर।

ख़वासों ने ख़्वाजःसराओं ने जा।
कईं नज़रें गुज़रानियां और कहा।

मुबारक तुझे ऐ शहे नेक बख़्त।
कि पैदा हुवा वारिसे ताजो तख़्त

सिकन्दर नज़ाद और दारा हशम.
फ़लक मरतबत और अतारिद रक़म

रहे उसके अक़्लीम ज़ेरे नगीं।
गुलामी करें उसके ख़ाक़ाने चीं.

यह सुनते ही मुज़्दः विछा जानमाज़
किये ख़ाल सिजदे कि ऐ बे नयाज़

तुम्हें क़त्ल करते नहीं ख़ानीवार । न हो तुम से मायूस उम्मेदवार।
दुगाना गुज़र शुक्र का कर अदा । तहइया किया शाह ने जंगल का॥
इह नज़रें ख़वासों की ख़ानों की ले । उन्हें ख़िलअतें ज़र को इनआम दे
कहा जावो जो कुछ कि दरकार हो । कहो ख़ानसामां से तैयार हो॥
नक़ीबों को बुलवा के यह कह दिया । कि नक्क़ारख़ाने में दो हुक्म जा।
कि नौबत ख़ुशी की बजावें तमाम । ख़बर सुनके यह शादियों से ख़ास
यह मुज़्दः जो पहुंचा तो नक्क़ारची । लगा हरजगः बादला औ ज़री॥
बना ठाठ नक्क़ारख़ाने के सब। । मुहय्या कर असबाब ऐशो तरब
ग़िलाफ़ उनपे बानात पुरज़र के टांक । शिताबी से नक्क़ारों को सेंक सांक
दिया ज़ीर को पहिले बम से मिला । लगी फैलने हर तरफ़ को सदा॥
कहा ज़ीर ने बम से बहरे शगूं॥ । कि दूं दूं ख़ुशी की ख़बर क्यों न दूं।
बजे शादियाने जो वां उस घड़ी। । हुई गिर्द पेश आ के ख़िलक़त खड़ी।
वह मसिल के बैठे जो अहले नवाज़ । बना मुंह से फिरकी लगा उस पै साज़
सरों पर कह सरपेच मामूल के॥ । ख़ुशी से हुवे गाल गुल फूल से
लगे लेने उपजें ख़ुशी से नई। । अताना लगा बजने औ उस घड़ी।
झकोरों में नौबत की शादी की धुन । सुघड़ सुनने वालों को कहते थे सुन।
तुरही औ करनाय शादी के दम । लगे भरने ढोल और ख़रज में बहम।
सुनी झांझ ने जो ख़ुशी की नवा । थिरकने लगा तालियों को बजा।
नये सिर से आलम को इशरत हुई । कि लड़के की होने की नौबत हुई
महल से लगा ता बे ऐवान आम । अजब तरह का इक हुवा इज़्दहाम
चले ले के नज़रें अमीरो वज़ीर। । लगे खींचने ज़र के तूदे फ़क़ीर।
दिये शाह ने शाहज़ादे के नाउं। । मशायख़ को और पीरज़ादों को गांव
अमीरों को जागीर लश्कर को ज़र । वज़ीरों को इल्मास लालो गुहर

खवासों को खोजों को जोड़े दिये
पियादे जो थे उनको घोड़े दिये ।
खुशी से दिये उनको इनआम निसार
जिसे एक देना था बख़्शे हज़ार ।
किया भांड़ और भगतियों ने हुजूम
हुई आहे आहे मुबारक की धूम ।
तवायफ़ें थीं खूब: गुज़नी तमाम
कहांतक मैं लूं दरलकारों का नाम
जहांतक कि साज़िन्दे थे साज़ के
धनी दस्त के और आवाज़ के ।।
जहांतक कि थे गाय को स्तकार
लगे गाने और नाचने थे कदार
लगे बजने क़ानून और बीन रबाब ।
वह हरतरफ़ जूय इशरत का आब
लगी थाप तबलों की मिरदंग की
सदा ऊंची होने लगी चंग की ।।
कमाचों की सारंगियों की बना
खुशी से हरइक उनकी तानें मिला
लगा सोम ताले पे मुहचंग के
मिला सुर तंबूरों के और रंग के
सितारों के परदे बना कर दुरुस्त
बजाने लगे सब वह चालाक चुस्त
गवैयों की आसमां तक गुमक
उठा गुंबदे चर्ख़ सारा धमक ।।
खुशी की जिस सहन तक थी बिसात
लगे नाचने उस पे अहले निशात
कनारी के जोड़े चमकते हुवे ।।
वह पाओं के घुंघरू झनकते हुवे
वह बाले चमकते हुवे कान में
फड़कना वह नथुने का हर आन में
वह घटना वह बढ़ना अदाओं के साथ
देखाना वह रख़सत के छाती पे: हाथ
कभी दिल को पाओं से मल डालना
नज़र से कभी देखना भालना ।।
देखाना कभी अपनी छबि मुस्करा
कभी अपनी अंगिया को लेना छिपा
किसी के चमकते हुवे जो रतन
किसी के वह मुखड़े पे नथ का फबन
वह दांतों की मिस्सी वह गुल दांत पर
शफ़क़ में अयां जैसे शामो सहर
वह गर्मी थी चेहरे की जो आफ़ताब
जिसे देख कर दिल को हो इज़्तराब
चमकना गुली का सफ़ा के सबब
वह गरदन के डोरे क़यामत ग़ज़ब
कभी मुंह के तईं फेर लेना उधर ।।
कभी चोरी चोरी से करना नज़र

दुपट्टे को करना कभी मुंह के ओट । कि परदे में हो जाय दिल लोट पोट ।
हर इक तान में उनको अरमान यह । कि दिल लीजिये तान की जान यह
कोई फ़न में संगीत के बोल अरू । धमर योग लछमी लिये पर मलू॥
कोई डेढ़ गत ही में पाचों तले ॥ खड़ी आशुक़ों के दिलों को मले।
कोई साये में बजा कर परन ॥ कोई दम्म में जता अपना फ़न
ग़रज़ हर तरह दिल को लेना उन्हें । नई तरह से दाग़ देना उन्हें ॥
कभी मार ठोकर करैं क़त्ल आम । कभी हाथ उठा लेवैं गिरतों को थाम
कहीं धुरपद औ गीत का शोरोगुल । कहीं क़ौलो क़ल्बान औ नक़्शोगुल
कहीं भांड़ और लूलियों का समां । कहीं नाच कश्मीरियों का वहां॥
मजीरा पखावज ग़ले डाल ढोल । बजाते थे उस्ता खड़े बांधे ग़ोल॥
महल में जो देखा तो अज़दहाम । मुबारक सलामत की थी धूम धाम
परी पैकरों का हर इक जा हजूम । वहां भी पड़ी ऐशोइशरत की धूम
छठी तक ग़रज़ थी ख़ुशी की ये बात । कि दिन ईद और रात थी शबबरात
बढ़े जूं ही अब्र में ज्यूं हिलाल। महल में लगा पलने वह नौनिहाल
बरस गांठ जिस साल उसकी हुई। दिले बस्तगां की गिरह खुल गई॥
वह गुल जब कि चौथे बरस में लगा । बढ़ाया गया दूध उस माह का ॥
हुई थी जो कुछ पहिले शादी की धूम । उसी तरह से फिर हुआ वां हजूम ॥
तवायफ़ वही और वही रागो रंग । हुई बल्कि दूनी ख़ुशी की तरंग।
वह गुल पाउं से अपने जिस जा चला । वहां आंख को नरगिसों ने मला॥
लगा फिरने वह सर्व जब पाउं पाउं । किये बूटे आज़ाद तब उसके नाउं

दास्तान तय्यारी में बाग़ के

मये अरग़वानी पिला साक़िया । कि तामीर के बाग़ के दिल चला

कहीं नाफ़री और गेंदा कहीं
अजब चांदनी में गुलों की बहार
खड़े सर्व कीलत के चंपे के झाड़ ॥
कहीं ज़र्द नसरीं कहीं नसतरन ।

समा आब को दाऊदियों का कहीं
हर एक गुल सफ़ेदी से महताबवार
कहे तू कि खुशबूइयों के पहाड़
अजब रंग पर ज़ाफ़रानी चमन ॥

तसवीर बाग़ मय मकान
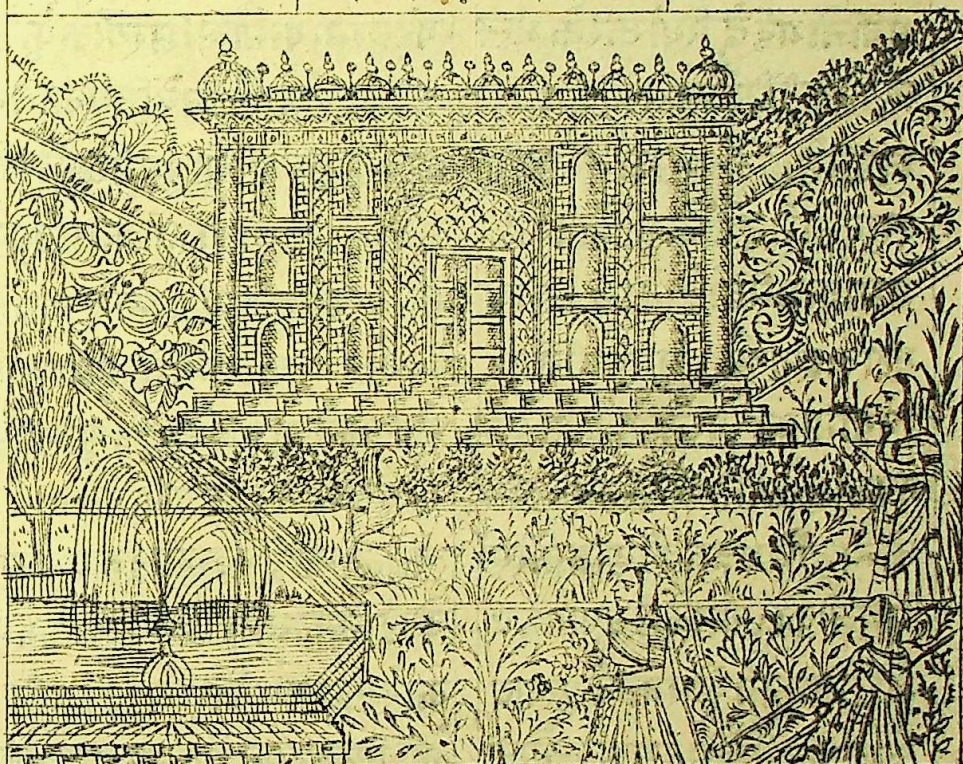
पड़े आबजू हर तरफ़ को बहे ॥
गुलों का लबे नहर पर झूमना
वह झुक झुक के गिरना ख़ियाबान पर
लिये हाथ में बेलचे मालिनें ॥
कहीं तुख़्म पाशी कहीं गोड़ कर
खड़े आबख़ुर्दा शहदबाह मनिहाल

करें कुमरियां सर्व पर चहचहे
उसी अपने आलम में मुंह चूमना
नशे का सा आलम गुलिस्तान पर
चमन को लगीं देखने भालने
पनीरी जमावें कहीं खोद कर ।
रहीं हाथ में मस्त गरदन में डाल ॥

लबेजू पे आईने में देख कद अकड़ना खड़े सर्व का गदनलद
ख़िरामां सबा सहन में चार सू ॥ दिमाग़ों को देती हरइक गुल की बू
खड़े नह्र पर क़ाज़ और कर्करे ॥ लिये साथ मुरग़ाबियों के परे ॥
सदा कर्करों की बुतों का वह शोर दरख़्तों पः बगले मुंडेरों पै मोर
चमन आनशो गुल से दहका हुवा हवा के सबब बाग महका हुवा ।
सबा जो गई दे रिशों कर के झूल पड़े हर तरफ़ मौलसिरियों के फूल
वह केलों की और मौलसिरियों की छाउं लगी जाय आंखें लिये जिस का नाउं
ख़ुशी से गुलों पर सदा बुलबुलें न अश्शुक़ की आपुस में बातें करें
दरख़्तों ने बर्गों के खोले वरक़ कि लेवें ज़िया बोस्तां का सबक़
समा कुमरियां देख उस आन का पढ़ें बाब पंजुम गुलिस्तान का ॥
ददा दाइयां और मुग़्लानियां फिरें हर तरफ़ उसमें जिल्व: कुनां
ख़वासों का और लौंडियों का हुजूम महल की वह चुहलें वह आपुस की धूम
तकल्लुफ़ के पहिने फिरें सब लिबास रहें रात दिन शाहज़ादे के पास
कनीज़ाने महरू की हर तर्फ़ रेल चंबेली कोई और कोई राय बेल
रंगीली कोई और कोई पूरामरूप कोई चितलगन और कोई कामरूप
कोई केतकी और कोई गुलाब कोई महरतन और कोई माहताब
कोई सेवती और हंसमुख कोई कोई दिललगन और तनसुख कोई
इधर और उधर आतियां जातियां फिरें अपने जोबन को दिखलातियां
कहीं अपने पट्टे संवारे कोई अरी और सीली पुकारे कोई ॥
कहीं चुटकियां और कहीं तालियां कहीं क़हक़हे और कहीं गालियां
बनाती फिरे कोई अपने कड़े कहीं वाहवाह और कहीं वा छड़े
दिखावे कोई गोखरू मोड़ मोड़ कहीं सूतबूटी कहीं तार तोड़ ॥
उदासे कोई बैठ हुक़्क़ा पिये ॥ दमे दोस्ती कोई भर भर जिये

कोई हौज़ में जा के ग़ोता लगाय | कोई नह्र पर पाँउ बैठी हिलाय ।
कोई अपने तोते की लेवे ख़बर | कोई अपनी मैना पै रक्खे नज़र ।
किसी को कोई धौल मारै कहीं | कोई जान को अपने वारै कहीं ।
कोई आरसी अपनी आगे धरै | अदा से कहीं बैठि कंघी करै ।
मुक़ाबा कोई खोल मिस्सी लगाय | लबों पर धड़ी कोई अपने जमाय ।
हुआ उन गुलों से दुबाला समां | उसी बाग़ में था वह सर्वे रवां ॥
ग़रज़ लोग थे यह जो हर काम के | यह सब वास्ते उसके आराम के
फ़राग़त वह इस नाज़ो न्यामत के साथ | पदर और मादर के शफ़क़त के साथ
हुई उसके मकतब की शादी अयां | हुआ फिर उन्हीं शादियों का समां
मुअल्लिम अताली क मुन्शी अदीब | हर इक फ़न के उस्ताद बैठे क़रीब
किया क़ायदे से शुरूअ कलाम ॥ | पढ़ाने लगे इल्म उसको तमाम
दिया था ज़िबस हक़ ने ज़ेहने रसा | कई साल में इल्म सब पढ़ चुका ।
मआनी वो मंतिक़ बयानो अदब | पढ़ा उसने मंकूल माक़ूल सब
ख़बरदार हिकमत के मज़मून से | ग़रज़ जो पढ़ा उसने क़ानून से
लगा हैय्यतो हिन्दसा ता नजूम । | ज़मीं आसमां में पड़ी उसकी धूम
किये इल्म तो के ज़बां हर्फ़ हर्फ़ । | इसी तरह से उसने की उम्र सर्फ़ ।
उतारिद को आने लगी उसकी रीस | हुआ सादः लौही में वह ख़ुशनवीस
हुआ जब कि नवरत्न वह ख़ुश रक़म | पढ़ा कर लिखे सात सौ नौ क़लम
लिया हाथ जब ख़ामए मुश्क बार | लिखा नस्ख़ो रैहानो ख़त्ते गुबार
अरूसुल ख़तूत और सुल्सो रक़ाअ | ख़फ़ी और जली मिस्ल ख़त्ते शुआअ
शिकस्तः लिखा और तालीक़ जब | रहे देख हैरां अताली क सब ॥
किया ख़त्म गुलज़ार से जब फ़राग़ | हुआ सफ़ह ए तख़्ते गुलज़ार बाग़
कहूं इल्म उसका कहां तक अयां | कि है ख़ूब अब मुख़्तसिर यह बयां

खुशी में गई जल्द आकर जो गुज़र
हुई सामने से तु मायां सहर ॥
अजब आज थी महताब सहर का असर
अजब रोज़ था मिस्ल रोज़े उमेद ॥
गया मुज़्दे ले शह तो माहताब ।
उठा सूर्य आंखों को मलता आफ़ताब
कहा शाह ने अपने फ़रज़न्द को
कि बाबा नहा धोके तय्यार हो ॥

दास्तान हम्माम में नहाने को लताफ़त में

पिला आन आब पीरे मुग़ां ॥
कि भूले मुझे गर्मो सर्दे जहां ॥
अगर चाहता है मेरे दिल को चैन
न देखा वह साग़र जो हो कुल्लतैन
कदूरत मेरे दिल की धो साक़िया
ज़रा आ पिलाये मय को धोधा केला
कि सरगर्म हम्माम है बेनज़ीर
गया है नहाने को बदरे मुनीर
हुवा जब कि दाख़िल वह हम्माम में
अरक़ आ गया उसके अंदाम में
तने नाज़नीं जिस्म हुवा उसका कुल
कि जिस तरह डूबे है शबनम में गुल
परस्तार बांधे हुवे लुंगियां ॥ ॥
महो मेह से तास ले कर वहां ॥
लगे मलने उस गुलबदन का बदन
हुवा डहडहा आप से वह चमन
नहाने में यों थी बदन की दमक
बरसने में बिजली की जैसे चमक
लबों पर जो पानी पड़ा सरबसर
नज़र आये जैसे दो गुलबर्ग तर ।
हुवा क़तरा आब यों चश्म बोस
कहे तो पड़ी जैसे नरगिस पे ओस
लगा होने ज़ाहिर जो ऐ नाज़ हुस्न
टपकने लगा उससे अंदाज़ हुस्न
गया हौज़ में जब शहे बेनज़ीर
पड़ा आब में अक्स से माहे मुनीर
वह गोरा बदन और बाल उसके तर
कहे तू कि सावन की शामो सहर
नमी से था बालों का आलम अजब
न देखी कोई ख़ूब तर उससे शब
कहूं उसकी ख़ूबी की क्या तुझ से बात
कि जूं भीगती जाय सुहबत में रात
ज़मीं पर था इक मौजये नूरे बेज़
हुवा जब वह फ़व्वारः सां आबरेज़

ज़मुर्रद की ले हाथ में संग था।
हँसा खिल खिला वह गुले नव बहार
अजब आलम उस नाज़नीं पर हुवा
हँसा उस अदा से कि सब हँस पड़े।
दुआयें लगे देने वे हूरिवश यार
कि तेरी ख़ुशी से है सब की ख़ुशी
न आवे कभी तेरे ख़ातिर पै मैल
किया ग़ुस्ल जब इस लताफ़त के सा
नहा धो के निकला वह गुल इस तरह
ग़रज़ शाहज़ादे को नहला धुला
जवाहिर सरासर पिन्हाया उसे
कड़े कंगन और कलग़ी ओ नवरतन
मुरस्सा का सरपेच ओ मोजे आब
वह मोती के बाले बसद ज़ेबो ज़ीं
जवाहिर का तन पर सरापा ग़रूर
ग़रज़ हो के इस तरह आरास्त:
निकल घर से जिस दम हुवा वह सवार
ज़िबस था सवारी का वां हजूम
बराबर बराबर खड़े थे सवार॥
सुनहरी रुपहली वह अम्मारियां
चमकते हुवे बादले के निशान
हज़ारों ही अतराफ़ में पालकी
कहारों की ज़रबफ़्त की कुर्तियां

किया ख़ादिमों ने जो आहंग था
लिया खींच पांवों के वह रिक्त यार
असर गुद्गुदी का जबीं पर हुवा।
हुवे जो से कुर्बान छोटे बड़े॥।
कहा सब ने ख़ुश रखे तुझ को परवरदिगार
मुबारक तुझे रोज़ो शब की ख़ुशी
चमकता रहे यह फ़लक का सुहैल
उठा के समाये उसे हाथों हाथ
कि बदली से निकले है मह जिस तरह
दिया ख़िलअते ख़ुसरवान: पिन्हा
जवाहिर का दरिया बनाया उसे
किया ऐक से एक ज़ेबे बदन॥
मुनव्वर ब सूरत लब आफ़ताब
कहें जिसको आरामे जां दिल का चैं
कि इक इक के अन्दर उसका था कोहनूर
ख़िरामां हुवा सर्व तो रास्त:
किये ख़्वान गौहर के उस पर निसार
हुवा जब कि डंका पड़ी सब में धूम
हज़ारों ही थे हाथियों की क़तार
अबीरेज़ की सी तरह दारियां
सवारों के गट और बानों की शान
झलाबोर की जगमगी नालकी
और उनके दबे पावों की फुर्तियां

तसवीर सवारी शाहज़ादे बेनज़ीर जानिब बाग़
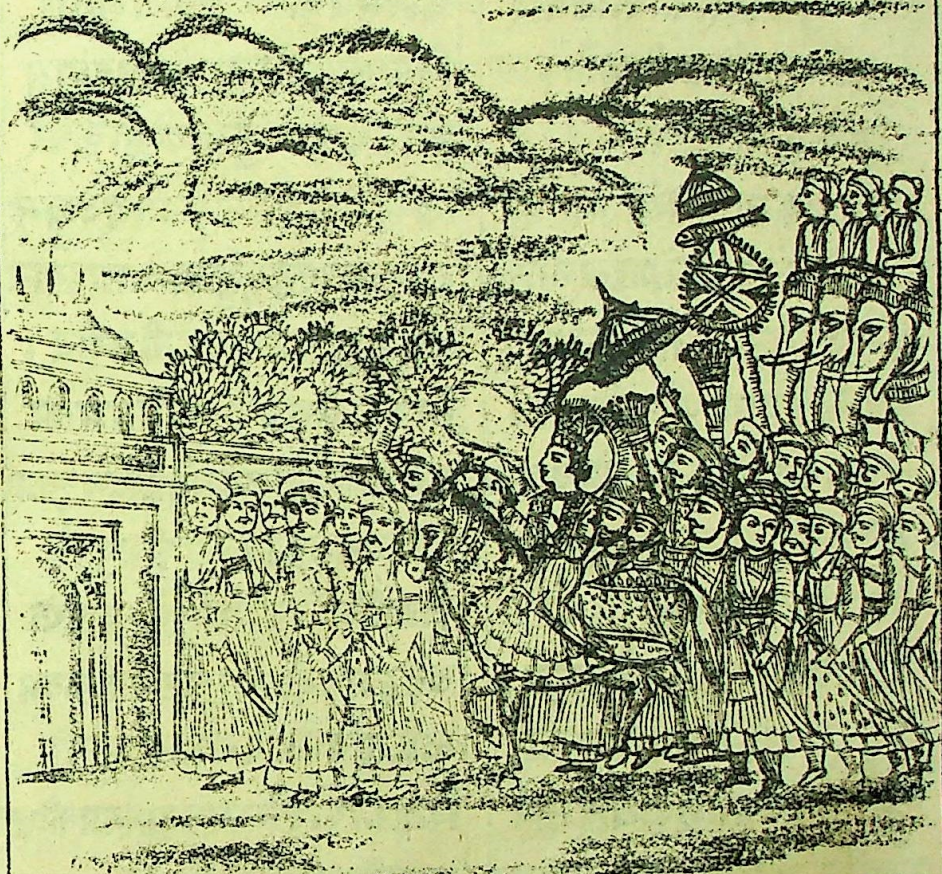
बंधीं पगड़ियां ताशों की सिर ऊपर
वह हाथों में सोने के मोटे कड़े ॥
वह [illegible] जालिब वह सब्ज़े रवां
वह शहनाइयों की सदा खुशनुमा
वह आहिस्तः घोड़ों पः नक़्क़ारची
बजाते हुवे शादियाने तमाम ॥

चकाचौंद में जिस से आवे नज़र ॥
झलक जिसकी हर हर क़दम पर पड़े
वह नौबत का दूलह का जैसे समा
सुहानी वह नौबत की आवे सदा
क़दम बा क़दम वा लिबासे ज़री
चले आगे आगे भिले शादकाम

सवार और पियादः सग़ीरो कबीर
जिलो में तमामी अमीरो वज़ीर।

वह नज़रें कि जिस जिस ने पीठ लियां
शहो शाहज़ादे को गुज़रानियां।

हुवे हुक्म से शाह के फिर सवार
चले सब क़रीने से बांधे क़तार

सजे और सजाये सभी खासो आम
लिबासे ज़री में मुलब्बिस तमाम

तुरक के तुरक और परे के परे।।
कुछ इधर उधर कुछ वो कुछ वः परे

मुरस्सा के साज़ों से वो तल समन्द
कि ख़ूबी ने हल्कुल कुदम से देयचन्द

वह फ़ीलों की और मेगडंबर की शान
झलकते वह मुल्कों अ के साइबान

चलै पाइ से तख़्त के हो क़रीब।
बदस्तूर शाहाना नवती मरीब।

सवारी के आगे पये अहितमाम
लिये सोने रूपे के आसे तमाम

नक़ीब और जिलौदार और चोपदार
यह आपुस में कहने थे हरदम पुकार

उसी अपने मामूलो दस्तूर से
अदब से तफ़ावत से और दूर से

चलाने जवानों बढ़े जाइयो ।।
हो जानिब से बागें लिये आइयो

बढ़े जायं आगे से चलते क़दम।
बढ़े ऊमरा दौलत क़दम बा क़दम

ग़रज़ इस तरह से सवारी चली।
कहे तू कि बादे बहारी चली

तमाशाइयों का हुआ था हुजूम
कि हर तरफ़ थी लारव आलम की धूम

लगा क़िले अर्से शहर की हद तलक
दुकानों पः थी बादले की झलक

मंढे थे तमामी से दीवारो दर ।।
तमामी था वह शहर सोने का घर

किया था ग़रज़ शहर आइनः बन्द
हुवा चौक अज़ तुरफ़ः वां चार चन्द

रअय्यत की कसरत हजूमे सिपाह
गुज़रती थी रुक रुक के हर जा निगाह

हुवे जमअ कोठों पः जो मर्दो ज़न
हर इक सतह थी या ज़मीने चमन

पे बालिका की सुन कुदरते कामिलः
तमाशे को निकली ज़ने हामिलः

लगा शुक्र से नाज़नीनो नहीफ़
तमाशे को निकले वज़ीनो शरीफ़

वहशी तबीबों तलक वे खलल
पड़े आशियानों से अपने निकल

न पहुंचा जो यक मुर्ग़ क़िबलःनुमा
ग़रज़ बस शाहज़ादा बहुत था हसीन
नज़र जिस को आया वह माहे तमाम
हुवा शाह को दीके बार इलाह ॥
यह ख़ुश अपने मह से है शहरयार
ग़रज़ शाह से वो हर इक क़िस्म को
घड़ी चार तक ख़ूब सी सैर कर
इसी क़स्र ने फ़ौज से हो सवार ॥
सवारी को पहुंचा गई फ़ौज उधर
जहां तक कि थीं ख़ादिमाने महल
क़दम अपने कुंवरों से बाहर निकाल
बलायें लगीं लेने सब एक बार ॥
गया जब महल में वह सर्वे रवां ॥
पहर रात तक पहिने पोशाक वह
क़ज़ारा वह शब थी शबे चारदह ॥
नज़ारे से था उसके दिल को सरूर ॥
अजब लुत्फ़ था सैरे महताब का
हुवा शाहज़ादे का दिल बेक़रार ॥
कुछ आई जो उस मह के जी में तरंग
ख़वासों ने जा शाह से अर्ज़ की ॥
इरादा है कोठे पे आराम का ॥
कहा शाह ने अब तो गये दिन निकल
पर इतना है उससे ख़बरदार हो ।

सो वह आशियाने में तड़पा किया
हुये देख आशिक़ कहीं तो महीन
किया उसने झुक झुक के उसको सलाम
सदा यह सलामत रहे मेहरो माह
कि रौशन रहे शाह परवर्दिगार
कोई बाग़ था शाह का उसमें से हो ।
ख़ुशवक़्त को देखला के अपना पिसर
फिरा शाह की तर्फ़ वह शहरयार ॥
गये अपने मंज़िल में शम्सो क़मर
ख़ुशी से वह डेवढ़ी तक आई निकल
लिया सबने आगे शाबाश हाल हाल
किया जी को एक दम सबने निसार
बंधा नाच और राग का वां समां ।
रहा साथ सब के तरबनाक वह ।
पड़ा तिलवान्नेता था हर तर्फ़ मह ॥
अजब आलमे नूर का था ज़हूर ॥
वह देखा कि दरया था सीमाब का
वह देखी जो वां चांदनी की बहार ॥
कहा आज कोठे पे बिछे पलंग ।
कि शाहज़ादे की आज यों है ख़ुशी
कि भाया है आलम उसे बाम का
अगर्चे है मर्ज़ी तो क्या है ख़लल
जिन्हों की हो चौकी वह बेदार हो ।

कहां तक कोई उनकी ख़ूबी को पाय — जिसे देख आंखों को आराम आय
वह गुलशन के थे उसके जो पेशगाह — कि हर वज़ह थी उनकी ख़ूबी में राह
कभी नींद में जब कि होता था वह — तो कुछ ख़्वाब सा सुख़ उसपे सोता था वह
छिपाये से होता न हुस्न उसका मांद — दिये थे लगा उसके मुखड़े को चांद
हुई दोनों के हुस्न की एक जोत — कि जैसे हों दो चश्मों के एक सोत
ज़बस नींद में था जो वह हो रहा — बिछौने पे आते ही बस सो रहा
वह सोया जो इस आन से बेनज़ीर — रहा पासबां उसका बदरे मुनीर
हुआ उसके सोने पे आशिक़ जो माह — लगा दी उधर उसने अपनी निगाह
वह मह उसके कोठे का हाला हुआ — ग़रज़ वां का आलम दो बाला हुआ
वह फूलों की ख़ुशबू वह सुथरा पलंग — जवानी की नींद और वह सोने का रंग
जहां तक कि चौकी के थे बारी दार — हवा जो चली सो गये एक बार ।।
ग़रज़ सब को वां आलमे ख़्वाब था — क़मर जगमगा एक महताब था
क़ज़ा का हुआ इक परी का गुज़र ।। — पड़ी शाहज़ादे पे उसकी नज़र
भभूका सा देखा जो उसका बदन — जला आतशे इश्क़ से उसका तन
हुई जानो जी से वह उस पर निसार । — वह तख़्त अपना लाई हवा से उतार
जो देखा तो आलम अजब है यहां — मुनव्वर है सारा ज़मीं आसमां ।
दुपट्टे को उस मह के मुंह से उठा ।। — दिया गाल से गाल अपना मिला
अगरचे हुई थी ज़ियादा हवस ।। — वलेकिन हया ने कहा उसको बस
मये इश्क़ में फिर यह सूझी तरंग — कि ले चलिये इसका अमानत पलंग
मुहब्बत की आई जो दिल में हवा — वहां से उसे ले उड़ी दिलरुबा ।।
हुआ जब ज़मीं से वह ग़ोला बलंद — हवा में सितारा सा चमका दो चंद
ग़ोले मह में वह यों ज़मीं से उठा ।। — चले तीर जिस तरह से गोशा खा ।
जले रश्क से उसके ग़म ओ चिराग़ — कि उस मह का पहुंचा फ़लक पर दिमाग़

उड़ा कर वह उसको परिस्तान में ग़रज़ ले गई आन की आन में ।।
ज़माने की जैसी है पस्तो बलंद ।। कभी ख़ुश है दिल और कभी दर्दमंद

तसवीर उड़ा ले जाने परी की शाहज़ादे को ।।

दास्तान हालत तबाह करने मां बाप की शाह-ज़ादे के गायब होने से

पिलाती मुझे साक़िया दे शराब कि यह हाल सुन कर हुवा दिल कबाब
यहां का तो क़िस्सा मैं छोड़ा यहां ज़रा अब सुनो ग़मज़दों का बयां
करूं हाल हिजरां ज़दों का रक़म कि गुज़रा जुदाई से क्या उनपे ग़म
खुली आंख जो एक की वां कहीं तो देखा कि वह शाहज़ादा नहीं

न है वह पलंग और न वह माहरू
हुई देख यह हाल हैरान कार ॥
कोई देख यह हाल रोने लगी ॥
कोई बलबलाई सी फिरने लगी ॥
कोई सिर पै रख हाथ दिलगीर हो
कोई शक्ल से नेरंज़न खड़ी छड़ी ॥
रही कोई उंगली को दांतों में दाब
किसी ने दिये खोल संबुल से बाल
न बन आई कुछ उनको इसके सिवा
सुनी शाह ने अलक़िस्सा जब यह ख़बर
कलेजा पकड़ मां तो बस रह गई ॥
हुवा शुमअ जो यूं सुफ़ पड़ी यह जो धूम
कहा शाह ने वां का मुझे दो पता
गई ले वह शाह को लबे बाम पर ॥
यही थी जगह वह जहां से गया ॥
मेरे जानजां मैं कहां जाऊं फिर ॥
अजब बहू ग़म में डिबोया मुझे ॥
करूं इस क़यामत का क्या मैं बयां
लबे बाम क़मरत जो यक सर हुई
शब आई वह जिस तरह सोने करी
अजब तरह की शब थी हैहात वह
सहर ने किया जब गरेबान चाक।
उठा शाह हर में हर तरफ़ शोरो गुल।

न वह गुल है उसका न वह उसकी बू
कि यह क्या हुवा हाय परवरदिगार
कोई ग़श से जी अपना खोने लगी
कोई ज़ोफ़ खा खा के गिरने लगी
गई बैठ मानिन्द तस्वीर हो ॥
रही नरगिस आसा खड़ी की खड़ी
किसी ने कहा घर हुवा यह ख़राब
तमाचों से जो गुल किये सुर्ख़ गाल
कि कहिये यह अहवाल अब शाह से
गिरा ख़ाक पर कहके हाये पिसर
कली की तरह से बिकस रह गई
किया ख़ादिमों ने महल ने हजूम।
अज़ीज़ा जहां से वह यूं सुफ़ गया ॥
दिखाया कि सोया था वह सीमबर
कहा हाय बेटा तु यां से गया ॥
मगर तूने मुझ पर नकी वे नज़ीर
ग़रज़ जान से तूने खोया मुझे ॥
तलक़्क़ी में हरदम था शोरो कि गां
तले की ज़मीं सारी ऊपर हुई ॥
रही थी जो बाक़ी वह रोते कटी ॥
क़यामत का दिन था न थी रात वह
उड़ाने लगे मिल के सब सिर पे ख़ाक
कि ग़ायब हुवा इस चमन से वह गुल

ग़मो दर्द से दिल जो सबका भरा
हुआ बाग़ सारा वह मातम सरा ॥

गया जान कि वह सर्व उस बाग से ॥
नज़र फूल आने लगे दाग़ से ॥

अकड़ना गये सर्व सब अपना भूल
उड़ाने लगीं कुमरियां सिर पे धूल

सदा अब जो कोई उन्हों की सुने ॥
जो कू कू से उनके जिगर तक भुने

हुवे रश्क औ ज़र्द सारे निहाल
समर लग के पावों हुवे पायमाल

तराने से बुलबुल का जी हट गया ।
गुलों का जिगर दर्द से फट गया

तबस्सुम गया हिज्र से ग़ुंचा भूल
हुवा ग़म से अज़ बस लहू पी के फूल

उड़ा नूर नरगिस की आंखों का सब
हुवे बाल संबुल के मातम के शब

लबे जू के उड़ने लगी गिर्द गर्द ॥
गुले अशरफ़ी का हुवा रंग ज़र्द ॥

लगी आग लाले के दिल को तमाम
दिया ख़ाक में फेंक इशरत का जाम

पड़ा मातम उस बाग़ में बस कि सख़्त
हुवे नख़्ल मातम तमामी दरख़्त

गिरे ग़म से अंगूर मदहोश हो ॥
पड़े सारे साये सियह पोश हो ॥

लगे थे जो पत्ते दरख़्तों के साथ ॥
वह हिल हिल के मलते थे आपुस में हाथ

वह लबरेज़ जो नहरें थीं ताबजा ॥
सो आंखों को वह रह गईं डबडबा

उछलते थे फ़व्वारे जो उसके वां
गया सब निकल उनका ताबो तवां

सिरह पर जो कुछ अपूक थे झड़ गये
ग़रज़ रोते रोते गढ़े पर गये ॥

हुवा हाल चश्मों का यां तक तबाह
किया रख़्त पानी ने अपना सियाह

कहीं वह कुवें और कहां आबशार
कोई दिल में रोती कोई ढाढ़ मार

न नालों का आलम न वह क़ुरक़ुरे
न वह आबजू थे न सबज़े हरे ॥

[illegible] करते थे ताऊस बाग़ ॥
लगे बोलने हां मुंडेरों पे ज़ाग़ ॥

सुहानी वह छांयें जो दिलचस्प थीं
सो क्या हो कि अब दिल लगे वां नहीं

सु नक़्श अब कहां थे वह रंगीं मकां ॥
हुवे सब वह ज़ीं दीदये ख़ूं चकां ॥

गुलों की तरह खिल रहे थे जो दिल
सो वह सब ख़िज़ां से हुवे मुज़्महिल

ख़िज़ां का अलम दिल में जो आ गड़ा
जिगर बर्ग गुल की तरह झड़ पड़ा

न गुंचा न गुल ने गुलिस्तां रहा
फ़कत दिल में इक ख़ार हिजरां रहा

वज़ीरों ने देखा जो अहवाल शाह
कि होती है अब इसकी हालत तबाह

कहा गो जुदाई गवारा नहीं ॥
वलेकिन ख़ुदाई से चारा नहीं ॥

नहीं ख़ूब इतना तुम्हें इज़तराब ॥
नसीबों से शायद मिले वह शिताब

ख़ुदा जाने अब इसमें क्या भेद है ॥
यह कहते हैं जीनों को उम्मेद है

ख़ुदा की ख़ुदाई तो मामूर है ॥
ग़रज़ उसके नज़दीक क्या दूर है ॥

नहीं एक सूरत पे कोई मुदाम ॥
उसी को ग़रज़ जानतो है कयाम

यह कह और शह को बिठा तख़्त पर
बहर नौअ रहने लगे यक दिगर

लुटाया बहुत बाप ने मालो ज़र ॥
वलेकिन न पाई कुछ उसकी ख़बर

दास्तान परिस्तान में ले जाने की

मुझे दे के मै खोज उसका बता ॥
ज़रा ख़िज़्र रह हो तु ही साक़िया

न पाई कहीं यां जो उस गुल की बू
करूं अब परिस्तान में जुस्तजू

उड़ी जो परी वां से लेकर उसे ॥
उतारा परिस्तां के अंदर उसे ॥

वहां एक था सैर का उसके बाग़
कि जिसके गुलों से हो ताज़ा दिमाग़

सियाही नो गुल उसमें अनवाअ के
तिलिस्मात कुल उसमें अनवाअ के

तिलिस्मात के सारे दीवारो दर ॥
न यां कैसे कोठे न यां कैसे घर

मुतल्ला मुनक़्क़श मुज़ह्हब तमाम
यह क्या हो जो हो धूप का उसमें नाम

गिरे छनके यां इस लताफ़त से धूप
कि ज़र्दी का जो ज़ाफ़रां पर हो रूप

न आतश का ख़तरा न बारिश का डर
न सर्दी न गर्मी का उसमें ख़तर

हरे और भरे सब गुलों से मकां ॥
जहां चाहिये जाके रख दे वहां ॥

दरख़्शांदा हर सक़्फ़ दालान की
हो दीवार जैसी चिराग़ान की ॥

ज़मीं वहां की सारी जवाहिर निगार
किसी को हो जिस चीज़ का इख़्तियार
जवाहिर के गौहर वह थे नूर पूर
फिरें दिन मैं सारे वह हैरान हो ॥
लगे हर तरफ़ गोशे खुशबिरंग
बना वे हुए जाल बाहम निहाल ॥
सदा आप से आप घड़ियाल की
रहे वहां के कुन्जों का जो दर खुला
बगर बन्द कर दीजिये एक बार
मकानों में मख़मल का फ़र्श ओ फ़रूश
तिलिस्मात के पर्दे और चिलवनें
ख़वासें परीज़ाद उसमें तमाम ॥
सरे नहर बंगला मुरस्सा निगार ॥
ख़्वाबगाह ज़र्दी का उसमें पलंग
नज़ारा खुली आँख उस गुल की जो
न वह लोग देखे न वह अपनी जा ॥
अचम्भे का यह ख़्वाब देखा जो वहां
ग़ज़ब था वह लड़का न समझा भी कुछ
सिरहाने जो देखी तो है चारदह ॥
कहा कौन है तू यह किसका है घर
फिरा मुंह को ले और उधर से नक़ाब
ख़ुदा जाने तू कौन मैं कौन हूं ॥
पर अब ख़ुद तू आया है यां मेरे घर

अधड़ में चमन और हवा में बहार
नज़र आये वह चीज़ बालाये ताक़
खिरामां फिरें सहन में दूर दूर ॥
कै शान को काम इन्सान हो ॥
कहीं दिन को गौहर कहीं ख़ूब बिरंग
गुलो गुंचा सब वहां के हूं अन ख़याल
कहीं नाद की और कहीं नाल की
तो दुनिया के बाजों की आवे सदा
तो जो अरग़नू राग निकलें हज़ार
बस्त्ने सुलेमानी उन पर नक़ूश
इरादे पे दिल के उठें और गिरें ॥
फिरें गिर्दो गिर्द उस परी के मुदाम
सरापा बरंगे गुहर आबदार ॥
खुला हुस्न से उसके बंगले का रंग
न पाई वहां माह की अपनी बू ॥
न अज़्नु बसे इक कोन कना रहा
लगा कहने यार ब मैं आया कहां
हुआ कुछ दिलेर और हैरां भी कुछ
कि है अजनबी सी वह इक ख़ुश मह
ले आया मुझे कौन घर से इधर
दिया उस परी ने यह हंसके जवाब
मुझे भी तअज्जुब है मैं क्या कहूं
ले आई है तुझको क़ज़ा वो क़दर

वह घर जो कि मेरा है तेरा नहीं ॥
पर अब घर यह तेरा है मेरा नहीं ॥

तेरे हुस्न ने मुझ को शैदा किया
तेरा ग़म मेरे दिल में पैदा किया ॥

जुदा कर तेरा तुझ से आह ओ दियार
यह बन्दी ही लाई है तक़सीर वार ॥

परी हूँ मैं और वह परिस्तान है ॥
यहां सब यह क़ौमें बनी जान है ॥

कहां सूरतें जिन कहां अहले इन्स
ग़रज़ कह रहे सुहबते ग़ैर जिन्स

परी को हुई शादी उस मह को ग़म
प नाचार क्या कर सके वह सनम

कभी यों भी है गर्दिशे रोज़गार
कि माशूक़ आशिक़ के है इख़्तियार

ग़रज़ दिल को जो तों लगाया वहां
कहा उसने जो कुछ कहा उसको हां

वलेकिन न अक़्लो न होशो हवास
रहे वह परियों की तरह वह उदास ॥

कभी अश्क आंखों में भर लाय वह
कभी सांस ले कर कहे हाय वह ॥

वह महलों की चुहलें वह घर का समां
रहे रूबरू ध्यान में हर ज़मां ॥

वह अश्फ़ाक़ जो मां बाप की याद आय
तो रातों को रो रो के दरया बहाय ॥

कभी अपनी तनहाई का ग़म करे ॥
कभी अपने ऊपर दुआ दम करे ॥

करे याद जब अपना नाज़ो नअम ॥
फ़िग़ां ज़ेर लब वह करे दम बदम ॥

बहाने से दिन रात सोया करे ॥
न हो जब कोई तब वह रोया करे ॥

ग़रज़ इस तरह उसको हर हाल में
कि जों मुर्ग़ तड़पे नया जाल में ॥

ग़रज़ माहरुख़ उस परी का था नाम
पिदर से किया था यह पोशीदा काम

कभी घर में रहती कभी रहती वां
कि ता राज़ उसका न होवे अयां ॥

वह परियों में अज़ बसकि थी ज़ी शऊर
नई चीज़ लाती थी उसके हुज़ूर ॥

अजायब ग़रायब परिस्तान के ॥
दिखाती थी हर शब उसे आन के ॥

नये खाने और मेवे अक़साम के
मुहय्या सब असबाब आराम के ॥

नई कि पुतलियां रोज़ पोशाक की
ख़ुशामद सदा जान ग़मनाक की ॥

नये स्वांग वां के नये नये रंग ॥
कि ता दिल लगी और न हो जीव तंग

शराबों के शीशे चुने ताक़ में ।।
शराबो कबाबो बहारो निगार
न था और कुछ ग़म तो उसको वहां
उसी ग़म में घुल घुल के मरता था वह
परी वह जो थी दिल लगाये हुये ।।
वह थी नाज़नी भी बहुत अक़्लमंद
कहा एक दिन उसने ऐ बेनज़ीर ।।
तू एक काम कर एक पहर फिर कहीं
तू रुक रुक के दिल को न कर अपने बंद
मरे प्रास जाती हूँ मैं बाप पास ।।
यह घोड़ा मैं देती हूं कल का तुझे
कि गर शहर की तर्फ़ जावे कहीं ।।
तो फिर हाल हो जो गुनहगार का
कहा क्यों कि मैं तुम को जाऊंगा भूल
कहा माहरुख़ने कि थे तेरे बर ख़ ।।
जो उतरे तो कल उसकी यों जोड़ियो
ज़मीं से लगा और ता आसमां ।।

मगर वह कि निकले न आफ़ाक़ में
ज़बानी ये मस्ती वो बोसो कनार
बजुज़ ग़म के दूर ये दोस्तां ।।
सदा शाम ओ अस्सा आह करता था वह
वह बैठी थी उसको उड़ाये हुये ।।
न मुश्किल से कुछ उसके होते थे बंद
तेरे दाम में तू हुवा है असीर ।।
किया कर तू टुक सैर रूये ज़मीं ।।
न पहुंचे कहीं तेरे दिल को गज़ंद ।।
अकेला तु रहता है इस जा उदास ।।
वलेकिन ये दे तू मुचल्का मुझे
न या दिल किसी से लगावे कहीं
वही हाल हो तुझ से दिलदार का
मुझे जो कहा तुमने सब है क़बूल
कि बस प्यार तुझ से मैं [illegible]
जो बस अक़्ल चाहे तो यों मोड़ियो ।।
जहां चाहियो जाइयो तू वहां ।।

दास्तान घोड़े की तारीफ़ में

वह क्या मैं उस अस्प की ख़ूबियां ।।
ग़रज़ कल को मोड़े फ़लक पर हुवा
न खावे न पीवे न सोवे कभी ।।
वह प्यारी न कमरी न ख़ुबकार वह ।।

परिंदों में हो कब यह महबूबियां
जो कहिये तो कहये उसे बाद पा ।
न थावे न बीमार होवे कभी ।।
न वह कुंदना तंग और न मुंहज़ोर वह

लगा वां से छिप छिप के करने नज़र
जो देखी तो सुहबत अजब है वहां
अजब सूरतें और तुरफ़ा महल
मिली जिन्स की आने जो उसको बू
नज़र आई वां चांदनी की बहार
दरो बाम इक लख़्त सारे सपेद ॥
मुर्ग़क़ ज़मीं पर तमाशी का फ़र्श
ज़मीं का तबक़ आसमां का तबक़
बिलोरी थे हर तरफ़ संग फ़र्श ॥

दरख़्तों से जो माह हो जिल्वागर
अजब चांदनी है अजब है समां ॥
चला देखने ही दिल उसको निकल
लगा तकने हैरत से हर सू का रू ॥
कि आंखों ने ली ख़ैरगी इख़्तियार
हर इक ताक़ मेहराब सुथरे सपेद
झलक जिसकी ले फ़र्श से ताब अर्श
सुनहरे रुपहले हो जैसे वरक़ ॥
कि जिससे मुनव्वर रहे संग फ़र्श

तसवीर इमारत वो बाग़

गई उसके आलमपे जिस की निगाह
तरह उसकी हर दिल की मानूस थी
कहूं देख उसके तईं हो गुमंद ॥
हर इक सिम्त वां नूर का इज़दहाम
लपेटे हुये बादलों से दरख़्त ॥
मुसल्लस वह चौपड़ की पाकीज़ा नहर
लबे नहर पर साफ़ जो ग़ार की ॥
पड़े उसमें फ़व्वारे छुटते हुये ॥
मुकर्रज़ पड़ा उसमें मुकै प्र जो ॥
लिये गोद मुकै प्र छोटे बड़े ॥
ग़रज़ अपनी सूरत से तारों को तोड़
हवा में वह जुगनू से चमके बहम ॥
फ़क़त चांदनी में कहां तौर यह ॥
ज़माना ज़र अफ़्शां हुवा ज़र फ़िशां
गुलो मुचा ज़री वो ताजो ख़रूस ॥
ज़ुलिखा मां ज़री पोश हर माह वश ॥
खड़ा एक नशगीरये ज़र निगार ॥
जड़ाऊ वह इस्तादे इल्मास के ॥
खिंचो डोरी हर तर्फ़ ज़रतार की ॥
कहूं क्या मैं झालर की उसकी फबन
मुग़र्रक़ बिछी मसनद इक नामगी
न फूले समाते थे तकिये धरे ॥
बिलोरी सुराही वह जामे बिलूर ॥

और आई नज़र उसमें इक एक माह
कि गोया वह शीशे को फ़ानूस थी
परी को किया है मा शीशे में बंद ॥
लगे आइने क़द आदम तमाम ॥
ज़मीं तो हवा साहबे ताजो तख़्त ॥
पड़े चश्म ये माह से जिसमें लख़्त ॥
तो पटरी थी वह एक बिलोर की
हवा बीच मोती से लिपटे हुये ॥
गिरा माह चांद ख़ाक से पुरले हो ॥
हर इक जा सितारे उड़ावें खड़े ॥
ज़मीं को फ़लक का बनाया था जोड़
मलैं जिल वये मह को ज़ेरे क़दम ॥
कि तुरी नज़र तक मिलै और यह
ज़मीं से लगा ता समा ज़र फ़िशां ॥
ज़मीं ने चमन सब ज़बीं ने अरूस ॥
करैं देख कर भी हो मह जिन को गुश
कि थे जिसके झालर पे मोती निसार
ढले एक सांचे के एक रास के ॥
लड़ी जो किनारे के हों हार की ।
कि सूरज की हो गिर्द जैसे किरन
यह थी चांदनी जिसके क़दमों लगी
कि थे वह फ़क़त तुहफ़ ही से भरे ॥
दिले शीशा बकफ़ तमाशा पनूर ॥

अजब तरह का हुस्न था जांफ़िज़ा   कि मह रूबरू जिसके यायक रहा
कहूं उसके पोशाक का क्या बयां   फ़क़त एक पोशाक आबे रवां॥
ज़िबस मोतियों की थी सजाफ़ गुल   कहे तू वह बैठी थी मोती में तुल॥
और इक ओढ़नी जो हवा या हुबाब   जिसे देख शबनम को आवे हिजाब
सबा हत सफ़ा उसमें झलकी हुई॥   पड़ी सिर से कांधे पे ढलकी हुई॥
गरेबां में तकमा इक इलमास का   सितारा सा महताब के पास का॥
वह कुरती वह अंगिया जवाहिर निगार   नया बाग़ और इक ख़िज़ां की बहार॥
झलक पायजामे की दामन से यों॥   कि रौशन हो फ़ानूस में शमअ जों
सफ़ाई पे पोशाक की देख यों॥   नज़र सोच में है कि मैली न हो॥
वह तरकीब और चांदसा वह बदन   वह बाज़ू पे ढलके हुये नौरतन॥
जड़ाऊ वह बाले कि हाले को रश्क   वह मोती के माले कि आफ़ाक़ का अश्क
वह आंखों की मस्ती वह मिज़गां की नोक   करनफूल की जेब वह बाले की झोक
वह मोती का इक लड़ा वह मोती का हार   सदा अश्क गमदीदा जिसपर निसार
लगा धुकधुकी पचलड़ा सत लड़ा॥   सरासर गले हुस्न उसके पड़ा॥
जड़ाऊ छमकली वह चंपाकली॥   रहे जिससे इलमास को बेकली॥
गले उसके मोती लगे गिर्द कुल॥   कि जों शबनम आलूदा हो बर्गे गुल
जहांगीरियों का करूं क्या बयां॥   कि उठती थी हाथों से जिसके फ़ुगां
जवाहिर से सोने की हैकल जड़ी॥   कमर और कुरती के नीचे पड़ी॥
फ़क़त मोतियों की पड़ी पायज़ेब   कि जिसके क़दम से मुहर पायज़ेब॥
किसी के कहां हाथ वह पाऊं आय॥   जवाहिर जहां पांवपड़ पड़ के जाय॥
सरापा अगर हो ज़बां मेरा तन॥   सरापा में उसके करूं क्या सख़ुन॥
सब आज़ा बदन के मुवाफ़िक़ दुरुस्त   हर इक काम में अपने चालाक ओ चुस्त
जहां रास्ती चाहिये रास्ती॥   कजी जिस जगह चाहिये वां कजी।

वह मुखड़ा कि जिस से मह दाग़ खाय
वह नक़्शा कि तसवीर को हैरत आय

जो कुछ चाहिये ठीक नख सिख से अंग
नज़ाकत भरा सेवती का सा रंग ॥

कुछ एक तमकनत और कुछ बांकपन
ग़ज़ब हर तरह में अनोखी फबन ॥

करिश्मा अदा ग़मज़ा ज़ाहिर आन में ॥
ग़रज़ दिलबरी उसके फ़रमान में

तग़ाफ़ुल हया नाज़ इश्वा ग़रूर
हर इक अपने मौक़े पे वहीं ज़रूर

तबस्सुम तकल्लुम तरह्हुम सितम
मुवाफ़िक़ हर इक हौसले के करम

वह अबरू कि मेहराब ऐवान हुस्न
झुकी आँख नरगिस गुलिस्तान हुस्न

निगह आफ़ते चश्म ऐसे बला
मसाहें सफ़ों को उलट दें बर मला ॥

दुरे गोश जब उसका ताबिन्दा हो
सदफ़ का दिले साफ़ शर्मिन्दा हो

वह बीनी कि जिसकी नहीं कुछ नज़ीर
है अंगुश्त क़ुदरत की सीधी लकीर

वह रुख़सार नाज़ुक कि हो जाय लाल
अगर उसपे बोसे का गुज़रे ख़याल

नहीं रुखो याबिस का था कुछ हिसाब
बयाने गुलू सब के सब हुस्न आब

वह साइद वह बाज़ू भरे गोल गोल
बराबर हो इक मास के जिसका मोल

वह दस्ते हिना बस्ता ख़ूबी का बाब
शफ़क़ में हो चूँ पंजये आफ़ताब

ज़िबस अस्ल आईना था उसका तन
कहें तू कि थी नाफ़ अबके ज़क़न ॥

कमर को कहूँ क्यों कि मैं उसके हेच।
न आवे नज़र तौ है क़िस्मत का पेच

वह ज़ानू कि आ जाय गर उस पे हाथ ॥
रहे उम्र भर हाथ ज़ानू के साथ ॥

वह साके बिल्लौरीं वह अंदाज़ पा ॥
फिरे हर सहर चश्मो दिल में सदा

क़दे क़ामत आफ़त का टुकड़ा तमाम
क़यामत करे जिसको झुक कर सलाम

वह अठखेलियाँ और वह उसकी चाल
कि दिल जिससे आलम का हो पायमाल

कहे कबक कैसी ही गो चाल लाय
कहाँ पर वह रफ़्तार को उसके पाय

अलग चाल उसकी कोई क्या चले
यह अंदाज़ सब उसके पाँवों तले ॥

यह नव पुश्त पा आफ़ अंगुश्त पा ॥
कफ़े पा दिखावे से पुश्त पा

सुर्ख़ी के जवाहिर से इक तुहफ़ा तक फ़र्श
न वह मुफ़्लिस पा बल्कि पा मुफ़्र कफ़्श

यह कुदरत का देखा जो उसने ख़याल
कहा शाहज़ादे ने या ज़ुलजलाल ॥

दरख़्तों से वह देखता था निहां ॥
किसी की नज़र जा पड़ी नागहां

जो देखे तो है इक जवाने हसीं ॥
दरख़्तों की है ओट में मह जबीं ।

यह चरचा जो फैला तो ज़ाहिर हुआ ।
हर इक हाल से उसके माहिर हुवा

ये सुन एक से एक वां सब के सब ॥
फिरैं बर्ग गुल की तरह गुंचा लब ॥

जो देखें तो शोला सा रौशन है कुछ
दरख़्तों का रौशन सा [illegible]गन है कुछ

किसी ने कहा कुछ न कुछ है बला
किसी ने कहा चांद है यां छिपा

किसी ने कहा है परी या कि जिन ॥
किसी ने कहा है क़यामत का दिन

लगी कहने माथा कोई अपना कूट
सितारा पड़ा है फ़लक पर से टूट ॥

हुई सुबह शब का गया उठ हिजाब
दरख़्तों में निकला है यह आफ़ताब

किसी ने कहा देख यों ऐं बुवा ॥
खड़ा है कोई साफ़ यह मर्दुवा ॥

किसी ने कहा यह तो दिलदार है ॥
किसी ने कहा कुछ यह इसरार है

यह आपुस में बातें जो होने लगीं ॥
इशारों से घातें जो होने लगीं ॥

गई बात यह शाहज़ादी के गोश
यह सुनते ही जाता रहा उसका होश

कहा मैं तो देखूं यह कहकर उठी ॥
गया सनसना जी तो रह कर उठी ॥

ख़वासों के कांधे पे धर अपना हाथ
अजब इक अदा से चली साथ साथ

कुछ इक रौफ़ से होल खाती हुई ॥
धड़क अपने दिल की मिटाती हुई ॥

कई हमदमें थीं जो कुछ कुछ पढ़ीं ॥
दुआयें वह पढ़ पढ़ के आगे बढ़ीं

गई जब वह करके दिल अपना कड़ा
वहां जिस जगह थे वह बाहम दरख़्त

जो देखे तो है इक जवाने हसीं ॥
खड़ा है वह आईना सा मह जबीं ॥

सरकने की वां से न जा गह न ठाउं ॥
दिये है रते इश्क़ ने गाड़ पांउ ॥

बरस पंदरह या कि सोलह का सिन
मुरादों की रातें जवानी के दिन ॥

नई पुश्त लब से मिसी की नमूद / जिसे देख मोला हो चर्खे कबूद ॥
गले में पड़ा नीमा शबनम का एक / बदन से अयां नूर आलम का एक ॥
तमामी को संजाफ़ झिलचा कुजां / कि चूं अक्स मह जेब आवे रवां ॥
तरहदार इक सिर पे फेंटा सजा / तमामी का पटका कमर से बंधा
अजब पेच से पेच बैठे थे मिल ॥ / कि हर पेच पर पेच खाता था दिल
जवाहिर का तकमा गले में लगा ॥ / सितारा हो जों सुबह का जगमगा ।
वह मोती का लटकन ज़मुर्रद को हर / लटक जिस की ज़ेबिंदा दस्तार पर
वह मेरा बदन साफ़ तरकीबवार / भरे उंड पर जो रत्न की बहार ॥
इक इलमास की हाथ में गुज़री / सरासर हिनादस्तो पा में लगी ॥
अयां चुस्ती चालाकी की गात से ॥ / नमूदे जवानी हर इक बात से ॥
बदन आईना सा दमकता हुवा ॥ / गुले बाग़ खूबी लहकता हुवा ॥
अकड़ ज़ुल्फ़ की और काकुल का बल / जवानी की शब और समा बामहल
क़यामे से ज़ाहिर सरापा ग़ुरूर ॥ / जबीं पर बरसता शुजाअत का नूर
कलेई पुक की तेग खाये हुये । / खड़ा दिल किसी पर लगाये हुये
यह आलम जो देखा तो गश खा कर गई / वह जितनी कि आई थीं सब मर गईं ।
शिताबी से जा कर कहा वां का हाल / कि ऐ शाहज़ादी ये साहिब जमाल ॥
अजब सैर है सैर महताब में ॥ / यह आलम तो देखा नहीं ख़्वाब में
कहे से हमारे न मानोगी तुम ॥ / जो देखोगी आंखों तो जानोगी तुम
उठा पाय गुलगूं को जल्दी निगार / न जाये कहीं हाथ से यह बहार ॥
नहीं और कुछ तुम न कीजो हिरास / चली आवो तुम इन दरख़्तों के पास
गई उस जगह जब वह बद्रे मुनीर । / और उसने जो देखा शहे बेनज़ीर ।
गये देखते ही सब आपुस में मिल ॥ / नज़र से नज़र जी से जी दिल से दिल ॥
ग़रज़ बेनज़ीर और बद्रे मुनीर ॥ / गिरे दोनों आपुस में होकर असीर ॥

रही कुछ न तन मन की सुध बुध उसे
न कुछ अपने तन की रही सुध उसे

थी हमराह इक उसके दुख़्ते वज़ीर
निहायत हसीं और क़यामत शरीर

ज़िबस थी सितारे से वह दिलरुबा॥
उसे लोग कहते थे नज्मुन्निसा

शिताबी से ला उसने छिड़का गुलाब
तब आई तनों में ज़रा आबो ताब॥

वह उठते तो उठ्ठी पे हैरान सी॥
गुले शबनम आलूदा गिरयान सी

वह शाहज़ादये दिल शुदः सो ठिठक
वहीं रह गया नक़्श पा सा भुचक

कि वह नाज़नीं कुछ झिजक मुंह छिपा
कमर और चोटी का आलम दिखा

चली उसके आगे से मुंह मोड़ कर॥
वहीं नीमबिस्मिल उसे छोड़ कर

वह गुद्दी वह शाने वह पुश्ते कमर
वह चोटी का कोने पे आना नज़र

दास्तान ज़ुल्फ़ और चोटी की तारीफ़ में॥

पिला साक़िया साग़रे मुश्क बू॥
कि है मुझको दरपेश तारीफ़ मू।

सरे शाम से दूं यहां तक शराब॥
कि मस्ती में देखूं रुखे आफ़ताब

करूं उसके बालों का क्या मैं बयां
न देखा किसी रात में यह समां

वह ज़ुल्फ़ें कि दिल जिसमें उलझा रहे
उलझने से जी जिसके सुलझा रहे

वह कंघी वह चोटी खिंची साफ़ साफ़
किनारी का पीछे चमकता मुबाफ़

कहूं उसकी चोटी का क्या रंग ढंग॥
कि जों आखिरी शब हो झमके का रंग

नुमायां थी यों ओढ़नी से झलक॥
कि जों अब्र में बर्क़ की हो चमक॥

मुबाफ़े ज़री ने किया है ग़ज़ब॥॥
दिया है गिरह दिन को दुंबाले शब

सिंगारों में वह सब से है गो उतार॥
यह कहते हैं चोटी का उसको सिंगार

न हो क्योंकि चोटी का रुतबा बड़ा
कि इक नूर है उसके पीछे पड़ा॥

गुलो संबुल उस फ़र्स से कुर्बान है॥
कि उसकी लटक में अजब आन है

लड़ी थी ज़िबस सख़्त से उसके साथ॥
शबे रोज़ को देखा उसने गांठ॥

बले हाथ आता है उसका कठिन
नज़र कर न देखे उसे होशियार ॥
वह पीठ उसकी शफ़्फ़ाफ़ आईना सां
कहूं उसके आलम का क्या माजरा ॥
भरी थी दिनों से ज़िबस उसकी मांग ॥
दिले आशिक़ उसपर से कुर्बान है ॥
कशाकश में था वरना जीना तो हेच ॥
ग़रज़ हुस्न का उसके है सब यह भेद ॥
कोई सुर्ख़ जो कोई उसमें मुवाफ़ ॥
किया क़त्ल गो उसने दिल को तो क्या
कहां तक कहूं उसकी चोटी की बात
दिया धोर को गरचे हर बार तूल ॥
बहुत मुश्ताक़ फ़ी जो की मैंने यां ॥
[illegible] ऊपर जो पूरी न बैठी मिसाल
[illegible] इस पेच से बाहर आता हूं मैं ॥
ग़रज़ वह मुड़ी जब दिखा अपने बाल
[illegible] सब अपनी दिखाती चली ॥
ग़रज़ मुंह पे ज़ाहिर बले दिल में चाह
[illegible] कौन कमबख़्त आया यहां ॥
[illegible] जो हुई आन की आन में ॥
[illegible] कोई परदा शिताब ॥
[illegible] वह हुस्ने वज़ीर
[illegible] तो ख़ुश आते नहीं ॥

कि है ज़िल्ल हक़ की क़लम वह काले का सन
कि वह इक सितारा है दुंबाला दार
जिस ऊपर वह चोटी का पड़ना वहां ॥
कि जो होवे दरया पे काली घटा ॥
बहुत दिल लिये उसकी कंघी ने मांग
कि मग़्शूक़ात का सिर पे अहसान है
भले को रखा उसने ढीला है पेच ॥
जो चाहे करे वह सिया हो सफ़ेद ॥
करे खूं दिल अपना उसको मुआफ़
शफ़क़ का नहीं काम पर खूं बहा ॥
कि थोड़ा है ख़्वाब और बड़ी है यह रात
बलेकिन यह हो अर्ज़ मेरी क़बूल
घटाने की जागह न थी दरमियां ॥
हुई है मेरी फ़िक्र मुझपर वबाल
समा एक ताज़ा दिखाता हूं मैं ॥
तो गोया कि मारा मुहब्बत का जाल
छिपा मुंह को और मुसकराती चली
निहां आह आह और अयां वाह वाह
मैं अब छोड़ घर अपना जाऊं कहां
छिपी जाके अपने वह दालान में ॥
छिपा अब्र तारीक में आफ़ताब
लगी हंसके कहने कि बद्रे मुनीर ॥
तेरे नाज़ बेजा यह भाते नहीं ॥

मेरे लुत्फ़ के टुक देख तू हाय हाय ।। मसल है कि मन भावे मुड़िया हिलाय

किया है अगर तूने घायल उसे ।। तो मत छोड़ अब नीम बिसमिल उसे

टुक एक दम यह उठा ज़िंदगानी का तू । मज़ा देख अपनी जवानी का तू ।।

मेरे ऐश का नाम अब नोश कर । ग़मे दीनों दुनिया फ़रामोश कर ।।

यह हुस्नो जवानी यह जोशो ख़रोश ग़फ़ूरस्त रज़ द तुसाग़र विनोश ।।

कहां यह जवानी कहां यह बहार यह जोबन का आलम रहै यादगार

सदा ऐश दौरां दिखाता नहीं ।। गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं ।।

सभी ये तो दुनिया के हैं कारो बार वले हासिले उम्र है वस्ल यार ।।

ख़ुश आ वह ज़माना कि दो एक जगह करें यक दिगर जिल्वये मेहरो मह

कहां चाह वाले हैं यूसुफ़ अज़ीज़ ।। अरी बावली चाह में कर तमीज़ ।।

तेरे घर में आया है मेहमां ग़रीब ।। यह है वारदाते अजीबो ग़रीब ।।

शिताबी से मजलिस को तय्यार कर तू इस गुल से घर एक गुलज़ार कर

बुलासा किया ने गुल अन्दाम को निगह साथ गर्दिश में ला जाम को

शबो रोज़ पी मिल के जामे शराब ।। महो मेहर को रश्क से कर कबाब ।।

यह सुन सुन के वह नाज़नीं मुसकरा लगी कहने अच्छा भला री भला ।।

मैं समझी तेरा दिल गया है उधर ।। बहाने तू करती है क्यों मुझ पे धर ।।

लगी कहने हंस हंस के वह माहवश हुई थी उसे देख मैं तो ही ग़श ।।

तुम्हीं ने तो छिड़काया मुझ पर गुलाब भला मेरी ख़ातिर बुला ले शिताब

यह आपुस में रमज़ों की बातें हुईं ।। इशारों की बाहम जो घातें हुईं ।।

बुला लाई जा उस जवां के तईं ।। किया मेज़बां मेहमां की तईं ।।

बुला एक मकां में बिठाया उसे महल का समां सब दिखाया उसे

फिर उस नाज़नीं ने पकड़ उसका हाथ बिठाया है ला आख़िर उस गुल के साथ

दास्तान मुलाक़ात करना बद्रमुनीर का बेनज़ीर से

पिला साक़िया मुझको सहबाये शौक़
मिले हैं नसीबों से यहां आये ऐ शौ

वह मिलके बैठे हैं दो एक मह ।।
क़िरान महो मेह्र है इस जगह ।।

हरएक बुर्ज एक के गुलिस्तां है आज
बहारे विसाले ग़रीबां है आज ।।।।

वज़ीर उसको लाकर बिठाया जो वां
न पूछ उस घड़ी की अदा का बयां ।।

वह बैठी अजब एक अंदाज़ से ।।
बदन को चुराये हुये नाज़ से ।।

मुंह अंचल से अपना छिपाये हुये
लजाये हुये शर्म खाये हुये ।।

पसीना पसीना हुवा सब बदन ।।
कि जों शबनम आलूदा हो यासमन

घड़ी दो तलक वह महो आफ़ताब
रहे शर्म से पाय बन्दे हिजाब ।।।

उन्हों के रुके बैठने से ख़फ़ा ।।
हुई दिल में अपने वह नजमुल निसा

गुलाबी को ला उसके आगे धरा
पियाले को फिर जल्द उसने भरा ।।

कहा शाहज़ादी को बैठी है क्या ।।
यह प्याला तो उस बुत के मुंह से लगा

ज़रा मेरी ख़ातिर से हंस बोल तू ।
लबे लाल शीरीं को टुक खोल तू ।

मैं सदक़े तेरे तुझ को मेरी क़सम ।।
कई साग़र उसको पिला दम बदम ।।

यह देख उसकी मिन्नत पियाला उठा
उधर से फिरा मुंह को और मुसकुरा

कहा बादा नोशी से हो जिसको ज़ौक़
पिये यह पियाला नहीं उसका शौक़

कहा शाहज़ादे ने हंस कर के यों ।।
पियूं मैं किसी के निहोरे से क्यों ।।

ग़रज़ होके आपस में राज़ो नयाज़
पिये दो पियाले बसद इमतियाज़

फिर आख़िर को शाहज़ादे ने भी उठा
दिया साग़र उस मह के मुंह से लगा

जब आपुस में चलने लगे जामे मुल
मुंदे गुंचा सां दिल खिले मिस्ल गुल

हुई एक दिगर फिर तो नफ़ नीश हाल
लगे होने आपुस में क़ालो मक़ाल

खुला बंद जिस दम दरे गुफ़्तगू ।।
ज़बां ने दक़ीक़न कही मू बमू ।।

कहीं दुखिनि दासे जो गुज़री थी सब
जताया सब अपनी हक़ीक़त और नसब
परी का भी अहवाल ज़ाहिर किया
छिपे रज़ से उसको माहिर किया
कहा एक पहर की है रुखसत मुझे
ज़ियादा नहीं इससे फ़ुरसत मुझे॥
यह सुन दिल ही दिल बीच खा पेचोताब
दिया शाहज़ादी ने उसको जवाब॥
मरो तुम परी पर वह तुम पर मरे॥
बस अब तुम ज़रा मुझ से बैठो परे॥
मैं इस तरह का दिल लगाती नहीं॥
यह शिरकत तो बन्दी को भाती नहीं
अब मैं तुम से क्यों दिल लगावे कोई
भले चंगे दिल को जलावे कोई॥॥
बहे शमअ सां क्यों कोई अश्क से
जले किस लिये आतशे रश्क से।
यह सुन पाऊं पर गिर पड़ा बेनज़ीर
कहा क्या करूं आह बद्रे मुनीर॥
कोई लाख जी से हो मुझ पर फ़िदा
मैं तुझ पर फ़िदा हूं मुझे उससे क्या
कहा चल सिर अपना क़दम पर न धर
किसी के मुझे जी की क्या है ख़बर
यह रमज़ो कनाये जो होने लगे॥
तो आपुस में हंस हंस के रोने लगे।
रहो दिल ही दिल में ग़रज़ दिल की बात
पहर भर गई इतने अरसे में रात॥
ख़बर रात की सुन उठा बेनज़ीर
कहा अब मैं जाता हूं बद्रे मुनीर
अगर क़ैद से छूटने पाऊंगा॥
तो फिर आज के वक़्त कल आऊंगा
यह मत समझियो हूं मैं आराम में
करूं क्या फंसा हूं अजब दाम में॥
दिल इस जा से उठने को करता नहीं
कोई आप से जान मरता नहीं॥
करम मुझ पे रखियो ज़रा मेरी जां
मैं दिल छोड़े जाता हूं अपना यहां
यह कह उस तरफ़ को रवाना हुवा
दिल इस तरफ़ उसका दिवाना हुवा॥
गया अपने मामूल से बेनज़ीर॥
इधर का हुवा क़ैदी ऊधर असीर।
परी साथ काटी वह जों तों की रात
उठा सुबह मलता हुवा अपने हाथ
समा ख़्वाब का आंखों में छाया हुवा
मज़ा दिल में सारा समाया हुवा॥
उठी जो कोई देख कर वस्ल ख़्वाब
न हो वस्ल और दिल को हो इज़्तराब

नई बात का लुत्फ़ पाना ग़ज़ब॥ वह पहिले पहिल दिल लगाने का ढब

क़लक़ दिल पे याली कोई ऐसा कब मिले मुझ से आ मेरे दिल अफ़रोज़ कब

मुहब्बत में मुश्किल से यह काम की लगा देखने राह फिर शाम की।

वह दिन हिज्र का उस पे आख़िर हुवा उसे काटना दिन क़यामत हुवा॥

इधर का तो अहवाल था इस तरह कहा मैंने कर मुख़्तसर जिस तरह

ज़रा अब सुनो तुम उधर का बयां हुवा तर्फ़ सानी का क्या हाल वां।

वह शब उसको अंदोह ग़म में कटी घड़ी जो कटी सो अलम में कटी॥

रही सूरत आंखों में जो यार की हुई याद में सुबह रुख़सार की॥

कुछ उम्मेद दिल में कुछ एक जी को यास लबों पर हंसी लेक चेहरा उदास॥

लगा उसको बातों में नज्मुन्निसा लगी कहने जी चाहता है मेरा॥

कि तू आज कर ख़ूब अपना सिंगार मुझे हुस्न की अपनी दिखला बहार

लगी कहने चल ये दिवानी न हो॥ कोई चीज़ अपनी बिगानी न हो॥

करूं किसके ख़ातिर मैं अपना सिंगार वह है कौन जिस को दिखाऊं बहार

ग़रज़ आह ज़नी बहुत दूर थी॥ वह शुग़्ल उसको यह लेक मंज़ूर थी

नहा धो के उस रोज़ ऐसी बनी॥ कि दो दिन की सच मच हो जैसे बनी

वह मुखड़े का आलम वह कंघी का ढंग अबे माह हो देख कर जिस को दंग

वह मिस्सी वह उसके लबे लाल फ़ाम अबा दे दिया रे बदख़्शां की शाम

वह बालों का आलम वह काकुल का ढब कहे तू पड़ी नर्गिसिस्तां में शब

सितम जिस पे सुरमे की तहरीर से। खिंची हाथ काफ़िर के शमशीर सी

लखौटा वह पानों का मिस्सी के साथ कि जो सामने आब आफ़ता के हो हाथ

वहां पेशवाज़ एक डांक की जगमगी सितारों को भी आंख जिस पर लगी

और एक ओढ़नी ख़ाली मुक़ैश की पड़ी चांदनी सी मह ऐश की॥

जो देखे वह अंगिया जवाहर निगार फिरे मलता मलते हाथ बेइख़्तियार

वह बारीक कुरती मिसाले हवा
अयां मूबमू जिससे तन की सफ़ा
झलक सुर्ख़ नेफ़े की उभरी हुई
गुलाबी सी गिर्द एक तह दी हुई ।।
मुग़र्रक़ ज़री का वह ग़िलवा बंद
मुसइया से ताबिन्दगी में दोचंद ।।
पड़ी पाउं में कफ़्श ज़री निगार
सितारों की जिसकी ज़मीं पर बहार
लगा पासे वह नाज़नी ताब फ़र्क़
सरापा जवाहिर के दरिया में ग़र्क़
गुंधी हुई वह नाबीब और वह बदन
वह पोशाक ओ ज़ेवर की उसपर फबन
वह छब तख़्ती ओ उसकी नज़ाकत नज़ाद
चमन ज़ार कुदरत में नख़्ले मुराद
भरी मांग मोती से जिलवा कुनां
नुमायां शुआ ए सितारा में कहकशां
वह माथे पे टीके की उसकी झलक
सहर चांद तारा की जैसी चमक ।।
हवस हो न देख उसके झूमर को फिर
कहे तू कि टीका था सब उसके सिर
वह बाले की ताबिंदगी ज़ेर गोश
जिसे देख उड़ जायें आक़िलों के होश
वह हीरे का नक़ मासवर आबोताब
वह मुखड़े से खुला मतलये आफ़ताब
वह नथ के मे पे चंपा कली की फबन
कि सूरज के आगे हो जैसी किरन
वह छाती पे इल्मास की धुकधुकी
रहे आरसे सूरज की जिसपर झुकी
वह मोती के माले लटकते हुये
रहे दिल जहां सिर पटकते हुये
वह इल्मास की हैकल लड़क खुशनुमा
तसव्वुर रहे जिसका दिल से लगा
वह भुज बंद बाज़ू के और नौरत्न
कि जो गुल से हो शाख़ ज़ेबे चमन ।।
वह पहुंची ज़मुर्रद की और दस्तबंद
नज़ाकत में थी शाख़ गुल से दो चंद
वह लालों की पाज़ेब आवेज़ादार
सदा आपके ख़ूनी हो जिसपर निसार
वह मीने के पावों में छल्ले थे गुल ।।
कि आंखों से दिल उनपे खाते थे गुल
वह बालों की बू पुक मुपुके खुलन
वह डूबा हुवा अतर में उसका तन ।।
ज़मीं से मुअत्तर हुवा ता फ़लक ।।
न माना गया उसकी बू से महक ।।
किया इस तरह से जब उसने सिंगार
हुवे मेहरो मह उसके मुंह पर निसार

फ़लक तक गई ज़ुल्फ़ की उसके धूम
लिया हाथ में ग़ुश्शा ने उसका चूम

ख़वासों ने घर को दिया इंतज़ाम ॥
तमामी के परदे लगाये तमाम ॥

बिछा फ़र्श और कर छपरखट को साफ़
मुरस्सा का उस पर उढ़ा कार गिलाफ़

वह नरगिस के दस्ते जो आफ़ाक़ में
न निकले सो लाकर चुने ताक़ में

वलायत के मेवे धरे हर तरफ़ ॥
कि लेजाते थे उनको गुल पर शरफ़

धरे लख लखे ख़ासा ऐवान में ॥
हवा होगई इतर दालान में ॥ ॥

धरी क्यारियां इक तरफ़ बे शुमार
चुनी इक तरफ़ डालियों की क़तार

अचारो मुरब्बे धरे ख़ुमख़ुम ।
वह बहार के दालान में आ बना

छपरखट के पास एक मसनद बिछा
और उस पर ज़री के तकिये लगा

वगैरें बना और रख पानदान ॥
क़रीने से उसमें धरे ढेरों पान ॥

कई इतरदाने मुरस्सा धरे ॥
अनोखी गढ़न के कई चौघड़े ॥

सिरहने मुजल्लद धरी इक किताब
ज़हूरी नज़ीरी का कुल इन्तख़ाब

धरी इक बयाज़ और रखे चमन ॥
पुर अश्आर और सौदा वो मीर हसन ॥

क़लमदान भी एक नज़ाकत भरा
क़रीने से ज़ेरे छपरखट धरा ॥

धरा इक तरफ़ गंजिफ़ा ख़ुश क़िमाश
धरी चौपड़ एक तर्फ़ को ख़ुश तराश

बिछा एक चौकी पड़ा तोरा पोश
करें सैर कर गश्त जिसे बादा नोश

सुराही वो साग़र शराबो कबाब ॥
धरा उसपे साक़ी ने कर इन्तख़ाब

वले उसको रक्खा छिपाये हुये ॥
कि छोड़े नहीं मुंह लगाये हुये ॥

कहा ख़वासापन को ख़बरदार कर
कि रखियो तो ख़वासे को तय्यार कर

यह सब कुछ हुआ जब कि आरास्ता
ख़िरामा हुवा सर्व नौ ख़ास्ता ॥

सरे शाम ले हाथ में एक छड़ी ॥
वले किन छड़ी वह कि जुगनू जड़ी

रविश पर लगी फिरने इधर उधर ॥
कि छिप जाय सूरज उसे देख कर ॥

दास्ताने बेनज़ीर के आने की और बाहम सुहबत करने की

पिला मुझको साक़ी शराबे विसाल
कि अब हिज्र से तंग है मेरा हाल ॥

गई पत्ता उड़ता था जो वह बेनज़ीर ॥
हुई शाम बसे तो छूटा असीर ॥

पर उसने भी इसका तकल्लुफ़ किया
कि एक दिन में जोड़े को धानी रंगा

तमामी की संजाफ़ भी कर दुरुस्त
बना जल्द जल्द और पहिन तंगो चुस्त

पहिन लालो याकूत के नौ रतन
वह गुल इस तरह हो के ज़ेबे चमन

फ़लक सैर पर हो शिताबी सवार
हुवा आसमां पर हवा एक बार

इकाइक जो वारिद हुवा उस जगह
कि जिस जा ख़िरामा थी वह रश्के मह

नज़र नाज़नीं की जो उसपर पड़ी
हुई जा दरख़्तों के ओझल खड़ी

किया छिप के आलम पे उसके जो ध्यां
तो देखा अजब रंग से वह जवां ॥

कि धानी है जोड़ा गले में पड़ा ॥
छिपा सब्ज़े में चांद सा है खड़ा ॥

कहूं तू कि अब चांदनी आन के
निकाला है मुंह खेत में धान के ॥

वह हुस्न और वह पोशाक और वह शबाब
ज़मुर्रद में जों जिल्वये आफ़ताब ॥

समा देख उस शोलये सब्ज़ का
हुई और जलने की दूनी हवा ॥

ख़वासें जो थीं दम बख़ुद जान कर
कहा एक हमराज़ ने आन कर ॥

कि अब किस तरफ़ इनको ले जाइये
जहां हुक्म हो जाके बिठलाइये ॥

कहा वह जो आरास्ता है मकां ॥
इधर से तो वां होके ले जा वहां ॥

कहे के बमोजिब उठा कर नक़ाब
छिपा उसको वां ला बिठाया शिताब

वह बैठा जो ख़िलवत में आ बेनज़ीर
और इधर से आई जो बद्रे मुनीर ॥

उसे देख उसने तो फिर ग़श किया
लिबास और ज़ेवर से आराइश किया

ज़िबस हौसिले ने तो तंगी सी की
हया इश्क़ ने खाना जंगी ही की ।

पकड़ हाथ मसनद पे खींचा उसे
मुहब्बत के रिश्ते से खींचा उसे ॥

लगी कहने है है मेरा छोड़ हाथ
यह गरमी है जिससे रहूँ उसके साथ॥

कहा हाय प्यारी जलाया मुझे॥
रुखाई ने तेरे सताया मुझे॥

अरे ज़ालिम इक दम तो तू बैठ जा।
ज़रा मेरे पहलू से ताकिया लगा॥

तड़पता है कबसे पड़ा मेरा दिल।
ज़रा खोल आग़ोश और मुझसे मिल

ग़रज़ आख़िरश बाद राज़ो नयाज़॥
वह मसनद पे बैठी बसद इम्तियाज़

हुवा फिर तो सहबाय गुलगूं का दौर
हुवे और ही और कुछ वां के तौर॥

हुये जब वह बदमस्त दो माहरू
लगी उनमें होने अजब गुफ़्तगू॥

कि दस्ते जो नर्गिस के थे वां हज़ार
लगे ढांपने आंख बे इख़्तियार

ख़वासें जो थीं रूबरू हट गईं॥
बहाने से हर काम के बट गईं॥

ग़रज़ रफ़्ता रफ़्ता वह मदहोश हो
छपरखट पे लेटे हम आग़ोश हो

लिया खींच उन्होंने जो पर्दाए ख़्वाब
छिपे एक जा दो मह ओ आफ़ताब।

लगी होने बेपरदा जो छेड़ छाड़
दरे हुस्न के खुल गये दो किवाड़.

लगे पीने बाहम शराबे विसाल
हुये नख़्ले उम्मेद से वह निहाल॥

लबों से मिले लब दहन से दहन
दिलों से मिले दिल बदन से बदन॥

लगी आंख से आंख खुशहाल हो
गईं हसरतें दिल की पामाल हो॥

लगी जाके छाती जो छाती के साथ
चले नाज़ो ग़मज़े के आपुस में हाथ॥

किसी की गई चोली आगे से चल
किसी की गई चीन सारी निकल

ग़मो दर्द दामन कशीदा हुये॥
वह गुल नारसीदा रसीदा हुये॥

उठे पीके बाहम शराबे उमेद॥
कोई सुर्ख़रू और कोई रू सपेद॥

छपरखट से बाहर रख अपना क़दम
निकल आये भरते मुहब्बत का दम

नशो से वह लज़्ज़त के बेहोश हो
गये बैठ मसनद पे ख़ामोश हो॥

अरक़ में इधर ग़र्क़ वह महजबीं
किये आंख नीचे उधर नाज़नीं॥

यह बैठे थे खुश होके बाहम दिगर
कि इतने में ऊधर से बागा पहर॥

पहर के वह वक्त से उठा बेनज़ीर | हुई ग़म की तसवीर बद्रे मुनीर॥
न बोली न की बात ने कुछ कहा | न देखा उधर आंख अपनी उठा॥
कहा मुझसे प्यारी न बेज़ार हो | फिर आऊंगा बोली कि मुख़्तार हो॥
रुख़सत उसके होने से वह नौजवां | गया तो चले मुंह पे आंसू रवां॥
हुवे दिल जो दोनों के आपुस में बंद | लगे हिज्र से दिल पे आने गज़ंद
बंधा फिर तो मामूल उसका मुदाम | कि हर रोज़ आना उधर वक्ते शाम
पहर रात तक हंसना और बोलना | दो कुल्ल और इक फूक को खोलना॥
कभी हिज्र से उनको होना मलूल | कभी वस्ल में बैठना फूल फूल॥

दास्तान ख़बर पाना माहरुख़ का ज़बानी देव के इश्क़ बेनज़ीर और बद्रे मुनीर से और कैद करना बेनज़ीर को

पिला जल्द साक़ी मुझे भर के जाम | कि है चर्ख़ भी दरपये इन्तिक़ाम
वह दो दिल को इक जा बिठाता नहीं | किसी का इसे वस्ल भाता नहीं॥
यह है दुश्मने वस्लो दिलसोज़े हिज्र | करे है शबे वस्ल को रोज़े हिज्र॥
जुदाई उन्हों की ख़ुश आई उसे॥ | फिर इक तनी भी सुहबत न भाई उसे
किसी देव ने दी परी को ख़बर॥ | कि माशूक़ आशिक़ हुवा ग़ैर पर
यह सुनकर वह पोला भभूका हुई | लगी कहने है यह बला क्या हुई॥
क़सम मुझको हज़रत सुलेमान की | हुई दुश्मन अब उसके मैं जान की
कहा देव से दे मुझे तू बता॥ | कहा वह किसी बाग़ में था खड़ा
कोई नाज़नीं सी थी एक उसके साथ | खड़ी थी दिये हाथ में उसके हाथ
कज़ारा उड़ा मैं जो होकर उधर॥ | वह दोनों मुझे वां पड़े थे नज़र॥
पड़ उड़ती सी उसको ख़बर सुन परी | कहा देखने पाऊं उसको ज़री॥

लगी है मेरी अबतो वह सौत हो
तेरा बाज़ू कट्टा उसे मौत हो

गरेबां को उसके करूं तार तार
वह आवे तो आगे मेरे नाबकार

भला उसका दामन है और मेरा हाथ
यही कौल ठहरा था मेरे साथ।

कि है आदमीज़ाद कुल्ल बेवफ़ा
हमारे बुजुर्गों ने सच है कहा॥

कि इतने में आया वह सुके क़मर
ग़ज़बनाक बैठी थी यह जो उधर

कहै तू कि जीते ही जी मर गया
उसे देख गुस्से में वह डर गया॥

कहा सुन तो ऐ मूज़िये मुद्दई।
बलासी वह देव उसके पीछे पड़ी

कि इस मालज़ादी को जोड़ा दिया
तुझे सैर को मैंने घोड़ा दिया॥

यह ऊपर ही ऊपर मज़े लूटना॥
अलग हमसे यों रहना और रूठना

नस्री देव के गिरफ़्तार करने की बेनज़ीर को परी के कहने से

तु चस्का दिया था न तूने यही।।
फिरा जैसे रातों को दिल शाद तू
मज़ा चाह का देख अपने ज़रा।।
तुझे जी से मारूं तो क्या है ग़रीब
कि चाहे अलम में फंसाऊं तुझे
यह कह और बुला एक परीज़ाद को
इसे खींच तां वां से लेजा शिताब।
कुवां उसमें जो है मुसीबत भरा।।
इसे जाके उस चाह में बंद कर।।
दे एक शाम खाना खिलाना उसे।।
नहीं जो सिवा इसके जो कुछ कहे
यह सुन देव उस गुल के नज़दीक आ
गिरी उस पे जो आसमानी बला
हुवा यों जो उस बख़्तवर का औज
कहा दिल यह रखता जो कुछ आज है
किया बंद फिर जाके उस चाह में
वह यूसुफ़ कुवें में हुवा जब कि बंद
खुले उस कुवें के पे काय के नसीब
मुनव्वर वह घर उसका सारा हुवा
वह अंधा पड़ा था सो रोशन हुवा।।
चले पाउं जब उसका तह पर गया
ज़मीं में समाया वह ज़ुर से आब।।
हवा वां से ऊपर गई कांप कांप।।

भला इसका बदला न लूं तो सही
करेगा दिनों को बहुत याद तू।।
झुकाती हूं कैसे कुवें रूं भला।।
चले चाहते थे यह मेरे नसीब।।
हंसा है तो ऐसा रुलाऊं तुझे।।
कहा सुनियो इसकी न फ़रयाद को।
वह सहरा जो है दहीं मेहनत का बद
कई मन का पत्थर है उसपर धरा।।
वही संग फिर उसके मुंह पर तो धर
और एक जाम पानी पिलाना उसे
यही इसका मामूल दायम रहै।।
पकड़ हाथ उस का फ़लक पर उड़ा।।
दिल उस नाज़नीं का हवा हो चला
चली आह नाले की साथ उसके फ़ौज
यहीं इश्क़ की जान मेराज है।
कुवां वह जो था क़ाफ़ की राह में।।
हुवा उससे पस्ती का रुतबा बलंद।।
कि आया वह उसमें मह दिल फ़रेब
कुवें की वह पुतली का तारा हुवा
जहां उसमें वह मांग का मह हुवा
कुवां उसके चेहरे से भर गया।।
जो सूरत आस कुवें के शिताब।।
कुंवे ने लिया संग से मुंह को ढांप।।

दिल उस नाज़नी का धड़कने लगा
जिगर टुकड़े होकर फड़कने लगा

अँधेरे उजाले न निकला था जो ॥
हुवा क़ैद आ उस अँधेरे में वो ॥

निकलने को सूझी न वां उसको राह
हुवा उसको आँखों में आलम सियाह

अँधेरे ने उसका किया दम ख़फ़ा
कि जोले सियाही किसी को दबा

फ़िग़ां की बहुत और पुकारा बहुत
सिर अपने को हर तर्फ़ मारा बहुत

पुकारा वह जिस तिस को फ़रयाद कर
न पहुंचा कोई कारवां भी उधर

न मूनिस न ग़मख़्वार उसका कोई
न था मुज़ ख़ुदा यार उसका कोई

वही चाह तारीक उसका रफ़ीक़
वही संग सिर पर बजाये शफ़ीक़

हवा भी न वां जिससे दम साज़ हो
कुवें की सुने कौन आवाज़ को

कुवां ही मुदाम उसका हमदम रहे
जो उससे सुने वह ही उससे कहे ॥

कुवां उसको पूछे वह पूछे उसे ॥
अँधेरे सिवा कुछ न सूझे उसे ॥

सियाही में जैसे हो काफ़िर का दिल
सऊबत में उससे जहन्नुम ख़िजल

न शब की सियाही न वां दिन का नूर
सदा ज़ुल्मते ग़म का उसका ज़हूर

ग़मो दर्दो उल्फ़त को खा खा जिये
लहू पानी अपना कुवे में पिये ॥

इस अँधेर को क्या लिखूं अब मैं आह
क़लम को निकलते हैं आंसू सियाह

न था वह कुवां था सितूने अलम
निशाने शबे आफ़ते दर्दो ग़म ॥

करूं मुख़्तसिर यां से इस ग़म की बात
लगा रहने उसमें वह आबेहयात ॥

नहीं मुख़्लसी सूझती अब उसे ॥
निकाले ख़ुदा देखिये कब उसे ॥

फंसा इस तरह से जो वह बेनज़ीर
पड़ी बेक़रारी में बद्रे मुनीर ॥ ॥

वह हम दो दिलों में जो होती है चाह ॥
जो होती है दिल के तईं दिल से राह

क़लक़ वां जो गुज़रा तो यां ग़म हुवा
रुका जी वहां यां ख़फ़ा दम हुवा

कई दिन न आया जो वह रश्के मह
नज़र में हुवा उसके आलम सियह

लगी कहने नज्मुल्निसा से सुवा ॥
ख़ुदा जाने उस आरख़ पर क्या हुवा

कहा उसने वो तुमको सौदा है कुछ
खुदा जाने किस ख़्याल में लग गया
वह रहि रहि के तुमको दिखाता है चाह
रुके जो कोई उससे रुक जाइये ॥
तफ़व्वुल भला कुछ निकाला करो
यह सुन चुप रही दिल में खा पेचोताब
गये इस पे जब दिन कई और भी ॥
दिवानी सी हरकतें फिरने लगी ॥
उछलने लगा जान में इज़्तिराब ॥
तपे हिज्र का दिल में करने लगी ॥
ख़लल ज़िन्दगानी से होने लगी ॥
तपे ग़म की शिद्दत से वह कांप कांप
न अगला सा हंसना न वह बोलना
जहां बैठना फिर न उठना उसे ॥
कहा गर किसी ने कि बीबी चलो
जो पूछा किसी ने कि क्या हाल है
किसी ने जो कुछ बात की बात की
कहा गर किसी ने कि कुछ खाइये
किसी ने कहा सैर कीजे ज़रा ॥
जो पानी पिलाना तो पीना उसे ॥
न खाने की सुध और न पीने का होश
चमन पर न मायल न गुल पर नज़र
न हुफ़ला उसी से सवालो जवाब

वह माशूक़ है उसको परवा है कुछ
मेरी चिढ़ है इतना भी होना फ़िदा
अबस आप को मत करो तुम तबाह
झुके आप से वह तो झुक जाइये
ज़रा आप को तुम संभाला करो
दिया कुछ न इस बात का फिर जवाब
पकड़ने लगी फिर तो कुछ तौर भी
दरख़्तों में जा जा के गिरने लगी
लगी देखने वह पुर आलूदा ख़्वाब
हुई अश्क के चश्म भरने लगी ॥
बहाने से जा जा के सोने लगी ॥
अकेली लगी रोने मुंह ढांप ढांप ॥
न खाना न पीना न लब खोलना
मुहब्बत में दिन रात घुटना उसे ॥
तो उठना उसे कहिके हां जी चलो
तो कहना यही है जो यह बात है
पे दिन की जो पूछो कहो रात की
कहा ख़ैर वह मर रहे मंगवाइये ॥
कहा सैर से दिल है मेरा भरा ॥
ग़रज़ ग़ैर के हाथ जीना उसे ॥
भरा दिल में उस के मुहब्बत का जोश
वही सामने सूरत आठों पहर ॥
सवा सबब उसके ग़म की किताब

जो आजाय कुछ ज़िक्र शेरो सख़ुन । तो पढ़ना यह दो तीन शेरें हसन ।।

ग़ज़ल

यह क्या इश्क़ आफ़त उठाने लगा । मेरे दिल को मुझ से छुड़ाने लगा ।।
मिला मेरे दिलबर को मुझ से खुल । नहीं तो मेरा दिल ठिकाने लगा ।।
गुनह चश्म ख़ूंबार का कुछ नहीं । मेरा दिल ही मुझको डुबाने लगा ।
फ़लक ने तो इतना हंसाया न था । कि जिसके एवज़ यों रुलाने लगा ।
नहीं मुझको दुश्मन से शिकवा हसन । मेरा दोस्त मुझको सताने लगा ।।

ग़ज़ल या रुबाई वो या कोई फ़र्द ।। इसी ढब से पढ़ना कि हो जिस में दर्द ।।
सो यह भी जो मज़कूर निकले कहीं । नहीं तो कुछ इसकी भी ख़्वाहिश नहीं
सबब यह कि दिल से तअल्लुक़ है सब । न हो दिल तो फिर बात भी है ग़ज़ब ।।
गया हो जब अपना ही जीउड़ा निकल । कहां की रुबाई कहां की ग़ज़ल ।।

दास्तान बद्रमुनीर के ग़मो अंदोह की और शेगुफ़ा बाद्दू के बुलाने में

गुलाबी में गुंचे के शुभको शिताब । पिला साक़ी कया केतकी की शराब ।।
पियाले में नरगिस के दे मेरी जां ।। कि देखूं मैं कैफ़ीय्यते बोस्तां ।।
हिकायत करूं एक दिन की रक़म । कि दुनिया में तोअम है शादी वो ग़म ।।
उठी सोते एक दिन वह रश्के परी ।। ज़रा जा के देखो चमन की जो सी ।।
मगर गुंचा सा कुछ खिले मेरा दिल । कि ग़म ने किया है निपट मुज़महिल ।
ज़िबस गुल से आती थी बू यार की । हवा फिर हुई उसको गुलज़ार की ।।
फिर एक दिन हुवा यह कि मुंह हाथ धो । चली उठ के दालान से सैर को ।।
ज़मुर्रुद का मोढ़ा चमन पर बिछा । वह बैठी अजब शान से दिलरुबा ।।

कि ज़ानू पे एक पाउं को धर लिया
और इक पाउं मोढ़े से लटका दिया

न पूछ उसके पाये निगारीं का हाल
ज़बाने श्ना वस्फ़ में जिसके लाल ॥

कफ़ पा और फ़िंदक से लाले को दाग़
न हो ऐसी कैफ़ीयते पाई बाग़ ॥

हिनाई कड़े और कफ़ पा का वह रंग
सुनहरी था फ़क़ जिसको हो देख दंग

जवाहिर के छल्ले भरे पोर पोर ॥
ज़री की टकी जैसी मख़मल पे तोर

ग़रज़ बस सोती उठी थी वह नाज़नीं
पड़ी थी अजब ढब से चीं ने ज़बीं ॥

ख़ुमारी वह आँखें वह अंगड़ाइयां
वह जोबन के आलम की सरताइयां

जवानी का मौसम शुरूये बहार
वह सीने से उसके कुचों का उभार

नशे में वह आहुस्त के बैठना ॥
वह छबतरफ़ी अपनी को देख ऐंठना

ख़वास एक हुक़्क़ा लिये थी खड़ी
कि लाले की पत्ती थी उसमें पड़ी ॥

वह मुशीका का हुक़्क़ा मुरस्सा का काम
मुग़र्रक़ ज़री का वह नैचा तमाम

वले एक उसपर पड़ा था जो पेच ॥
यह सब उसके आगे था गोया कि हेच

लबे नाज़ुक ऊपर वह मुंहनाल धर
निकाले थी परदे से टूटे जिगर ॥

इधर और उधर हर तरफ़ थी निगाह
किसी की कोई जैसे तकता हो राह

ख़वासें खड़ी उसके सब गिर्दो पेश
जो थीं अपने उहदे पे हाज़िर हमेश ॥

कोई मोरछल ले कोई पीकदान ॥
कोई ले चंगेर और कोई हार पान ॥

रसीली छबीली बनी तंगो चुस्त ॥
लिबास और ज़ेवर से हर एक दुरुस्त

खड़ी बीवी आसों के पे बा अदब ॥
इसी धूम से पर क़यामत ग़ज़ब ॥

वह आँखें कि करती थीं जी पर निगाह
उधर राग में आते थे सब फूलोकार

कई हमदम उसकी जो थीं माह रू
दिखाये हुये कुरसियां सू बसू ॥

बराबर बराबर इधर और उधर ॥
वह गिर्द उसके बैठी थीं वाँ एक दिगर

समा उस घड़ी का कहूं क्या मैं आह
सितारों में था जिलवागर एक माह

अजब हुस्न था बाग़ में जिलवागर
कि हर गुल की थी उसके मुंह पर नज़र

बंधा सिर पे जूड़ा पड़ी ज़र्द शाल ॥ कमर की लचक और मटकनी वह चाल
वह आबे नमक की अंगिया बनी तंगो चुस्त किनारों पे मीना बनत का दुरुस्त ॥
वह उड़ी हुई चीन पिशवाज़ की ॥ वह मसकी हुई चोली अंदाज़ की
वह मेंहदी का आलम वह तोड़े कड़े वह पाओं में सोने के दो दो कड़े ॥
चली वां से दामन उठाती हुई ॥ कड़े से कड़े को बजाती हुई ॥ ॥
अजब एक आलम था बे साख़्ता कि आलम था एक उस पे दिल बाख़्ता
कई काफ़िरें और भी दिलनिवाज़ लिये साथ साथ उसके सब अपना साज़
चलीं एक अग़माज़ और नाज़ से खड़ी वां हुईं एक अंदाज़ से ॥
ग़लीचा पर जो था फ़र्श उसके हुज़ूर अदब से वहां बैठ सां मिल के दूर ॥
हुवा हुक्म गौरी का जो बरमला लिये साज़ अपने सभों ने उठा ॥
दिया असमां पर जो नग़मा को खींच हर एक थाप में दिल लिया सब का खैंच
लगी गाने टप्पा वह इस आन से ॥ निकलने लगी जान हर तान से ।
अजब ताल पड़ती थी अंदाज़ से कि बेताल थी हर तान आवाज़ से
वह थी पिशवारी या लड़ी नूर की मुसलसल थी एक फुलझड़ी नूर की
गुलो गुंचा की तरह महबूब थी ॥ खुली और मुंदी दिल की मरग़ूब थी
ग़ज़ल का कहूं उसका मैं माजरा ॥ अजब तरह की बंध गई थी हवा ॥
वह गाने का आलम वह हुस्ने बयां वह गुलशन की खूबी वह दिन का समां
घड़ी चार दिन था को उस वक़्त था ॥ सुहाना हर एक तर्फ़ साया ढला ।
दरख़्तों का कुछ छांओं और कुछ वह धूप वह धानों की सबज़ी वह सरसों का रूप
लपेटे हुये बोस्तां पर तमाम ॥ रूपेहले सुनहले वरक़ सुब्हो शाम
वह लाले का आलम हज़ारे का रंग ॥ वह आबों के डोरे नशे का तरंग ॥
गुलाबी से हो जाना दीवारो दर ॥ दरख़्तों से आना शफ़क़ का नज़र
वह चादर का छुटना वह पानी का ज़ोर हर एक जानवर का दरख़्तों पे शोर ॥

वह मर्वे सही और आबे रवां ॥
वह उड़नी सी नौबत की धीमी सदा
वह रक्से बुतां और सुघरी अलाप
वह दिल पीसना हाथ पर धर के हाथ
नइन्सान ही क्या हो दिल इसमें बंद ॥
ग़रज़ जो खड़े थे खड़े रहि गये ॥
जो पीछे थे आगे न वह चल सके
लगे देखने आंख नरगिस उठा ॥
लगे हिलने या वज्द में सब दरख़्त ॥
दरख़्तों से गिरने लगे जानवर ॥
हुई कुमरियां घोंके से नाराज़ न
हुये नह्र से संगपाये पिघल ॥
अजब राग को भी दिया है असर
बंधा इस तरह का जो उस जा समा
बलेकिन जो कुछ दिल गयों पर गया
लगा थी ज़िबस इश्क़ का उसको तीर
बंधा उसको आशिक़ का अपने ख़याल
कहीं का कहीं ले उड़ा उसको राग
लगी कहने हैहै यह देखूं मैं सैर
वह जाने कि हो जिसके कुछ दिल को लाग
अली क्योंकि जी उसका खुश हाल हो
जिगर में अगर आह की सूल हो
दरख़्तों के आलम से क्या हो निहाल

वह मस्ती से पानी का बहना वहां
कहीं दूर से गोया पड़ती थी आ ॥
वह गोरी की तानें वह तबलों की थाप
उछलना वह दामन का ठोकर के साथ
हुवे मह्व सुनके चरिंदो परिंद ॥
अड़े जिस जगह सो अड़े रहि गये ॥
जो बैठे सो बैठे न फिर हिल सके ॥
गुलों ने दिये कान ऊधर लगा ॥
खड़े रह गये सर्व होकर करख़्त ॥
बले मिस्ल आईना दीवारो दर ॥
भरा अश्क से बुलबुलों ने चमन
पड़े सारे फ़व्वारे उसके उछल ॥
कि हो जाय पत्थर का पानी जिगर ॥
हुवा सबके दिल का अजब हाल वां
कि बिन आये हर इक वहां मर गया
लगी खींचने आह बद्रे मुनीर ॥
लगी रोने आंखों पे धरकर रुमाल ॥
हवा से हुई और दूनी वह आग ॥
न हो पास मेरे वह यादश बख़ैर ॥
कि माशूक़ बिन सब है गुलज़ार आग
कि हिज्रां का ग़म जिसके दुंबाल हो
लगे ख़ार कैसा ही गो फूल हो ।
जिसे याद ख़ूबां प्यारे की हो कमाल

करै गुल पे तो गुल पे क्या वह नज़र
जिसे अपने गुल की न होवे ख़बर॥
यह कह कर उठी वां से वह दिलरुबा
छपरखट पे जा कर गिरी मुंह छिपा
ख़ुशी का जो आलम था मातम हुवा
फ़लक का फ़लक ही वह बरहम हुवा॥
सब उठते ही बस उसके जाती रहीं
नवासे कहीं और ख़वासें कहीं
मेरी अक़्ल इस शय पे हैरान है॥
किया रब यह कैसा गुलिस्तान है
हर एक वक़्त है इसका आलम जुदा
जो चाहो कि फिर हो तो इसका नव क्या
कभी है ख़िज़ां और कभी है बहार॥
नहीं एक वतीरे पे लैलो नहार॥

दास्तान बेनज़ीर के ग़मे हिज्र से बद्रमुनीर की बेक़रारी में

[illegible] को मलाल
कि पर्दे में शब के गया आफ़ताब
शबे हिज्र की फिर अलामत हुई॥
ग़रज़ आशिक़ों पर क़यामत हुई॥
गिरी जब छपरखट पे वह रश्के हूर॥
सभों को कहा तुम रहो दूर दूर॥
अकेली वह रोने लगी ज़ार ज़ार॥
उसी अपने आलम में बेइख़्तियार
गिरे चश्म से उसके इतने गुहर॥
कि धोया उसी आब से मुंह सहर॥
सबूही जो दे साक़िये लाल फ़ाम
कि रो रो के मैं रात काटी तमाम
हुवा आफ़ताबे अलम जो तुलूअ
उदासी का होने लगा दिन शुरूअ
ज़रा आइना लेके देखा जो रंग॥
तो जो आइना रह गई वह भी दंग॥
बदन को जो देखा तो ज़ारो नज़ार॥
किसी को कोई जैसे देवे फ़िशार॥
फ़लक की तरफ़ देख और झुक कर
लगी दिल को बहलाने इधर उधर
ज़बां पर तो बातें वले दिल उदास॥
परागंदा हैरत से होशो हवास॥
न मुंह की ख़बर और न तन की ख़बर
न सिर की ख़बर ने बदन की ख़बर
अगर सिर खुला है तो कुछ ग़म नहीं
जो कुर्ती है मैली तो महरम नहीं
जो मिस्सी है दो दिन की तो है वही॥
जो कंघी नहीं है तो यों ही सही

जो सीना खुला है तो दिल चाक है।। ग़म आलूदा मुंह है तो ग़मनाक है।।
न मंज़ूर सुरमा न काजल से काम नज़र में वही तीरा बख़्ती की शाम
व लेकिन वह ख़ूबी का देखा सुभाउ कि बिगड़े से दूना हो उनका बनाउ
नहीं हुस्न की इस तरह भी कमी।। जो बिगड़ी है बैठी तो गोया बनी।।
ग़रज़ बेक़रारी है यां की अदा।। भलों को सभी कुछ लगे है भला।।
जो माथे पे चीने जबीं ग़म से है।। तो वह भी है एक मौज दरयाय में।।
वह आंसू जो रोई है बस फूट फूट जो गोया कि मोती भरे कूट कूट।।
नये ग़म से यों तमतमाये हैं गाल।। कि जों रंग लाला हो वक़्ते ज़वाल।।
गरेबान सीने पे है जो खुला।। जो गोया वह है सुब्हे इशरत फ़िज़ा।।
वह काहिश से चेहरा अगर ज़र्द है।। वो या आह होंटों पे कुछ सर्द है।।
अदा से नहीं है वह भी आलम जुदा।। कि है चांदनी और ठंडी हवा।।

दास्तान बेक़रारी बद्र मुनीर की बेनज़ीर के फ़िराक़ में और नज्मुलनिसा के तसल्ली देने में।। ।।

पिलाया किया साग़रे बेनज़ीर फंसी दामे हिज्रां में बद्रे मुनीर।।
वह हूरी जवानी और ऐसा ग़म सितम है सितम है सितम है सितम।।
जहां बैठना आह करना उसे।। बहाना नज़ाकत पे धरना उसे।।
कभी ख़ून आंखों से रो डालना।। किसी को कभी देख रो डालना।।
ख़वासों को बाला बताना उसे।। अकेली दरख़्तों में जाना उसे।।
व ले उन दरख़्तों में जिसमें वह माह से शाम छुप छुप के करता निगाह
सो वह भी पहर दिन से आ वां मुदाम उसी कुंज में बैठ करती थी शाम।।
ग़रज़ इस तरह जब महीना गुज़र।। कि वह माह मुतलक़ न आया नज़र
और उसका उधर रंग घटने लगा जिगर ख़ूं हो मिज़गां पे बटने लगा।।

लगी रहने तप ग़ाज़ बेताब में ।। लगे फ़र्क़ आने ख़ुरो ख़्वाब में ।।
मुहब्बत का सौदा सा होने लगा जनूँ तुख़्म वहशत का बोने लगा
सरकने लगा पास ना मूस ओ नंग ।। लगी अक़्ल औ इश्क़ में होने जंग ।।
ख़मोशी उठाने लगी दिल में शोर जताने लगी जात बातों भी ज़ोर ।।
यह अहवाल देख उसका दुख़्ते वज़ीर लगी ज़ल्ल पे कहने कि बद्रे मुनीर ।।
तू वह है कि सब के तईं दे वकूफ़ किधर दिल गया तेरा ऐ बेवकूफ़
मुसाफ़िर से कोई भी करता है प्रीत मसल है कि जोगी हुये किसके मीत
घड़ी चार दिन के यह हैं आशना मिला दिल को आख़िर को है जुदा
गहे आसमां गह ज़मी के हैं यह ।। जहां बैठे जा बस वहीं के हैं यह ।
तू भूली है किस बात पर ऐ बुवा ख़बर ले दिवानी तुझे क्या हुवा
सुनो जानी अपने पै जो कोई मरे जो दिल पहिले अपना भी सदक़े करे
अगर आप पर कोई शैदा न हो तो फिर चाहिये उसकी परवा न हो
वह ख़ुश होगा अपनी परी को लिये अबस उस पे बैठी हो तुम जी दिये ।
तुम्हारी उसे चाह होती अगर ।। तो अब तक वह तुमको न आता नज़र
लगी कहने तब उसको बद्रे मुनीर कि सुनती है ऐ मेरी दुख़्ते वज़ीर ।।
किसी की बदी तू न कर ऐ बहे ।। कि उसका ख़ुदा आलिमुल ग़ैब है
वह अपने दिलों से तो है नेक ज़ात हुई उस पे क्या जानिये वारदात ।।
हुवा क़ैद या आने पाया न वह ।। गये इतने दिन अब तक आया न वह
मुझे रात दिन इसका रहता है डर परी ने सुनी हो न यां की ख़बर ।।
न बांधा हो उसको किसी ग़ार में किया हो न उसके तईं क़ैद में ।।
परी ने कहीं तैश खा लाफ़ में ।। दिया हो न फेंक उसको कुह क़ाफ़ में
परिस्तान से भी निकाला न हो किसी देव के मुंह में डाला न हो ।
न मिलने के दुख उसके सब में सहे भला अपने जी से वह जीता रहे ।

यह कह हाल दिल अपना रोने लगी
गुहर आंसुओं के पिरोने लगी ॥
कई मुड़ करी मार आख़िर को लेट
छपरखट के कोने पे सिर मुंह लपेट

ख़्वाब देखना बद्रे मुनीर का बेनज़ीर को कुवें में और जो-गिन बनकर निकलना नजमुन्निसा का उसके तलाश में

मिला साक़िया जामे जम से वह मुल
कि ग़ायब का अहवाल ज़ाहिर हो कुल
किसी के तो अंजाम फ़रख़ुंदा हाल
कि आख़िर यह दुनिया है ख़्वाबो ख़याल
ज़रा आंख झपकी जो उस हाल में
तो देखा फंसा उसको जंजाल में
क़ज़ा ने दिखाया अजब उसको ख़्वाब
कि दुश्मन न देखे यह हाले ख़राब
जो देखे तो सहरा है एक लक़ो दक़
कि रुस्तम जिसे देख होजाय फ़क़
न इनसान है वां न हैवान है ॥
फ़क़त एक कफ़े दस्त मैदान है
मगर बीच में उसके है एक कुवां ॥
कि उठता है आहों का वां से धुवां ॥
कुवें का है मुंह बंद और उससे अड़ी ॥
कई लाख मन की है एक सिल पड़ी
सदा वां से आती है बद्रे मुनीर ॥
मैं चाहे ग़म में हूं चाही असीर ॥
मैं भूला नहीं तुझको ऐ मेरी जां
करूं क्या कि है मुझ पे क़ैदे गरां ॥
पर इस क़ैद में भी तेरा ध्यान है ॥
फ़क़त तेरे मिलने का अरमान है
तू अपनी जो सूरत दिखादे मुझे ॥
तू इस क़ैदे ग़म से छुड़ादे मुझे ॥
नहीं मुझको मरने से कुछ अपने डर
यह ग़म है कि तुझको न होवे ख़बर
तुझे काश इस वक़्त मैं देख लूं ॥
जियूं मैं अगर तेरे आगे मरूं ॥
वलेकिन यह है ख़ाम मेरा ख़याल
नहीं वस्ल मुमकिन और अब विसाल
कोई दम का मेहमान हूं आज कल
इसी चाह में जायगा दम निकल ॥
यह सुन नाम चले आह बेनज़ीर
जो चाहे करे बात बद्रे मुनीर ॥
यह हरगिज़ मयस्सर न आई उसे ॥
क़ज़ा ने न इसको सुनाई उसे ॥

वह मोती की सेल्ली वह तन की चमक
परी का वह हल्का सिर ऊपर धरे ॥
ज़माने को भाई जो उसकी अदा
करे गो कि तक़वीम दिल से हिसाब
वह बक और वह अबरो सियह है अगर

शबे तीरा में कह कि शाने फ़लक
कि जो शाब में कोई बनेटी करे ॥
तो इस रात पर दिन को सदके किया
कहे सुबह का में गया आफ़ताब ॥
तो दामाने उश्शाक़ होयेंगे तर

तस्वीर वज़ीरज़ादी का जोगिन बन्ना तलाश में शाहज़ादे
के सामने शाहज़ादी और ख़वासों के
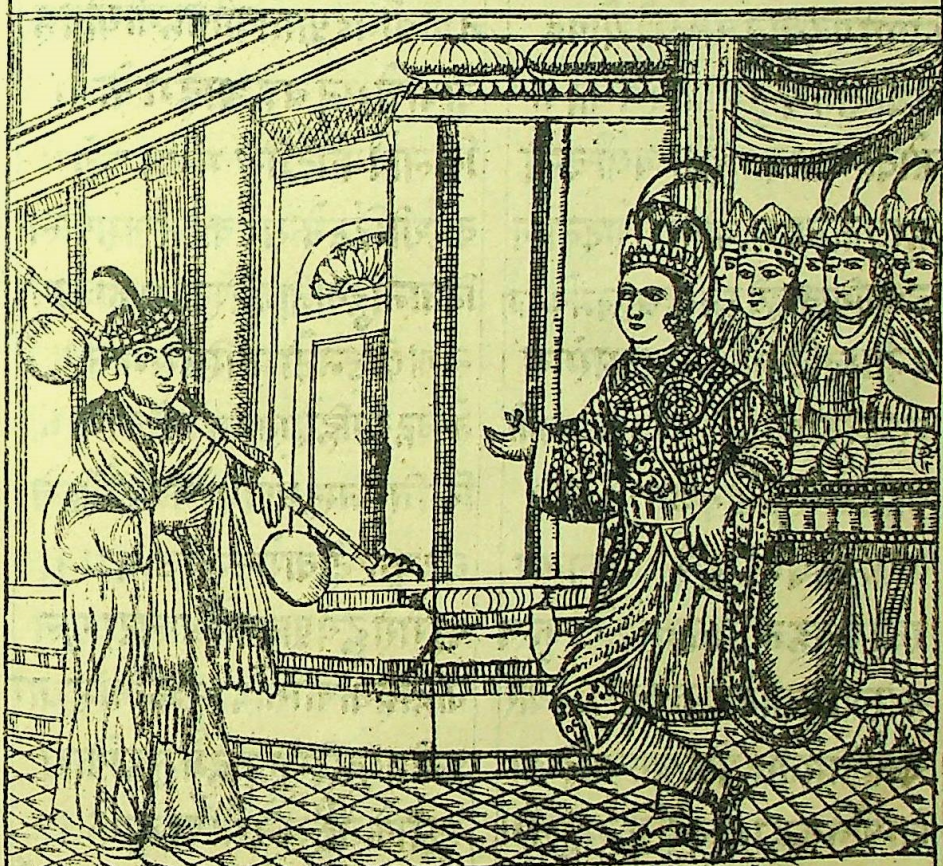
ज़मुर्रद के मुंदे वह इस आन पर ॥
वह मुंदरे वह तन उसका ख़ाकिस्तरी
उड़े सब्ज़ा औ गुल के देख उसको होश

कहूं क्या कि जैसे खुले कान पर ।
हुई हुस्न की और खेती हरी ॥
वह दोनों हुवे उसके हल्क़ा बगोश

नज़र कर सफ़ाई को उस गोश्त की ।। ज़मुर्रुद को उस गोश्त की लौ लगी
बढ़े क्यों न हरदम ज़मुर्रुद की शान जब ऐसे किसी के लगे जा के कान
वह मोती के माले वह मूंगों के हार गुलों नस्तरन को चमन में बहार
गुलाबी से वह नर्गिसे शोख़ रंग भरे जिसमें लाला के लाले के रंग
वह कपूर का खिंचा सुर्ख़ माथे पे यों पड़े नूर पर लाल का अक्स ज्यों ।।
अदा उस के देखे जो आशिक़ कभू तो रोया करे चश्म से वह लहू ।।
यह बीन उसके कांधे पे थी खुशनुमा चले जो कोई मस्त शीशा उठा ।।
दियार मुहब्बत में सहगी थी वह न थी बीन इशरत की बहंगी थी वह
न थी बीन थे कुमकुमे रंग को ।। वो था थे सबू बहू आहंग के ।।
सो वह बीन कांधे पे रख यों चली कि लावे कोई जैसे गंगाजली ।।
हर एक तार था बीन का रोदनील वह थी हिंद के राग की सलसबील
न आशिक़ हुये उसके आलम पे लोग दिवाना हुवा जोग देख उसका जोग
बनी जब कि जोगिन वह इस रंग से लगी फोड़ने दोस्त सिर संग से ।।
वह रुख़सत जो इस तरह होने लगी तो वह साहिबे ख़ाना रोने लगी ।।
वह रोरो के दो अब्र ग़म यों मिले कि जिस तरह सावन से भादों मिले
यहां तक बंधा उसके रोने का तार बहे फूट दीवारो दर एक बार ।।
खड़े थे वह जोगिन के जो गिर्द कुल वह रोरो हुये शबनम आलूदा गुल
न देखा किसी ने जो कुछ इख़्तियार कहा हक़ को सौंपा तुझे ले सिधार
चली जिस तरह पीठ अपनी दिखा इसी तरह दिखला हमें मुंह फिरा
किसी ने कहा भूल यों मत मुझे ।। ख़ुदा के तईं मैंने सौंपा तुझे ।।
कहा उसने ऐ'बेर अब तु जाती हूं मैं जो मिलता है तो उसको लाती हूं मैं
तुम्हें भी ख़ुदा को मैं सौंपा सुना ।। मेरा बख़्शना यो तुम कहा और सुना
ख़ुदा हो के चल किस्सा रोने को छोड़ चली अपने घरबार से मुंह को मोड़

न सुध बुध की ली और न मंगल की ली
लिये बीन फिरती थी सहरा नवर्द
कि शायद कोई शख़्स ऐसा मिले ॥
जहां बैठ कर वह बजाती थी बीन
बजाती वह जोगिन जहां जोगिया
उसे सुन के आता था सहरा को जो पुर
गुले नग़मा जो उससे गिरते हज़ार
कहीं हल्का हल्का कहीं लख़्त लख़्त
बजाती थी जो जो वह बनबन के बीन
नज़र जो कि पड़ती थी बूटी जड़ी ॥
न माया न सेवा था जो वह कभी ॥
यहां तक कि रहमें जो के नकूआ था
गुले नग़मये नर्कीं पे थी बहार
सुन आवाज़ की उसकी आनोधि कोह
जवानी हो सुन और उसका चले ॥
न चश्मे हो कुछ आबदीदा रहे ॥
हुवा बुलबुलो गुल का यां तक हजूम
वह सुर का था वां हर एक को मुक़ाम
चमन करते फिरते थे जंगल के तईं ॥
यह हरजा पे था उसके दम से तिलिस्म
था बो रोज़ स्स गयू़ ता मिस्ले सबा

निकल शाह से राह जंगल की ली
तने चाक चाक और रुख़ आई गर्द ॥
कि जिससे वह शैदा का शैदा मिले
जो सुन्ने को आते थे आहू थे बीन
जो वां बैठती ख़ल्क़ धूनी रमा ॥
सदा से दरख़्तों को आता ख़रोश ॥
तो लेता उन्हें अपने दामन पसार
खड़े होके गिर्द उसके सुनते दरख़्त ॥
ख़सो ख़ार सुनते थे बनबन के बीन
हर एक आलमे शोक़ में थी खड़ी
ददोद भूल गया हो पड़े थे सही ॥
वह बैठे थे कान अपने ऊधर लगा
कि सहरा के गुल उसके आगे थे ख़ार
निकलने लगी दर्द के आवाज़ कोह
कुवें के भी दिल में उठे वलवले ॥
गरेबान कर चाक दरिया बहे ॥
कि गिरती थीं वां डालियां झूम झूम
ज़बां का निकलता था हाथों से काम
बसाते थे जंगल में दंगल के तईं ॥
बंधा था उसी दम क़दम से तिलिस्म
इसी तरह फिरती थी वह नावजा

दास्तान फ़ीरोज़ शाह जिन्न के बादशाह के बेटे का आशिक़ होना जोगिन पर

कि अब है तु रुसा किये गुलइज़ार ॥
कि सहरा से अब दिल हुवा खार खार

कोई फूल सी दे गुलाबी शराब ॥
कि शाहे मलालिब को पहुंचे शिताब

वह यारु सिवा दिल को जो रास हो ॥
कि जीने की बीमार को आस हो

मुहब्बत के असबाब देखो ज़रा
कि कुदरत में उसके है क्या क्या भरा

सफ़ेदो सियह उसके हैं दिलदार
बनाया है उसने यह लैलो निहार

जहां में है अंदोह इशरत बहम ॥
कहीं सुबह रंजो कहीं शाम गम ॥

खुशी ज़माने की मशहूर है ॥
कहीं साया है और कहीं नूर है ॥

क़ज़ारा सुहाना सा एक दश्त था
कि एक शब हुवा उसका वां बिस्तर

वह थी इत्तफ़ाक़न शबे चार दह ॥
यहां से वह बैठी वहां एक मह ॥

कि थी हर तरफ़ चांदनी नूर की ॥
यही चांदनी उसको मंज़ूर थी ॥

बिछा मिरगछाले को चौसले के बीं
दुशाला संभल कर वह जुहरा जबीं

सितारा बजाने लगी शौक़ में ॥
लगी दस्तो पा मारने ज़ौक़ में ॥

सितारा यह बजने लगा उसके हाथ
कि मह ने किया दायरा लौ के साथ

बंधा उस जगह इस तरह का समा ॥
सबा भी लगी रक़्स करने वहां ॥

वह सुनसान जंगल वह नूरे क़मर ॥
वह बर्राक़ था हर तरफ़ दश्तो दर

वह उजला सा मैदां चमकती सी रेत
उगा नूर से चांद तारों का खेत ॥

दरख़्तों के पत्ते चमकते हुये ॥
ख़सो ख़ार सारे झमकते हुये ॥

दरख़्तों के साये से मह का ज़हूर
गिरे जैसे छलनी से छन छन के नूर

व या यह कि जोगिन का मुंह देखकर
हुवा नूरो साये का टुकड़े जिगर ॥

गया हाथ से बीनसुन का जो दिल
गये साया औ नूर आपुस में मिल ॥

वह सूरत ख़ुश आई जो उस हूर की
दिल अपने पे साये ने मंज़ूर की ॥
हवा बंध गई उस घड़ी इस उसूल
बसेरा गये जानवर अपना भूल
दरख़्तों से लग लग के बादे सबा
लगी वज्द में बोलने वाह वा ॥
कि दाने का आलम था वह उस घड़ी
कि थी चांदनी हर तरफ़ गश पड़ी
यहां का तो आलम था और तौर यह
तिस ऊपर मज़ा तुम सुनो और यह
कि था एक परीज़ाद फ़र्रुख़ सियर
जिन्नों के वह था बादशाह का पिसर
निहायत तरहदार सा हुस्न माल
बरस बीस इक्कीस का सिन व साल
हवा पर उड़ाये हुये अपना तख़्त
किसी तर्फ़ जाता था फ़ीरोज़ बख़्त
वह जाता था करता हुआ सैर माह
इसे देख कहती थी फ़ीरोज़ शाह
इकाइक सुनी बीन की जो सदा
वहां तख़्त ला उसने अपना रखा ॥
जो देखी तो जोगिन है एक रश्क हूर
कि चश्मे फ़लक ने न देखा यह नूर

तसवीर जिन्नों के बादशाह के बेटे की मै दो जिन्नों के
और जोगिन सामने बीन बजाती हुई ।

नज़र करके हुस्न उसका ग़श कर गया
न आपु पु के आलम में बस मर गया

यह समझा बनावट का कुछ भेस है
लगा कहने जोगीजी आदेस है ।।

पड़ा तुम पे ऐसा कहो क्या बिजोग
लिया वास्ते किसके तुमने यह जोग

किधर से तुम आये कहां जाउगे
दया अपनी हम पर भी फ़रमाउगे

वह समझी कि इसका दिल आया इधर
कि दिल भी तो रखता है दिल की ख़बर

ख़सो ख़ार है इश्क़ हुस्न आग है ।।
सदा इश्क़ और हुस्न में लाग है ।।

वले आग ही और उन में हुवा ।।
कि दोनों तरफ़ आग दी है लगा ।।

कहा हंस के जोगिन ने ऐ बालहूर
जहां से तु आया चला जा उधर ।।

कहा तब परीज़ाद ने बाऊजी ।।
बहुत गर्म है आप अल्लाह जी

न रूखे हो इतने भला जाउंगा
ज़रा बीन सुन कर चला जाउंगा

कहा हो न सोने से अपने कहो
फ़क़ीरों को छेड़ो न बैठे रहो ।।

यह दो दो ललनो पे जो बाहम हुये
इसी लुत्फ़ में यह तो बेदम हुये ।।

गया बैठ आ सामने रेत में ।।
रहा खेत यह तो उसी खेत में ।।

नज़र हुस्न पर गाह गह बीन पर
सरापा दिल उस लाबुते चीन पर

रहा तनबदन का न कुछ उसको होश
बना गुल वह जो नक़्शो पा चश्मो गोश

वह जोगिन जो थी दर्दे ग़म की असीर
हुवा ग़म में जोगिन के यह भी असीर

न सुध बुध रही ली औसान तो राह की
तब आई ज़रा सुध तो फिर आह की

बजाती रही बीन वह सुबह तलक
यह रोया किया सामने बेधड़क ।।

इधर तान पर बीन की थी बहार ।।
बंधा था उधर उसके रोने का तार

धरी अपने कांधे पे जब उसने बीन
उठी लै के अंगड़ाई गुहराजबीन ।।

परीज़ाद ने तब पकड़ उसका हाथ
बिठाना बी बिठा नरग़ पर अपने साथ

ज़मीं से उड़ा आसमां के तईं ।।
वह कितना कहा की नहीं रे नहीं ।।

न माना और उसने उड़ाया उसे ।।
परिस्तां में लाकर बिठाया उसे ।।

यह मुज़दा गया बाप पास अपने ले   कहा अर्ज़ रखता हूं मैं आपसे॥
यह योगी जो है एक साहिब कमाल   ज़रा बीन सुनिये और इनके ख़याल
बहुत आप उससे उठायेंगे हज़॥   बहुत बीन से उसके पायेंगे हज़॥
कहा उसने बाबा बहुत ख़ूब है॥   हमें ख़ास से राग अपना मरग़ूब है॥
कहा आउ जोगी जी बैठो इधर॥   करो रोशन अपने क़दम से यह घर
खुले बख़्त बेटे के और बाप के॥   सिरों पर हमारे क़दम आप के॥
बहुत उसकी ताज़ीमो तकरीम की   जगह एक पाकीज़ा रहने को दी

दास्तान फ़ीरोज़ शाह की मजलिस आराई और जोगिन के बुलाने में

दिला मुझको साक़ी मुहब्बत का जाम   कि मेहमानियों में हुवा दिन तमाम
यह जोगिन जो बैठी वियोगिन हुई॥   कि इतने में रात आई जोगिन हुई
भभूत अपने मुंह पर शफ़क़ की सी मल   रखडंडवे को मह के आब आई निकल
दिखाती हुई सोज़ दिल दूर से॥   उड़ाती हुई रात को नूर से॥
सितारों के माले गले बीच डाल॥   वह पहुंची परिस्तान में हाल हाल
हुई शब जो वह बज़्म अंजुम फ़रोज़॥   छिपा ख़ल्क़ से उसके परदे में रोज़॥
मालिक ने परिस्तां में मजलिस बना   बुलाया उसे जिसकी थी यह सना
परीज़ाद सारे हुये जमअ वां॥   कि देखें तो जोगिन का चलका समां
वह जोगिन कि सच मच थी ज़ुहरा जबीं   सो मजलिस में आई लिये अपनी बीं
बहुत मिन्नतों से बुलाया उसे॥   बड़ी इज़्ज़तों से बिठाया उसे॥
कहा हम हैं मुश्ताक़ कुछ गाइये   समा बीन का हमको दिखलाइये
कहा कुछ बजाना नहीं अपना काम   हर एक तरह लेना हमें हरि का नाम
है बेज़ार फ़ग़ाइश्तों से फ़क़ीर॥   वले क्या करें अब हुये हैं असीर

कहा योगी साहिब यह क्या बात है — करम आपका हमपे दिन रात है
जो मरज़ी हो तो तुम को तकलीफ़ दें — नहीं जिसमें राज़ी हो तुम सो करें ॥
कहा इस तरह से जो फ़रमाउगे ॥ — तो हां बंदगी ही में कुछ पाउगे ॥
यह कह उसने और बीन कांधे पे धर — यहां तक बजाई कि दीवारो दर ॥
खड़े रह गये होश खोये हुये ॥ — नज़र जो पड़े वां सो रोये हुवे ॥
गया अहले मजलिस का दिल तो पिघल — तो नैनों अश्क अश्क आके उसके निकल
हुईं बीन पर अंगुलियां यों रवां ॥ — कि हाथों से उसके हुवा दिल रवां ॥
रवानो रवां करदिया जान को ॥ — रुलाया हर एक जिन्नो इनसान को
हुवा हाल पर उसका यह कुछ तबाह — वह आशिक़ जो था उसका फ़ीरोज़ शाह
कभी सामने आके करता नज़र ॥ — कभी देखता छिपके इधर उधर
सितूं के कभी ओट में होके वह ॥ — खड़ा देखता उसको रो रो के वह
कभी इधर उधर से फिर फिर के आ — छिपे उसके मुखड़े की लेता बला
वह गो कुछ न सुनती न कहती उसे — कन अखियों से पर देख रहती उसे
नज़र उसकी जब आन पड़ती उधर — तो यह और की तर्फ़ करती नज़र
इस आनो अदा पर वह फ़ीरोज़ शाह — दिलोजां से करता था हर लहज़ा आह
अगर कोई जोगिन को करता सना — तो खा रश्क कहता कि फिर तुमको क्या
ग़रज़ थी यह सुहबत कि मैं क्या कहूं — यही दिल था उसका कि देखा करूं
बजी पहिली सुहबत में वां ऐसी बीन — कि गश खा कर गये वे जो थे नुक़्ताचीन
सराहा परीज़ाद के बाप ने ॥ — कहा की दया जोगी जी आपने ॥
इसी तरह हर शब करम कीजिये — मेरी बज़्म रश्के इरम कीजिये ॥
मुक़द्दम हमारा रिझाना करो — हमें अपना माशूक़ जाना करो
यह घर बार है आपही का तमाम — हुये आज से हम तुम्हारे गुलाम ॥
तकल्लुफ़ को मौक़ूफ़ कर दीजिये — जो कुछ तुमको दरकार हो लीजिये

कहा उसने मतलब नहीं कुछ हमें   तुम्हारा मुबारक रहे घर तुम्हें ॥
कहाँ तुम कहाँ हम भला यह जो साथ   यह थी बात सब आबो दाने के हाथ
यह कह वाँ से उट्ठी वह जोगिन इधर   दिया था जहाँ उसने रहने को घर
लगी रहने उसमें पुरी रोज़ वह ॥   समझ जी में कुछ कुछ दिलअफ़रोज़ वह
कहा अपने जी से कि सुनता है जी   न घबराइयो अपने दिल में कभी
बुबीनम कि ता चिर्ख़ ग़द्दारे जहाँ ॥   दरीं आशकारा चि दारद निहाँ ॥
ग़रज़ इस तरह उसका मामूल था   कि उस शाह परियों की ख़िदमत में जा
यह रात तक हँसती और बोलती   हरएक बात में क़ंद थी घोलती
बजाने में सब को रिझाती थी वह   पहर के बजे घर में आती थी वह ॥
चले क्या कहूँ हाल फ़ीरोज़ शाह   कि थी दिन बदन उसकी हालत तबाह
न दुनिया की उसको न दीं की ख़बर   इसी की तलब में था शामो सहर ॥
उसी शमअ के गिर्द फिरना उसे ॥   पतंगे के मानिंद मिरना उसे ॥
बजाने से हर काम के रोज़ो शब ॥   कहीं काटती उसको औक़ात सब
इसी तरह औक़ात खोना उसे ॥   सदा बीन सुन सुन के रोना उसे
वह जोगिन भी थी सौ तरह की अदा   हरएक तान में उसको लेती लुभा
चले कुछ कभी पास में कुछ तलब   तो आशिक़ पे ग़ुस्सा वह करती ग़ज़ब
कभी ख़ुश किया और किया गह उदास   कभी दूर बैठी कभी उसके पास ॥
किया उसने परदे में जब कुछ सवाल   दिवाना किया उसको बातों में डाल
कभी तीखी नज़रों से घायल किया   कभी मीठी बातों से मायल किया
कभी टेढ़ी नज़रों से मारा उसे ॥   कभी सीधे दिल से पुकारा उसे
कभी हँस के देखा ज़रा ख़ुश किया   कभी हो के ग़मगीन नाख़ुश किया
कभी मुँह छिपाया दिखाया कभी   कभी मार डाला जिलाया कभी
लटों में कभी दिल को लटका लिया   कभी आप बातों के झिड़का दिया

वह हरचंद आँखें दिखाती रही ॥ पै नज़रों से दिल को लुभाती रही ॥
बिचारा परीज़ाद वह सादा दिल यहाँ से यह इनसान की मुत्तसिल
इसी तरह मुद्दत गई जब उसे ॥ वहीं गर्मियें दूयुक की लपट उसे ॥
न मुँह पर वह आलम रहा और न नूर कई दिन में दिल हो गया चूर चूर ॥
जिगर खूँ हो आँखों से आया निकल गया दिल सब अंदर ही अंदर पिघल
यह दी घर दये दिल से जी ने सदा ॥ कि है सब्र की अपने बस इन्तिहा
जो कहता है उससे तो कह हाल दिल कि अब तंग है अपना अहवाल दिल
सँभलता है अब भी तो मुश्किल सँभल नहीं कोई इसमें चला मैं निकल
भला कर तो अब दस्त अफ़सोस को पड़ा रह लिये नंगो नामूस को ॥
यह सुन जी का पैग़ाम मजबूर हो ॥ कहा अपने नज़दीक को दूर हो ॥
बला से अगर आन रहती नहीं ॥ कि अब बिन कहे जान रहती नहीं
ग़रज़ एक दिन बात यह ठान कर लगा घात पर अपने वह आन कर
न था उस घड़ी कोई इधर उधर ॥ अकेली पड़ी उसको जोगिन नज़र
अकेली उसे देख हो बेक़रार ॥ गिरा पाँउ पर उसके बेइख़्तियार
गिरा इस तरह से क़दम पर जो वह तो कहने लगी मुस्करा उसको वह
कि है आज यह क्या ख़िलाफ़े क़यास गिरा तू जो नातूँ हो के क्यों बेहवास
किसी ने तेरा दिल सताया कहीं व या जी को तेरे लुभाया कहीं ॥
मेरे देखने से अज़ीयत हुई ॥ ॥ कि मेहमानियों की मुसीबत हुई ।
फ़क़ीरों से इतना न हो तू ख़फ़ा ॥ चले हम भला जा तेरा हो भला ॥
अज़ीयत मगर हमसे पाता है तू ॥ कि अब पाउँ पड़ पड़ उठाता है तू ॥
लगा कहने रो रो के फ़ीरोज़शाह कि बस बस यही तो कहोगी न वाह ॥
तुम्हारी सम भने तो मारा हमें यह बातें नहीं अब गवारा हमें ॥
सताये हुये को सताती हो क्या ॥ जले दिल को नाहक़ जलाती हो क्या

हुई तुम न वाक़िफ़ मेरे हाल से ॥ फ़िदा मैं हूं जान और माल से ॥
तुम अपना सा मुझको समझने रहे भला तुमको अब यां कोई क्या कहे
तुम ऐसी ही बेरहम बेदर्द हो ॥ ग़रज़ अपने आलम में तुम फ़र्द हो
कहा उसने ले कर शिताब अपना हाथ कि तू क्यों गिरा सिर को पावों पे [illegible]
कहा तब परीज़ाद ने मेरी जां ॥ कहां तक करूं राज़ दिल को निहां
भला हिज्र में कब तलक हूं मलूल ग़ुलामी में अपने मुझे कर क़बूल
लगी हंस के कहने कि टुक ग़ौर से जो मेरी कहानी सुने ग़ौर से ॥
मतालिब अगर मेरे बर लाये तू ॥ तो शायद मुराद अपनी भी पाये तू
कहा उसने फिर जल्द फ़रमाइये जो कुछ आपसे हो बजा लाइये
कहा उसने यह है मेरी दास्तां ॥ कि शहरे सरन्दीप है एक मकां
मलिक एक वां का है मसऊद शाह कि बेटी है एक उसके मानिंद माह
जहां में है बद्रे मुनीर उसका नाम मैं रहती हूं ख़िदमत में उसके मुदाम
बनाया है उसने अलग एक बाग़ कि फ़िरदौस का है वह चश्मो चराग़
जुदा बाप से थी वह उसजा मुक़ीम सदा सैर करती थी बेख़ौफ़ो बीम
मैं नजमुलनिसा उसकी दुख़्ते वज़ीर हमेशा से हमराज़ थी और मुशीर
जुदा एक दम उससे होती न थी ॥ सुलाये बग़ैर उसके सोती न थी
ख़ुशी से सरोकार ग़म से फ़राग़ ॥ बरंगे चमन रहती थी बाग़ बाग़ ॥
किसी तरह का ग़म न था ध्यान में तरक़्क़ी ख़ुशी की थी हर आन में
हुई एक दिन यह अजब वारदात कि एक पारस वारिद हुवा एक रात ।
कहां तक कहूं उसका क़िस्सा है दूर न था आदमी नूर का था ज़हूर ॥
गया उसपे उस शाहज़ादी का दिल गये एक दोनों कहूं आपुस में मिल
चले आशिक़ उस पर थी कोई परी मुहब्बत में थी उसके वह भी भरी
कहीं वां के आने की सुन कर ख़बर ख़ुदा जाने फेंका है उसको किधर

वो या क़ैद में उसको डाला कहीं
कि मुद्दत से उसकी ख़बर कुछ नहीं

सो मैं खोज में उसके जोगिन हुई
यहां तक तो पहुंची बिरोगन हुई

परीज़ाद आपुस में तुम एक हो
अगर तुम ज़रा खोज उसका करो

तो शायद मदद से तुम्हारी मिले
तो फिर आर्ज़ू भी हमारी मिले ॥

दिल आबाद हो जी को आराम हो
तुम्हारा भी इस काम में काम हो

कहा तब परीज़ाद ने हाय ल्ला ॥
अंगूठा दिखाया कि इतरा न जा ॥

कहा फिर यही कुछ नहीं मह जबीं
लगी हंसके कहने नहीं रे नहीं ॥

यह सुन क़ौम को अपनी उसने बुला
तक़य्युद से सबको बुलाकर कहा

कि जाओ तो ढूंढो करो मत कमी
कि है एक परिस्तां में क़ैद आदमी

जो तुम में से लावेगा उसकी ख़बर
जवाहिर के दूंगा लगा उसके पर

यह सुन अपने सरदार का यह कलाम
तजस्सुस में फिरने लगे मुल्को शाम

ज़ुबारक का नागहां वां गुज़र ॥
जहां क़ैद में था वह ख़स्ता जिगर

वह रोता जो था नाला ओ आह से
तो कुछ उसको आई सदा चाह से

कहा कुछ तो मिलता है यांसे सुराग़
कि आती है यां बूए गुलज़ारे बाग़

वह चौकी के जो देव थे जाबजा ॥
लगा पूछने किसकी है यह सदा

कहा माहरुख़ का है क़ैदी यहां
कुएं में तड़पता है एक नौजवां ॥

वह तहक़ीक़ कर और ले वां का भेद
उड़ा शाह को अपने देवे सफ़ेद ॥

किया जाके फ़ीरोज़ शाह को सलाम
सुन आया जो कुछ था सुनाया कलाम

कहा मेरा मुजरा है अब लाइये ॥
जो देने कहा है सो दिलवाइये

यह मामूल था वां के इन आम का
जवाहिर के उसके दिये पर लगा

दास्तान पैग़ाम भेजने में फ़ीरोज़ शाह के माहरुख़ को

यह भेजा फिर उस माहरुख़ को पयाम
कि क्यों ज़ीस्त करती है अपनी हराम

बनी आदमी को तु चोरी से ला ॥
बिठाती है घर में तू आशुफ़्ता

तेरे बाप को गर लिखूं तेरा हाल
तो क्या हाल हो तेरा फिर ऐ छिनाल

कनीज़ अपनी रखती नहीं जान को
यही है कि फूकूं परिस्तान को ॥

तेरा रंग ग़ैरत से उड़ता नहीं ॥
तुझे क्या परीज़ाद मुड़ता नहीं

है मारा गई भूल ख़ौफ़ो ख़तर
लगी रखने इन्सान पर तू नज़र

भला चाहती है तो उसको निकाल
कुवें में जिसे तूने रक्खा है डाल ॥

और इसकी क़सम खा कि फिर अब कहीं
लिया नाम उसका तो फिर तू नहीं

गया माहरुख़ को यह फ़रमान जब
हुई ख़ौफ़ से वह परेशान तब ॥

कहा तुझसे तकसीर अब तो हुई
कहो उसको ले जाय यां से कोई

अगर अब मैं लाऊं उसके कभी
तो फिर फूंक दीजो मुझे तुम तभी

पर इतना यह अहसान मुझपर करो
कि इसका परिस्तां में चर्चा न हो

मेरे बाप को फिर न हो यह ख़बर
कि फिर मैं न देखूं कोई उधर ॥

यह सुनकर जवाब उसका फ़ीरोज़ शाह
चला अपने घर से जहां था वह चाह

सरे चाह पर जब वह पहुंचा रफ़ीक़
कहा उनको थे वह जो उसके शफ़ीक़

कि यह संग उखड़े यहां से हिले ॥
किसी जा हो कानों से पत्थर टले ॥

वह पत्थर जो था कोह सा सरे राह
दिया फेंक वां से उसे ज्यों परे काह

वह चाह ऐसा सरका जो उस चाह से
तो एक नूर चमका यूं वे माह से ॥

अंधेरे से उस चाह के उसका तन ॥
नज़र यों पड़ा जैसे काले का मन

वह मन डाले उसमें पड़ा था जवां ॥
कहा उस परीज़ाद ने सब को हां ॥

निकालो अमानत इसे इस नमत ॥
कि लेते हैं बुन्बुक से जिस नमत

तुम्हें है इत्तला इसकी अदब है ज़रूर
समझियो इसे अपनी पुतली का नूर

दास्तान कुवें से निकलने में बेनज़ीर के ॥

क़दह भर के ला साक़िये बेतमीज़
कुवें से निकलता है यूसुफ़ अज़ीज़

गये दिन ख़िज़ां के और आई बहार
मये लालागूं से दिखा लालाज़ार

गुलाबी झमकती पिलादे मुझे ॥
समां कोई ऐसा दिखादे मुझे ॥

कि वह माहनख़शाब कुवें से निकल
मनाज़िल को अपने फिरे बरमहल

कोई देव था वां सिकंदर निज़ाद
कुवें में उतर कर बहसबे मुराद ॥

अलग यों ले आया कुवें से निकाल
कि फ़व्वारा जों आप को दे उछाल

ले आया वह जों रिश्तः सौ घात से
निकाल आवे है वों को ज़ुल्मात से

हुवे मस्त उस नाज़ बूं से वह कुल
कि निकला वह संबुल से मानिंद गुल

अंधेरे से निकला वह रौशन बयां
कि हर्फ़ों से जों होवें मानी अयां ॥

वह जीता जो निकला वले इस तरह
कि बीमार हो नज़अ में जिस तरह

ज़िबस ऊपर आने का था उसको ग़म
कहे तू कि भरता था ऊपर का दम

ज़मीं ख़ाक तन पर बरंगे ज़मीं ॥
गढ़ा जैसे निकले है पुतला कहीं

न आरिज़ में ताक़त न तन में तवां ॥
कि जों ख़ुश्क होवे रगे बोस्तां

वह तन सुर्ख़ जो था सो पीला हुवा
वह जोड़ा जो था सब्ज़ नीला हुवा

वह सिर में जो थे उसके संबुल से बाल
हुवे लाग़री से बदन के व बाल

फ़क़त पोस्त बाक़ी था और उस्तख़्वां
न था ख़ून का रंग भी दरमियां ॥

बदन से रगों की थी इस ढब नमूद ॥
कि उलझी हो जों रग़मा ने कबूद ॥

बदन ख़ुश्क हो ज़र्द इस तरह था वह गुल
ख़िज़ां दीदा हो जिस तरह बर्गे गुल

वह नाख़ुन जो थे उसके मिस्ले हिलाल
सो वह हो गये बढ़ के बद्रे कमाल ॥

यह देखा जो अहवाल उसका तबाह
तो रोता हुवा जल्द फ़ीरोज़ शाह ॥

लिटा नाक़ पर अपने उसको वहां
ले आया वह बैठी थी जोगिन जहां

तख़्तपरी कुवें से निकलवाना बेनज़ीर का बहुक्म शाहज़ादी [illegible] हुई
वज़ीरज़ादी नज्मुलनिसा

रखा तख़्त एक जा पे उसका छिपा
चल अब तो कि मैं उसको ला थकूं
दिवानी थी अज़ बस वह उस नाज़ की
कहा चल कहां है बता तू मुझे ॥
कहा शाह के च लियो ज़रा थम रहो
यह कह और ले हाथ में उसका हाथ
गया आप उस तख़्त पर बैठ और ॥
जिसे ढूंढ़ती थी सो यह है वही ॥
यह कह और उस तख़्त के पास आ
कि इस तख़्त के गिर्द एक दम फिरूं
कहा उसने हंस कर भला देख तो

कहा फिर यह जाकर कि नज्मुलनिसा
यह सुनते ही घबरा के बोली कहां
न सिर की रही सुध न कुछ पाउं की
ज़रा उसकी सूरत बता तू मुझे ॥
कि शादी बड़ी है कहीं ग़म न हो
ले आया वह जोगिन को वां तक साथ
दिखाया उसे और कहा कर सु ग़ौर
कहा हां रे हां यह वही है वही ॥
कहा ऐ परीज़ाद तू उठ ज़रा ॥
बलायें मैं दिल खोल कर इसकी लूं
तु इस बात पर मेरे रुक के न हो ॥

कहा वां रे ग़मसे इफ़ाक़त नहीं ॥
अरी क्या करूं मुझमें ताक़त नहीं

बला ने लगी लेने नज्मुलनिसा ॥
लगी गिर्द फिरने बरंगे सबा ॥

उसे शाहज़ादी का था हाल याद
जो देखा तो यां उससे कुछ है ज़ियाद

न घर की वह रौनक़ न उसका वह हाल
गुल्लों से लगा दिल तलक पायमाल

पड़े सारे वेदाम्न दीवारो दर ॥
महल को जो देखा तो टूटा सा घर

ख़वासें जो थीं पास वह नाज़नीं
सो मैली कुचैली कहीं की कहीं

न चोटी गुंधी और न कंघी दुरुस्त
जो चालाक थी बन गई वह भी सुस्त

हरएक अपने आलम में देखा तो दंग
उड़ा रंग चहरे का मिस्ले पतंग ॥

न आपुस की चुहलें न वह चह चहे
न गाना बजाना न वह क़हक़हे ॥

ग़म आलूदा हरएक ज़ारो नज़ार
न आराम दिल को न दिल को क़रार

जो बैठी तो रोना जो उट्ठी तो ग़म ॥
ग़रज़ बैठने उठने उसपर सितम ॥

चमन सारे वीरान से हैं पड़े ॥
शजर गुल के एक झाड़ से हैं खड़े

जो खुद है तो हैरान बीमार सी ॥
कि जो ज़र्द शोशो की है आरसी

न ताबो तवां और न होशो हवास
ज़ईफ़ो नहीफ़ो परेशां उदास ॥

यह देख उसका अहवाल नज्मुलनिसा
जली शमअ की तरह आंसू बहा

वलेकिन महल में पड़ी जब यह धूम
किया मिस्ल परवाना उसपर हुजूम

सुनी एकने एकसे यह ख़बर ॥
मुबारक सलामत हुई एक दिगर

कोई गुंचा की तरह खिलने लगी
कोई दौड़ कर उससे मिलने लगी

टके कोई सदक़े के लाने लगी ॥
कोई सिर से पोटी छुवाने लगी

कोई आई बाहर से घर से कोई ॥
इधर से कोई और उधर से कोई ॥

हक़ीक़त लगी पूछने आ कोई
लगी करने आपुस में चरचा कोई

हुवा सिर पे उसके ज़िबस इज़्दहाम
लगी करने घबरा के सबको सलाम

कहा बीबियो कल कहूंगी मैं हाल
कि अब राह की मांदगी है कमाल

वह बोली कि जब कुछ हुआ वां तरह
कहा शाहज़ादी तु आती नहीं ॥
चलो चलके आराम टुक कीजिये
गई जब कि ख़िल्वत में बद्रे मुनीर
यह सुन एक हमजोली ने ग़म्ज़ा कराई
तबस्सुम से पूछा कि सच है यह
कहा मुझ को सौगंद इस जान की
निशानी सो खूबी को खूब एक यक
कहा क्यों कि लाई कहा जिस तरह
तेरा बेनज़ीर अब छुड़ा लाई हूं ॥
कहा फिर वह दोनों कहां हैं कहा
अजब वक़्त में मैं हुई थी जुदा ॥
मगर एक यह आ पड़ी बेबसी ॥
सो अब एक को तो ले आती हूं मैं ॥
यह सुन शाहज़ादी हंसी खिलखिला
अरी कहती तू बड़ी क़ाह है ॥
चल अब चोचले बस ज़ियादा न कर
कहा फिर परीज़ाद के रूब रू ॥
कहा हम तो ऐसा दिवाना नहीं
अगर दिल में कुछ तेरे वसवास है
ज़रा पूछ लीजी तो इस बात को
यह सुन कर शिताबी गई वह निगार
छिपाये हुये ला बिठाया वहां ॥

तो फिर देके जमुलनिया की तरह ॥
इधर अपनी तशरीफ़ लाती नहीं
कुछ एक तुमसे कहना है सुन लीजिये
कहा मैं ले आई तेरा बेनज़ीर ॥
कहै तू कि हैरत में आ मर गई ॥
क्या छेड़ने को मेरे कुछ है यह ॥
ग़लत कहने वालों में कुर्बान की
नहीं मुंह पे कह बैठती बे धड़क ।
वह सब कह दिया हाल था जिस तरह
और एक और बेधवा ड़ा लाई हूं
दरख़्तों में उनको रखा है छिपा ॥
कि दिलबर को तेरे दिये ला मिला
कि मैं तेरे ख़ातिर बला में फंसी ॥
हवा दूसरे को बताती हूं मैं ॥॥
कहा क्यों उड़ाती है झुठलीना
कहीं तू है अस्ल कहीं ग़ठ्ठे है ॥
उन्हें जाके जल्दी ले आतू इधर ॥
बग़ैर अब किसी के रही होगी तू ॥
वह इस बात को क्या कहेगा नहीं
नहीं दूर वह भी तेरे पास है ॥
कि वह रू ब रू उसके हो या नहो
लिया जाके आहिस्ता उनको पुकार
वह ख़िल्वत का जो था कहीं भी मकां

फिर उससे यह पूछा कि ऐ बेनज़ीर — कहाँ है तू चली आय बद्रे मुनीर ॥
कहा कैसे है तुम के सूखे चमन — छिपे है कहाँ भाई से भी बहिन ॥
मेरा जान ओ माल उसपे कुर्बान है — कि उसके सबब से मेरी जान है ॥
मेरा यह तो हमदम है दिनरात का — मुझे इससे परदा है किस बात का

दास्तान बेनज़ीर और बद्रमुनीर के मिलने की और उसके बाप को ब्याह का रुक़्क़ा लिखने में ॥

से मुँह से साक़ी मिला दे शराब ॥ — कि मिलते हैं बाहम मह ओ आफ़ताब
यह सुन सुन के बातें वह परदानशीं — चली आई वाँ नाज़ से नाज़नीं ॥
हया से फिर आकर जो बैठी वह पास — फिर आये गये उसके होश ओ हवास
नज़र से नज़र जो मिली एक बार ॥ — किये चश्म ने लाल ओ गौहर निसार
इधर चश्म खूनी इधर चश्म नम — उसे इसका गम और इसे उसका गम
न वह रंग उसका न वह उसका हाल — तने ज़र्द ज़र्द और रुख़े लाल लाल
वह हम वह खिज़ाँ दीदा गुलज़ार से — मिले जैसे बीमार बीमार से ॥ ॥
जो सुहबत आपुस में उस दम हुई — कि ऐसी भी सुहबत बहुत कम हुई
वह जमुल्ला जो और वह फ़ीरोज़शाह — हया से किये अपनी नीची निगाह ॥
सीने के मुहब्बत बहाने लगे ॥ — इस अहवाल पर है फ़र्खाने लगे ॥
और एक तर्फ़ को शाहज़ादा निढाल — लगा रोने आंखों पे रखकर रूमाल
वह मन रूह दिल थी जो बद्रेमुनीर — लगी खींचने अपनी आहों के तीर
किया मुँह को उस तर्फ़ से नाज़नीं — लगी करने तर दामनो आस्तीं ॥
पड़ी गम की बातें जो आदरमियाँ — यह रोई कि लग लग गई हिचकियाँ
ग़रज़ देर तक मिलके रोते रहे ॥ — जुदाई के दागों को धोते रहे ॥

रुख़े ज़र्द पर अश्क गुलगूं बहा
बहारो ख़िज़ाँ को किया एक जा
कलेजों पे जो दाग़ थे बेशुमार ॥
सो आँखों से उनके दिखाई बहार
फिर आख़िर को तम्सील निसा वह शरीर
लगी कहने सुनती है बद्रे मुनीर ॥
किया चाहती है तु अब कहूं क्या
ज़ियादा न बस अपनी उल्फ़त जता
मगर तेरे ख़ातिर यह रोया है कम
कि तू और रोने के देती है ग़म ॥
ज़रा तन में आने दे इस के तवां ॥
अभी इसको रोने की ताक़त कहां
यह मुरदा सा लाई हूं मैं इस लिये
कि देखे से तेरे ये ताज़ा हो जिये ॥
वहां मैंने इसकी नहीं की दवा ॥
कि है ख़ाना ये यार दारुश्शफ़ा ॥
ले आई हूं इसको मुहब्बत की धुन
जिया है फ़क़त तेरे मिलने की सुन
इसे वस्ल की अपनी दारू पिला
किसी तरह इस नीमजां को जिला ॥
बस कुछ ख़ुशी की करो गुफ़्तगू
ख़ुदा फिर न तुम को रुलाये कभू
नहीं ख़ुश तुमा पास आये हुये
रहे दो जने मुंह उठाये हुये ॥
यह सुन हंस पड़े सब वह आपुस में मिल
पड़े जिस तरह फूल गुलशन में खिल
बहम फिर तो होने लगे इस्मल्लान
उपजने लगे दिल से रशो निशान
शब आधी गई फिर तो ख़ासा मंगा
तकल्लुफ़ से हर एक के आगे धरा
अजब चुहल से सबने आपुस में मिल
किया नोश ख़ाहिशे तमन्नाये दिल
फिर आख़िर को दो दो जुदा हो गये
अलग ख़ाबगाहों में जा सो गये ॥
उठाये थे जो जो के रंजो मलाल ॥
हुये उस मज़े में वह ख़ाबो ख़याल
अलग हो के लेटी जो वह माहरू ॥
हुई लेटे लेटे अजब गुफ़्तगू
वह गुज़रा हुवा याद कर करके हाल
लगे रोने आँखों पे धर कर रुमाल
कहा शाहज़ादे ने अहवाल सब
कुवें में जो गुज़रा था रंजो तअब ॥
कियों मैं अंधेरे में रोया किया
कुवें में तन अपना डुबोया किया
न पहुंचा कोई अपना फ़रयाद रस
तड़पता रहा दिल बरंगे जरस ॥

वह तारीक ख़ाना मेरा घर रहा । सदा मेरी छाती पे पत्थर रहा
मुहब्बत ने यह चाशनी और दी । कि मेरे तईं जीते जी गोर दी ॥
ज़मीं से निकलने की कब आस थी । फ़लक के मुझे हाथ से यास थी ॥
अजब तरह से ज़ीस्त करता रहा । तेरी जान से दूर मरता रहा ॥
ख़ुदा ही ने तुझ से मिलाया मुझे । उठा क़ब्र से फिर जिलाया मुझे
दिया आह नादीने रो रो जवाब । कि मैंने भी एक ख़्वाब यह देखा था ख़्वाब
तेरे दाग़ की दिल में जो बू गई ॥ मैं एक रात रोती हुई सो गई ॥
तो क्या देखती हूं कि सहरा है एक । और उस दश्त बर में कुवां सा है एक
सदा वां से आती है बद्रे मुनीर ॥ इधर आ कि यां क़ैद है बेनज़ीर
मैं हरचंद चाहा करूं तुझ से बात । वली की गई वां न कुछ मुझ से बात
मेरी जान गो उस तरफ़ ढल गई ॥ उसी दम मेरी आंख फिर खुल गई
अजब उस घड़ी मुझ पे गुज़रा क़लक़ । कि दिल और जिगर हो गया मेरा शक़
उसी दिन से यह हाल पहुंचा मेरा । कि मरती रही नाम ले ले तेरा ॥
न देता था गो कोई तेरी ख़बर ॥ वले था तेरे ग़म से दिल को असर ॥
गुज़रता था वां तुझ पे जो सुबह शाम । वह अंधेर था मुझ पे रोशन तमाम
यह कहती मैं किससे यह दर्द निहां । ख़ावो रोज़ जलती थी मैं शमअ सा
अजब तरह से ज़ीस्त करती थी मैं । कि उस ज़ीस्त करने से मरती थी मैं
उसी ग़म में रहती थी लैलो नहार । कि क्योंकर मिलावेगा परवरदिगार
मेरी [illegible] पर रो के नज्मुलनिसा । गई इस तरह हाल अपना बना ॥
फिर आगे तो मालूम है तुमको सब । कि हम तुम मिले फिर उसी के सबब
यह आपुस में कह हाल दिल रो उठे । वह कहने को सोये थे बस सो उठे ॥
जो मिलते हैं बिछुड़े हुवे एक जा । उन्हें नींद बातों में आती है क्या ॥
परीज़ाद नज्मुलनिसा वां जुदे ॥ अलग अपनी बातों में मशग़ूल थे

वह पाजामा ये सब्ज़ कमख़्वाब और । इफ्हा बनारस का सूरज के तोर ॥
जवाहिर सजा अपने मौक़े से कुल । तरफ़ शाह में हो जैसे नक़दीर गुल
वह कंघी खिंची और अबरू खिंचे । हर एक आन में अपने हर सू खिंचे
रुखज़ूरों वह चोटी ज़री का मुबाफ़ । कि जो दूद के बाद शोला हो साफ़
अरूसाना उसने किया जो लिबास । तो आने लगी ख़ूब को उसमें बास
बनी जब कि इस रंग बह रूक के हूर । चली आई फ़ीरोज़शाह के हुज़ूर
परीज़ाद तो क़त्ल ही हो गया ॥ । कहै तू कोई जान से खो गया ॥
हया से वह की बात नहि कुछ कहा । कलेजों से क़ुरबान उसपर रहा ॥
वह बनठन के आपुस में रहने लगे । वह महराज़ दिल अपने कहने लगे
ख़ुशी से हुवे बस कि मसरूर दिल । लगे सब ज़ियां पीने आपुस में मिल
ज़ियाफ़त वह मिल मिल के खाने लगे । वह ग़म खाके उनके ठिकाने लगे
छिपे ऐश इशरत वह करते रहे । वै गैरों के चरचे से डरते रहे ॥
अगरचे हर एक वस्ल से शाद था । वले हिज्र का ग़म उन्हें याद था
यह ठहरा के निकाले वह दो माहरू । कि इस बात को कीजिये एक सू
ग़ज़ब है जो योंही दोबारा रहें ॥ । छिपे कब तलक आशकारा रहें
सही है यह तकलीफ़ आराम को । यह नाकामियां लेना किस काम को
नसीब इस तरह से जो यारी करें । अया क्यों न हम ख़्वास्तगारी करें
जब आपुस में यह मशविरे हो गये । इधर और उधर मिल के दो दो गये
वह नजमुन्निसा और वह बद्रेमुनीर । कुछ एक कर बहाना वह दोनों शरीर
गई घर में फिर जाके मां बाप के । कि देखेंगे हम अब क़दम आपके
निकल बेनज़ीर और फ़ीरोज़शाह । किसी शाह में सब के फ़ौजो सिपाह
कर असबाब सब सल्तनत का दुरुस्त । फिर आये उसी जाये बालाक चुस्त
वहां का जो था शाह अंजुमफ़िशां शाह ॥ । जिसे लोग कहते थे मसऊद शाह

नामा भेजना बेनज़ीर का मसऊद शाह को ख़्वास्तगारी में बद्रमुनीर के ॥

किया नामा ये एक उसको रक़म | कि ए शाह शाहाने बे फ़र्रुख़ शम
फ़रेदूं मिसालो सिकंदर नज़ाद | मुरादे जहां जो जहाने मुराद
जहाने शुजाअत ज़माने करम | दिले रुस्तमे गुर्दे हातिम हुमम
मैं वारिद हूं यां एक मेहमां ग़रीब | ले आये हैं मुझको मेरे यां नसीब
नवाज़िश से अपने करम कीजये | गुलामी में अपने मुझे लीजये
हमें शाह से है राहो रसमे शाहां ॥ | किया बिस्तर यों हीं हैं कारे जहां
जहां पर है सो पूछन कि मैं माह हूं | मलिकज़ादा ए ईरां मलिक शाह हूं
हर एक मुझसे वाक़िफ़ कहै वा नज़ीर | कि है नाम मेरा शाह बेनज़ीर ॥
बयां सब किया माज़ी ये हाल का | ग़रज़ मुल्क लिखा फ़ौजो अमवाल का
जिताकर बहुत इज़्ज़ और इनकिसार | लिखा यह भी एक हर्फ़ आख़िर को बार
कि जैसो वे वा अक़्ल पुरशे शरीफ़ | वह है अपने मज़हब में अपना हरीफ़
अगर मानियें ख़ैर तो मानिये ॥ | नहीं आप आया हमें जानिये ॥
गया यह जो मसऊद शाह को पयाम | सुना और पढ़ा ख़त का मज़मूं तमाम
समझ इसका मज़मून मसऊद शाह | कि इतनी है फ़ौज और इतनी सिपाह
अगर जंग हो तो बड़ी जंग हो ॥ | फिर आख़िर ख़ुदा जाने क्या रंग हो
और आख़िर यही है ज़माने का हाल | कि पैवंद होते हैं बाहम निहाल
नताज़ी यह कु रुस्म पैवंद है ॥ | हमें शाह से आलम बरोमंद है ॥

जवाब नामा बेनज़ीर का मलिक मसऊद शाह से

लिखा नामा उसके यह एक दर जवाब | कि आक़िल को नुकता लगी है किताब

लिखा बाद हम्दो सनाये खुदा
पस अज़ नात अहमद शहे अंबिया

कि नामा तुम्हारा जो सरबस्ता था
वह राज़े निहां अपने हाथों खुला ।।

परीज़ात के आलम में मशहूर हैं
नहीं अपने नज़दीक हम दूर हैं

अगर हम कभी अपने दावे पे आय
तुम्हारे फ़लक को न ख़ातिर में लाय

अभी घर से निकले हो लड़कों के तौर
नहीं नेको बद पर तुम्हें अपने ग़ौर

किसी पास दौलत यह रहती नहीं
सदा नाउ काग़ज़ की बहती नहीं

वले क्या करें रस्मे दुनिया है यह
कमर का घमंड आपका क्या है यह

ज़िबस हम को है पासे अमरे रसूल
सो इस वास्ते करते हैं हम क़बूल

ख़िलाफ़े पयम्बर कसे रह गुज़ीद
कि हरगिज़ ब मंज़िल न ख़्वाहद रसीद

एक अच्छी सी तारीख़ ठहराइये
दिया हुक्म हमने तुम्हें आइये ।।

गया एलची लेके नामा इधर ।।
उड़ी हर तरफ़ यह ख़ुशी की ख़बर

सुनी यह जो नामे की गुफ़्तो शुनीद
हुई शाहज़ादे को गोया कि ईद

ख़ुश आसा हुवे दिल जो थे ग़म से तंग
उसी दिन से होने लगे रागो रंग ।।

हुईं हर तरफ़ सब दिल आज़ारियां
लगीं होने शादी की तय्यारियां

बुला शागुनुयों को बता सालो सिन
मुक़र्रर किया नेक साअत क दिन

दास्तान बेनज़ीर और बद्रमुनीर के ब्याह की और उसके तजम्मुल में

किधर है तू ऐ साक़िये गुलबदन
धरे आज उस शाम अफ़्रूज़ की लगन

बुला मुतरबाने ख़ुश आवाज़ को
कि आवें लिये अपने सब साज़ को

वह असबाब शादी का तय्यार हो
मुक़र्रर न फिर जिस को तकरार हो

बड़ी ख़्वाहिशों से जब आया वो रोज़
चढ़ा ब्याहने वह महे शब फ़रोज़

महल से निकल जब हुवा वह सवार
बजे शादियाने बहम एक बार ।।

करूं उस तजम्मुल का क्योंकर बयां कि बाहर है तक़रीर से वह बयां ॥
वह दूल्हा के उठते ही एक गुल पड़ा लगा देखने उसको छोटा बड़ा ॥
कोई दौड़ घोड़ों को लाने लगा कोई हाथियों को बिठाने लगा
लगा कहने कोई इधर आइयो अरे शिताबी से लाइयो ॥
किसी ने किसी को पुकारा कहीं न लाने पे ध्याने के मारा कहीं ॥
कोई पालकी में चला हो सवार सिपाहों को सब अपने आगे कतार
जो कसरत में देखा कि गाड़ी नहीं कोई मांगे तांगे पे बैठा कहीं ॥
सिपर और कबूज़े खड़कने लगे सवारों के घोड़े भड़कने लगे ॥
एक तो वह नौबत के और उनके बाद गरजना वह धौंसों का मानिंद राद ॥
वह शहनाइयों की सुहानी धुनें ॥ जिन्हें गोश ज़ुहरा मुफ़स्सल सुनें
हज़ारों तमामी के तख़्ते रवां ॥ और अहले निशात उनपे मिलकर कुनां
वह तबलों का बजना और उनकी सदा वह गाना कि अच्छा बना लाड़ला
वह नौपुरी के घोड़े पे होना सवार वह मोती का सेहरा जवाहिर निगार
ठिठक कर वह घोड़ों का चलना संभल हुमा के वह दोनों तरफ़ मोरछल ॥
वह फ़ानूसें आगे ज़मुर्रद निगार कि हो सबज़ मीना जिन्हें मत निसार
दोरस्ता जो रौशन चिराग़ां हुवे ॥ पतंगे खुशी से ग़ज़लख़्वां हुवे ॥
हुवा दिल जो रौशन चिराग़ान से पड़े शोर नूरी के दीवान के ॥ ॥
चिराग़ों के तख़्ते लिये जाबजा ॥ और उनमें वह बाज़ारियों की सदा
कोई पान बेचै खिलौने कोई ॥ कोई दालमोठ और सलोने कोई
तमाशाइयों का कुछ एक हुजूम ॥ पतंगे गिरें जो चिराग़ों पे झूम ॥
खड़कना वह नौबत का बानों के साथ गरजना वह धौंसों के डंकों के साथ
छुटानी इधर और उधर भूक भूक ॥ वह आवाज़ करना और अनार बूक
वह ताले पियादे और उनके नफ़ीर कि नालाबसर्व पहुंची सदा उनकी चोर

वह अरबाब इशरत का आपुस में मिल
ज़माना खड़े राग का देके दिल ॥
वह एमन की तानें इधर और उधर
मिले सुर तंबूरों के वाह क्या दिगर ॥
और इस सफ़ से इक छोकरी का निकल
जताना हुनर अपना पहले पहल ॥
उलटना वह ठोकर को देदेके ताल
वह घूंटा सा फंद और खर दे की चाल
कभी पर मलों को दिखाती अदा ॥
कि जों लूट का बिजली होवे हवा ॥
कभी गत फिरी नाचना ज़ौक़ से ॥
कि त्योरा के आशिक़ गिरे शौक़ से
इधर की तो यह गत और उसका यह भाउ
इधर ओट में नायका का बनाउ ॥
खड़े होके दो घूंट हुक़्क़े के ले ॥
चबा पान और रंग होठों पे दे ॥
अंगूठे को ले सामने आरसी ॥
वह सूरत को देख अपनी गुलनार सी
उलट आस्तीनें और मुहरी को चाक
नये सिर से अंगिया को कर ठीक ठाक
बना कंघी और करके अबरू दुरुस्त
झटक दामन और होके चाला को चुस्त
दुपट्टे को सिर पर उलट और संभल
एकाएक वह सफ़ चीर आना निकल
पकड़ कान और घूंगुरू को उठा
पहिन पाउं में अपने सिर से छुवा ॥
इधर और उधर सबके कांधे पे हाथ
चली नाचनी आना संगत के साथ
फ़तह चंद के हाथ की मूर्त्ति एक
लजाई हुई चांद से मूर्त्ति एक ॥ ॥
कभी नाचना और गाना कभी
रिझाना कभी और बनाना कभी
खुश आवाज़ियों से वह गाना ख़याल
दिखाना हर एक दम में अपना कमाल
वह प्यारी की मजलिस वह गाने का रंग
वह जी की खुशी और वह दिल की तरंग
वह फूलों के गहनों किनारी के हार
वह बैठी हुई रंडियों की क़तार ॥
वह जोड़ों के पट्टे पड़े हर तरफ़ ॥
ग़मे दिल जिसे देख हो बरतरफ़
इधर का तो यह ठाठ था और यह राग
महल में उधर नाड़ियां और सुहाग
वह महरी भी शादी मुबारक वह ढोल
वह टोने सलोने वह मौंडे से बोल
उतरने की वां समधिनों की फबन
खिली फूल जैसे चमन दर चमन

गले में पहिन्ना वह हंस हंस के हार
सदा सद वह फूलों की छड़ियों की मार
दिखाना वह बन बन के अपना बनाउ
वह आपुस की रस्में वह आपुस की चाउ
कहां की हंसी और गुल गालियां
सुहानी सुहानी नई गालियां ॥
ग़रज़ क्या लिखूं ताब मुझमें नहीं
न देखेगा आलम कोई यह कहीं

दास्तान निकाह होना बेनज़ीर का साथ बद्रे मुनीर के और शादी नज्मुलनिसा की परीज़ाद से और रुख़सत होना आपुस में

हुका यूं नशे में बहुत साक़िया
मुझे दे ले अब मै के पुर खत्त पिला
किसी पर न ऐसा हो जो बार हूं ॥
कि फिर मैं गले का तेरे हार हूं ॥
हुवा जब निकाह और बटे हार पान
पिला सब को पुर वक़्त दिये हम पान
उठा फिर तो नौशाह बाद अज़ निकाह
महल में बुलाने की ठहरी सलाह ॥
बलायें वह दूलह दुलाहन की तरफ़
उड़े जैसे बुलबुल चमन की तरफ़
वहां तक पहुंचते हुये क्या कहूं ॥
हुई दिल्लगी लाख बहरे शगूं ॥
हुवा लेकिन उस वक़्त दूना मज़ा
कि दूलह दुलहन जब हुये एक जा
अरूसी वह गहना वह सूहा लिबास
वह मेंहदी सुहानी वह फूलों की बास
भला सुर्ख़ जोड़े पै अतरे सुहाग ॥
खुले मिल के आपुस में दोनों के भाग
दिखा मुसहफ़ और आरसी को निकाल
धरा बीच में सिर पै आंचल को डाल
नया वस्ल इस तरह का ध्यान में ॥
खुदा ने किया आन की आन में ॥
अजब कुदरते हक़ नुमायां हुई ॥
जिसे आरसी देख हैरां हुई ॥
वह खिलवत का होना वह शादी की धूम
वह आपुस में दूलह दुलहिन की रसूम
किसी ने पसारू मरोड़ा आन कर ॥
कोई गालियां दे गई जान कर ॥

सुहागा गई कान को कोई लगा गई कोई दुल्हिन की जूती छुवा ॥
वह प्यारी जो बैठी थी प्यारी बनी न बात उसकी चीनी बने को बनी
चुनाई न बात उसको इस घात से कि धक्का दिया हर घड़ी बात से
ग़िबस दिल तो था उसका हज़ा पे बंद सभी जा से उसने चुनी कर पसंद ॥
उठाई इली उसकी आँखों से यों करें नोश बादाम प्यारी को ज्यों ॥
डली वह जो होंठों की थी लब मिली वह मिसरी की मुंह से उठाई डली
कमर से उठाई डली इस तरह ॥ कि हां हूं नहीं की नहीं जिस तरह
ज़रा पाउं पड़ के उठाने अड़ा ॥ नहीं और हां का अजब गुल पड़ा
वह ज़ाहिर की तकरार थी बार बार व गरना दिल उस पाउं पर था निसार
अजब तरह की रार लिया हुई कि बातें वह मिसरी की डलियां हुईं
वह सब हो चुकी जब कि रस्मो रसूम सवारी की होने लगी फिर तो धूम
सहर का वह होना वह रोने का वक़्त वह दुलहन की रुख़सत वह रोने का वक़्त
वह सब का लाचार मुंह देखना ॥ कि यारब यह क्या है जहां बैठना ॥
वह दुलहन का रो रो के होना जुदा वह मां बाप का और रोना जुदा
निकलते वह जाना महल से दहेज़ कि जो चश्म से अश्क हो मौज ख़ेज़
यहां मौत है अहले इरफ़ान को ॥ कि जाना है एक दिन यों ही जान को
वह जो दर्दमंदी से हैं आशना ॥ वह शादी का लेते हैं ग़म से मज़ा
वह दूलह ने दुलहन को गोदी में ला बिठाया महाफ़े में आख़िर को ला
चले ले के चंडोल जिस दम कहार किया दो तरफ़ से ज़र उन पर निसार
खड़े थे जो वां चश्म को तर किये ॥ सो मोती उन्हों ने निछावर किये
इधर और उधर अपने सहरे को चीर वह एक चांद सा मुंह दिखा बेनज़ीर
सवार अपने घोड़े पे हो कर शिताब कि जों सुबह हो वे बलंद आफ़ताब
दिखाता हुवा हशमतो अज़्मो शान लिये साथ साथ अपने नौबत निशान

वह पीछे तो चंडोल में रख के माह और आगे वह ख़ुर्शीद आलम पनाह
फिरे घर को अपने क़दम बा क़दम सवारी लगा घर में उतरा सनम
ग़रज़ इस तरह जब वह दुलहन को ब्याह ले आया जहां उसकी थी ऐशगाह
हुई वह जो होनी थी रस्मो रसूम ॥ कि ज़ाहिर में थी यह भी दरकार धूम
उठाया उसी धूम में लगते हाथ ॥ परीज़ाद का ब्याह बीबी के साथ
वह नज्मुलनिसा थी जो दुख़्तरे वज़ीर गया उसके वालिद कने बेनज़ीर
कहा बाप को उसके एक ख़ैरख़्वाह मेरा भाई है एक फ़ीरोज़ शाह ॥
सो मैं तुम से रखता हूं एक इल्तिजा कि तू उसको फ़रज़ंदी में अपनी ला
ग़रज़ हर तरह कर ख़ुशामद उसे ॥ किया हाल पर अपने पाबंद उसे ॥
परीज़ाद वह था जो फ़ीरोज़ शाह दिया उसको नज्मुलनिसा से बियाह
उसी धूम से और उसी फ़ौज से ॥ उसी शान से और उसी औज से ॥
वही सब तजम्मुल वही सब रसूम हुईं थीं जो कुछ ब्याह में उसके धूम ॥
दक़ीक़ा न छोड़ा किसी बात में ॥ बराबर रही चेहल दिन रात में ॥
उसी तरह उसको बियाहा ग़रज़ जो कुछ क़ौल था सो निबाहा ग़रज़
ख़ुशी रास्त लाया उन्हें के जो काम बर आये दिलों के मतालिब तमाम
हुई मुत्तसिल यह जो दो शादियां बसीं एक जा चार आबादियां
फिरे दिन तो अपने वतन को फिरे वह आशुफ़्ता बुलबुल चमन को फिरे
ख़ुशी से लिये हुरमतो जानो माल चले शाह को अपने वह हाल हाल
वह नज्मुलनिसा और वह फ़ीरोज़ शाह फ़लक पर से हो मिस्ल ख़ुर्शीदो माह
रज़ा उनसे लेकर उसी आन में ॥ गये शादो ख़ुर्रम परिस्तान में ॥
यह इक़रार चलते हुये कर गये कि गो तुम उधर और हम इधर गये
तुम इस ग़म से मत हूजियो सीनः रेश कि हम तुमसे मिलते रहेंगे हमेश
तसल्ली वह देकर उधर को चले ॥ यह इधर लिये अपना लश्कर चले

दास्तान बेनज़ीर की बद्रे मुनीर को अपने वतन ले जाने और माबाप से मुलाक़ात करने में

पिलासा किया आख़री एक जाम
कि होती है बस अब कहानी तमाम
वह नज़दीक पुहुंचे जो उस शहर के
किया पास जा ख़ीमा एक नहर के
किया जबकि ख़िलक़त ने तफ़तीश
और आंखों से देखा वो बद्रे कमाल
पड़ा शहर में यक बयक फिर यह गुल
कि ग़ायब हुआ था सो आया वह गुल
ख़बर यह हुई जबकि मा बाप को
किया गुम उन्हों ने वहीं आप को
ज़िबस दिल तो था यास ही से भरा
यह सुन हाथ और पाओं थरथरा
लगे रोने आपुस में ज़ारो नज़ार
कहा हाय हम को नहीं एतबार
मिलावैंगे हम से हमारा हबीब
यह दुश्मन नहीं अपने ऐसे नसीब
यह होगा कोई दुश्मने मुल्को माल
सो मैं आपही हूं गिरफ़्तार हाल
कोई उसका वारिस तो आख़िर नहीं
वही लैके जावे यह झगड़ा कहीं
कहा सबने साहब चलौ तो सही
यह बेटा तुम्हारा वही है वही॥
मुकर्रर सुना जबकि बेटे का नाउं
चला फिर तो रोता दुवा नंगे पाउं
वह आता था जैसे कि बेटा उधर
पड़ी बाप पर जो इकाइक नज़र
जोंहीं अपने बाबा को देखा खड़ा
चला सिर के बल बेनज़ीर जहां
गिरा पाउं पर कहके यह बाप से
ख़ुदा ने दिखाये क़दम आप के
सुनी यह सदा जोंही उस माह की
तो इस ग़म रसीदा ने इक आह की
उठा सिर क़दम पर से छाती लगा
लिपट के घड़ी दो तलक ख़ूब सा
वह रोया यह रोया कि गश आ चला
कहे तू कि आंसू का लपका चला
मिले फिर से आपस में वह ख़ूब से
कि यूसुफ़ मिले जैसे याक़ूब से॥
वह गुल गुल खिला फूला बुवा गुल की ज़
यह गुल की तरह और वह बुलबुल की तरह

तसवीर बेनज़ीर के बाप के क़दम पर गिरने की

हुये शादो ख़ुर्रम सग़ीरो कबीर ॥ चले लेके नज़रें अमीरो वज़ीर ॥ ॥
नये ऐश से सबको मस्ती हुई ॥ नये सिर से आबाद बस्ती हुई ॥ ॥
बड़ी धूम से और बड़ी आन से ॥ बजाते हुये नौबतें शान से ॥ ॥
वह फ़ुल्ला जो था हिज्र के दाग़ में ॥ हुवे आके दाखिल उसी बाग़ में ॥
ज़नानी सवारी उतरवा के साथ ॥ पकड़ उस गुले नौ शिगुफ़्ता का हाथ
दरामद हुवा घर में सर्वे रवां ॥ लिये साथ अपने वह गुंचा दहां ॥
कि इतने में आगे नज़र जो पड़ी ॥ जो देखा कि है राह में मां खड़ी ॥
बहे चश्म से आंसुवों की क़तार ॥ गिरा मां के पावों पे बेइख़्तियार
वह मां ख़ूब बेटे के लगकर गले ॥ यह रोई कि आंसू के नाले चले ॥

वह और बेटे को छाती लगा ।। वह दोनों की दो हाथ से लीं बला
हुई जान और जी से उस पर निसार पिया पानी उन दोनों पर वार वार
जिगर पर जो थे दर्द और ग़म के दाग़ बुझे वस्ल से हिज्र के वह चिराग़
सब आपुस में रहने लगे मिल मिला फिर आये चमन में वह गुल खिल खिला
वह आंखें जो अंधी थीं रौशन हुईं ज़मीनें जो थीं खुश्क गुलशन हुईं
ग़रज़ बस बाप मां को थी सेहरे की चाह दुबारा उन्हूं ने किया उसका ब्याह
लिखूं मैं गर उस ब्याह की धूमधाम तो फिर यह कहानी न होवे तमाम
बनाउन की तक़दीर का जो बनाउ निकाले उन्हूं ने यह सब दिल के चाउ
वह जैसी कि उस बाग़ में थी ख़िज़ां बसे आके फिर उनमें सब गुलरुख़ां
महल में अजायब हुवे चहचहे वह मुरझाये गुल फिर हुवे लहलहे
हुवा शाह पर फ़ज़ल परवर्दिगार वही शाहज़ादी वही शाह यार
वही लोग और वो ही बरचे मुदाम वही नाज़ो अन्दाज़ के अपने काम
वही बुलबुलें और वही बोस्तां ॥ गिरा फुला गुलो मजमये दोस्तां ।।
उन्हूं के जहां में फिरे जैसे दिन ॥ हमारे तुम्हारे फिरें वैसे दिन ।।
मिलें सब के बिछुड़े इलाही तमाम बहक्के मुहम्मद अलैहु स्सलाम
हुवे जैसे वह शाद हों शाद हम ।। रहें शाह में अपने आबाद हम ॥
रहे शाद नव्वाब आलीजनाब ॥ कि है आसफ़ुद्दौला जिसका ख़िताब
ख़ुशी उसकी है सब के आगे मुराद ॥ रहे रौशन उसका चिराग़े मुराद ।।
बहक्के हुसेनो बहक्के हसन ।। रहूं शाद मैं भी गुलामे हसन ॥
ग़रज़ मुंसिफ़ो दाद की है यह जा ।। कि दाद अज़ सख़ुन का दिया है वहा
ग़रज़ बस उसकी इस कहानी में सर्फ़ तब ऐसे यह निकले हैं मोती से हर्फ़
जवानी में जब बन गया हूं मैं पीर तब ऐसे हुवे हैं सख़ुन बेनज़ीर ।।
नहीं मसनवी है यह एक फुलझड़ी मुसलसल है मोती की गोया लड़ी

नई तर्ज़ है और नई है ज़बां ।। | नहीं मसनवी है यह सहरुल बयां
रहेगा जहां में मेरा इससे नाम ।। | कि है यादगारे जहां यह कलाम
हर एक बात पर दिल को मैं खूं किया | न बइस तरह रंगी यह मज़मूं किया
अगर बा कुई ग़ौर टुक कीजिये ।। | सिला इसका कम है जो कुछ दीजिये
ग़रज़ जिसने इसको सुना यह कहा | हसन आफ़रीं मरहबा मरहबा
जो मुन्सिफ़ सुनैंगे कहैंगे यही ।। | न ऐसी हुई है न होगी कभी ।।
मैं एक मुशफ़िक़ हैं मिरज़ा क़तील | कि हैं शाहराहे सख़ुन के दलील
सुनी मसनवी जब यह मुशफ़िक़ ने तमाम | दिया इसकी तारीख़ को इल्तिज़ाम
ज़ि बस शौक़ कहते हैं यह फ़ारसी | हर इक शेर उनका है जों आरसीं ।।
उन्हूं ने ख़िरामानी उठा कर क़लम | यह तारीख़ की फ़ारसी में रक़म ।।

तारीख़ तबअज़ाद मिरज़ा क़तील

ज़हे तफ़रीआ तारीख़ ईं मसनवी ।। | कि गुफ़्तश हसन शायरे देहलवी
ज़ेहे मग़ोता दर वह फ़िक्रे रसा ।। | कि चारम ब कफ़ गौहरे मुद्दआ
बगोयम ज़ि हातिफ़ रसीदई निदा | बरीं मसनवी बाद हर दिल फ़िदा ११९९

तारीख़ तबअज़ाद मुसहफ़ी

मियां मुसहफ़ी को जो आया यह तौर | उन्हूं ने भी का फ़िक्र अज़ राह ग़ौर
कहा इसकी तारीख़ यों बरमहल्ल | यह बुलबुलान ये चीन हैं बेबदल ११९९

तारीख़ फ़ख़रा[illegible] माहिर की

सुनी जब कि माहिर ने यह मसनवी | तो महज़ूज़ हो फ़िक्र तारीख़ की
फ़र[illegible] पढ़ा वों हीं पाकर फ़रह | है इस मसनवी को यह नादिर तरह